

पुष्पकारूढ़ श्रीराम





🕉 पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥



ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः। नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्ये नमोऽस्तु ते॥ नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्ये ते नमो नमः। सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये॥

वर्ष ९० गोरखपुर, सौर कार्तिक, वि० सं० २०७३, श्रीकृष्ण-सं० ५२४२, अक्टूबर २०१६ ई० पूर्ण संख्या १०७९

### महारास-लीला

आस्वाद्य दो थे, था मधुमय लीला-संचार। \* एक विलक्षण पावन परम प्रेमरसका विस्तार॥ \$ इस रस-सागरमें गोपीजनका ही अधिकार। \* \* मूर्त रूप लख जिन्हें किया हरिने स्वीकार॥ 公 सुशोभित X व्रज-रमणी-गण-मण्डलमें हुए श्याम । अगणित राशि तारिकामें अकलङ्क पूर्ण विधु विमल 公 ललाम॥ \* नीलाभ-श्याम घन दामिनि-दलमें रहे विराज। \* घन दामिनि, दामिनि घन अन्तर अगणित उभय अतुल द्युति साज॥ 钦 राधिकाके \* रासेश्वरी एकाधिपत्यमें सुन्दर \$ शुचि सौन्दर्य मधुर रसमय असमोर्ध्व अमित बिजली-घनराज॥ \* एक एकके मध्य मनोहर एक एक, सब मिल, दे \* 公 रास-रसिक रस-नृत्य-निरत, शुचि बाज रहे मृदु वाद्य रसाल॥ \* [श्रीराधा-माधव-चिन्तन]

कल्याण, सौर कार्तिक, वि० सं० २०७३	, श्रीकृष्ण-सं० ५२४२, अक्टूबर २०१६ ई०		
विषय-सूची			
विषय पृष्ठ-संख्या	विषय पृष्ठ-संख्या		
१ - महारास-लीला	१५ - हिन्दू संस्कृतिमें जलके प्रति पूज्य भाव (वैद्य श्रीबालकृष्णजी गोस्वामी)		
१ – पुष्पकारूढ़ श्रीराम ( २ – महारास–लीला ( ३ – पुष्पकारूढ़ श्रीराम (¹ ४ – भक्त अक्रूर (	<b>ा-सूची</b> रंगीन) आवरण-पृष् '' ) मुख-पृष् करंगा) १९		
५- धर्मात्मा शुक और इन्द्रकी बातचीत(	" )		
एकवर्षीय शुल्क सजिल्द ₹२२० विदेशमें Air Mail विषिक U	प्र । सत्-चित्-आनँद भूमा जय जय ॥ प्र । जय हर अखिलात्मन् जय जय ॥ ते । गौरीपति जय रमापते ॥ प्र ) (₹3000)		
आदिसम्पादक — नित्यलीलालीन सम्पादक — राधेश्याम खेमका, स केशोराम अग्रवालद्वारा गोबिन्दभवन-कार्यालय व	द्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार हसम्पादक—डॉ० प्रेमप्रकाश लक्कड़ के लिये गीताप्रेस, गोरखपुर से मुद्रित तथा प्रकाशित yan@gitapress.org 09235400242/244		
website: gitapress.org e-mail: kal	yan@gitapress.org		

या १०]			
कल्याण			
<i>याद रखो</i> —जबतक तुम्हें अपना लाभ और	आचरणोंमें रति है, तबतक तुम्हारा कल्याण नहीं होगा।		
दूसरेका नुकसान सुखदायक प्रतीत होता है, तबतक तुम	जबतक तुम्हें साधुओंसे द्वेष और असाधुओंसे प्रेम		
नुकसान ही उठाते रहोगे।	है, तबतक तुम्हें सच्चा सुपथ नहीं मिलेगा।		
जबतक तुम्हें अपनी प्रशंसा और दूसरेकी निन्दा	जबतक तुम्हें सत्संगसे अरुचि और कुसंगमें प्रीति		
प्यारी लगती है, तबतक तुम निन्दनीय ही रहोगे।	है, तबतक तुम्हारे आचरण अशुद्ध ही रहेंगे।		
जबतक तुम्हें अपना सम्मान और दूसरेका अपमान	जबतक तुम्हें जगत्में ममता और भगवान्से		
सुख देता है, तबतक तुम अपमानित ही होते रहोगे।	लापरवाही है, तबतक तुम्हारे बन्धन नहीं कटेंगे।		
जबतक तुम्हें अपने लिये सुखकी और दूसरेके	<i>याद रखो</i> —जबतक तुम्हें अभिमानसे मित्रता		
लिये दु:खकी चाह है, तबतक तुम सदा दुखी ही रहोगे।	और विनयसे शत्रुता है, तबतक तुम्हें सच्चा आदर नहीं		
जबतक तुम्हें अपनेको न ठगाना और दूसरेको	मिलेगा।		
ठगना अच्छा लगता है, तबतक तुम ठगाते ही रहोगे।	जबतक तुम्हें स्वार्थकी परवा है और परार्थकी		
<i>याद रखो</i> —जबतक तुम्हें अपने दोष नहीं	नहीं, तबतक तुम्हारा स्वार्थ सिद्ध नहीं होगा।		
दीखते और दूसरेमें खूब दोष दीखते हैं, तबतक तुम	जबतक तुम्हें बाहरी रोगोंसे डर है और काम-		
दोषयुक्त ही रहोगे।	क्रोधादि भीतरी रोगोंसे प्रीति है, तबतक तुम नीरोग नहीं		
जबतक तुम्हें अपने हितकी और दूसरेके अहितकी	हो सकोगे।		
चाह है, तबतक तुम्हारा अहित ही होता रहेगा।	जबतक तुम्हें धर्मसे उदासीनता और अधर्मसे प्रीति		
जबतक तुम्हें सेवा करानेमें सुख और सेवा करनेमें	है, तबतक तुम सदा असहाय ही रहोगे।		
दु:ख होता है, तबतक तुम्हारी सच्ची सेवा कोई नहीं	जबतक तुम्हें मृत्युका डर है और मुक्तिकी चाह		
करेगा।	नहीं है, तबतक तुम बार-बार मरते ही रहोगे।		
जबतक तुम्हें लेनेमें सुख और देनेमें दु:खका	जबतक तुम्हें घर–परिवारकी चिन्ता है और		
अनुभव होता है, तबतक तुम्हें उत्तम वस्तु कभी नहीं	भगवान्की कृपापर भरोसा नहीं है, तबतक तुम्हें		
मिलेगी।	चिन्ता-युक्त ही रहना पड़ेगा।		
जबतक तुम्हें भोगमें सुख और त्यागमें दु:ख होता	जबतक तुम्हें प्रतिशोधसे प्रेम है और क्षमासे		
है, तबतक तुम असली सुखसे वंचित ही रहोगे।	अरुचि है, तबतक तुम शत्रुओंसे घिरे ही रहोगे।		
जबतक तुम्हें विषयोंमें प्रीति और भगवान्में	जबतक तुम्हें विपत्तिसे भय है और प्रभुमें अविश्वास		
अप्रीति है, तबतक तुम सच्ची शान्तिसे शून्य ही रहोगे।	है, तबतक तुमपर विपत्ति बनी ही रहेगी।		
जबतक तुम्हें शास्त्रोंमें अश्रद्धा और मनमाने	'शिव'		

आवरणचित्र-परिचय पुष्पकारूढ़ श्रीराम नहीं था। सदा देखनेमें सुन्दर और चित्तको प्रसन्न करनेवाला था। उसके भीतर अनेक प्रकारके आश्चर्य-जनक चित्र

# सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं केकीकण्ठाभनीलं

(रा०च०मा० ७। मंगलाचरण) अर्थात् मोरके कण्ठकी आभाके समान (हरिताभ) नीलवर्ण, देवताओंमें श्रेष्ठ, ब्राह्मण (भृगुजी)-के चरण-कमलके चिहनसे सुशोभित, शोभासे पूर्ण, पीताम्बरधारी, कमलनेत्र, सदा परम प्रसन्न, हाथोंमें बाण और धनुष

शोभाढ्यं पीतवस्त्रं

नाराचचापं

जानकीशं

निरन्तर नमस्कार करता हूँ।

पाणौ

नौमीड्यं

सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।

कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं

रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम्॥

धारण किये हुए, वानरसमूहसे युक्त, भाई लक्ष्मणजीसे सेवित, स्तुति किये जाने योग्य, श्रीजानकीजीके पति, रघुकुलश्रेष्ठ, पुष्पक विमानपर सवार श्रीरामचन्द्रजीको मैं

पुष्पक विमान इच्छानुसार चलनेवाला दिव्य विमान

लगे थे। वह सब ओरसे मोतियोंकी जालीसे ढका हुआ था। उसके भीतर ऐसे-ऐसे वृक्ष लगे थे, जो सभी ऋतुओं में फल देनेवाले थे। उसका वेग मनके समान तीव्र था। वह अपने ऊपर बैठे हुए लोगोंकी इच्छाके अनुसार सब जगह

था। उस विमानमें सोनेके खम्भे और वैदूर्यमणिके फाटक

जा सकता था तथा चालक जैसा चाहे, वैसा छोटा या बड़ा रूप धारण कर लेता था। उस आकाशचारी विमानमें

थे। उसकी दीवारोंपर तरह-तरहके बेल-बूटे बने थे, जिनसे

उसका निर्माण किया था। वह सब प्रकारकी मनोवांछित वस्तुओंसे सम्पन्न, मनोहर और परम उत्तम था। न अधिक ठण्डा था और न अधिक गरम। वह विमान सभी ऋतुओंमें

उसकी विचित्र शोभा होती थी। ब्रह्मा (विश्वकर्मा)-ने

आराम पहुँचानेवाला तथा मंगलकारी था। ब्रह्माजीने यक्षोंके स्वामी राजराज वैश्रवण कुबेरकी सेवाओंसे प्रसन्न होकर उन्हें यह विमान दिया था। रावण इन कुबेरका विमातासे उत्पन्न भाई था। उसने दीर्घकालतक तपस्या करके ब्रह्माजीको प्रसन्न किया और उनसे गन्धर्वीं,

देवताओं, असुरों, यक्षों, राक्षसों, सर्पों, किन्नरों तथा भूतोंसे अपराजेयताका वरदान प्राप्त किया। वरदानसे गर्वित रावणने सबसे पहले अपने भाई कुबेरको युद्धमें परास्त किया और उन्हें लंकाके राज्यसे बहिष्कृत कर दिया। यक्षराज कुबेर लंका छोड़कर गन्धर्वीं, यक्षों, राक्षसों तथा किम्पुरुषोंके साथ

ही सन्तुष्ट नहीं हुआ, उसने पुन: आक्रमण करके उनका पुष्पक विमान भी छीन लिया। तब कुबेरने कुपित होकर उसे शाप दिया—' अरे! यह विमान तेरी सवारीमें नहीं आ सकेगा। जो तुझे युद्धमें मार डालेगा, उसीका यह वाहन होगा। मैं तेरा बड़ा भाई होनेके कारण मान्य था, परंतु तूने मेरा

गन्धमादन पर्वतपर आकर रहने लगे, परंतु रावण इतनेसे

विमानं पुष्पकं तस्य जहाराक्रम्य रावणः। शशाप तं वैश्रवणो न त्वामेतद् वहिष्यति॥

अपमान किया है। इससे बहुत शीघ्र तेरा नाश हो जायगा'—

यस्तु त्वां समरे हन्ता तमेवैतद् वहिष्यति। अवमन्य गुरुं मां च क्षिप्रं त्वं न भविष्यसि॥ (महा० वन० २७५।३४-३५)

राम-रावण-युद्धमें जब रावणका वध हो गया, तो विभीषणने लक्ष्मण और सीतासहित श्रीरामजीके वापस अयोध्या लौटनेहेतु पुष्पक विमान उन्हें प्रस्तुत किया था।

इस प्रकार श्रीरामजी पुष्पकारूढ़ होकर अयोध्या आये मणि और सुवर्णकी सीढ़ियाँ तथा तपाये हुए सोनेकी वेदियाँ और अयोध्या आनेके पश्चात् उन्होंने उस दिव्य विमानका बमी।भीं। प्राइतिचाइरेंका की उपकर भी मेरी इंटरों वडट हें सुरक्षा वास्त्रा वन् स्त्रो स्वाप्त के एक प्राप्त के एक प्र संख्या १० ] प्रतिकुलताका नाश प्रतिकूलताका नाश (ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका) प्रतिकूलताके अनुभवमें ही दु:ख है, अतएव दु:खोंके पूर्ण है और उसमें जीवोंका हित भरा हुआ है। आत्यन्तिक अभावके लिये प्रतिकृलताका त्याग करना विचार-दृष्टिसे देखा जाय तो सांसारिक पदार्थोंमें चाहिये। इसके लिये भक्ति और ज्ञान ये दो उपाय हैं एवं होनेवाली अनुकूलता भी त्याज्य है; क्योंकि सांसारिक दोनों ही उत्तम हैं। अधिकारी-भेदके अनुसार ज्ञानियोंके सुख क्षणिक, नाशवान् एवं परिणाममें दु:खरूप होनेके लिये ज्ञानयोग और भक्तोंके लिये कर्मयोग भगवान्ने (गीता कारण सांसारिक अनुकूलतामें होनेवाला सुख भी वस्तुत: दु:ख ही है। जहाँ संसारके पदार्थोंमें अनुकूलता होती है, ३।३)-में बतलाया है तथापि ज्ञानकी अपेक्षा सर्वसाधारणके लिये भक्तिका उपाय ही सुगम है। ईश्वर-भक्तिके प्रतापसे वहीं उनके प्रतिपक्षमें प्रतिकूलता रहती है और जहाँ सम्पूर्ण दु:खोंके मूल प्रतिकूलताका अत्यन्त अभाव हो अनुकूलता-प्रतिकूलता है, वहीं राग-द्वेष पैदा होते हैं। जाता है। ईश्वर-भक्तकी किसी भी जीवमें और किसी भी राग-द्वेषसे काम-क्रोधादि अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न पदार्थमें प्रतिकूलता नहीं रहती, क्योंकि वह समझता है कि होकर महान् दु:खोंकी उत्पत्ति होती है, अतएव सांसारिक ईश्वर ही सम्पूर्ण भूत-प्राणियोंके हृदयमें आत्मारूपसे अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनोंहीको अनन्त दुःखोंका विराजमान हो रहे हैं, अतएव किसीसे भी द्वेष करना परमेश्वरसे कारण समझकर त्याग करना चाहिये। इसीलिये भगवानुने ही द्वेष करना है। इसके अतिरिक्त वह सम्पूर्ण पदार्थींकी (गीता १३।९)-में लिखा है कि इष्ट और अनिष्टकी उत्पत्ति और विनाशमें भी ईश्वरकी अनुकूलताका ही दर्शन प्राप्तिमें सदा-सर्वदा समचित्त रहना चाहिये। करता है। इस हालतमें वह किससे कैसे द्वेष करे ? जीवोंके इस प्रकारकी समता ईश्वरकी शरण होनेसे अनायास कर्मोंके अनुसार ही उनके सुख-दु:ख-भोगके लिये परमेश्वर ही प्राप्त हो जाती है। ईश्वर सुहृद् हैं, दयालु हैं, प्रेमी हैं सम्पूर्ण पदार्थींको रचते हैं। जो पुरुष इस प्रकार समझता और ज्ञानस्वरूप हैं, इस प्रकार समझनेवाला पुरुष अपनी है, वह ईश्वरके किये हुए प्रत्येक विधानमें वैसे ही प्रसन्नचित्त इच्छाका सर्वथा त्याग करके केवल एक ईश्वरकी इच्छाके रहता है, जैसे मित्रके किये हुए विधानमें मित्र और पतिके ही परायण हो जाता है। वह अपने मन, बुद्धि और इन्द्रियोंको विधानमें उत्तम स्त्री रहती है। उत्तम पतिव्रता स्त्री पतिकी ईश्वरके अर्पण कर देता है, ईश्वरकी कठपुतली बन जाता अनुकूलतामें ही अपनी अनुकूलता जानती है। अर्थात् पतिकी है। ईश्वर ज्यों कराता है त्यों ही करता है, अपनी इच्छासे अनुकूलता ही उसके लिये अपनी अनुकूलता है। पित जो कुछ भी नहीं करता एवं ईश्वरके किये हुए विधानमें सदा-भी कुछ भली-बुरी चीज लाता है अथवा जो कुछ भी सर्वदा प्रसन्नचित्त रहता है। इसीका नाम शरण है। चेष्टा करता है, वह उसीमें प्रसन्न रहती है, इसी प्रकार सुखकारक पदार्थमें अनुकूलता और दु:खकारक पदार्थमें भगवानुका भक्त भी, भगवानु जो भी कुछ करते हैं हमारे प्रतिकूलता स्वभावसिद्ध है। विचार करनेसे संसारका कोई अच्छेके लिये करते हैं, यह समझकर उनकी की हुई प्रत्येक भी पदार्थ वास्तवमें सुखकारक नहीं है। परम आनन्दस्वरूप चेष्टामें एवं पदार्थींकी उत्पत्ति और विनाशमें सदा प्रसन्नचित्त एवं परम आनन्ददायक परम हितकारी केवल एक परमात्मा रहता है; यानी परेच्छा या अनिच्छासे जो भी कुछ अच्छे-ही हैं; इसलिये वास्तवमें परमात्मामें ही अनुकूलता होनी बुरे पदार्थोंकी एवं सुख-दु:खोंकी प्राप्ति होती है, वे सब चाहिये। जो इस रहस्यको समझता है, वह परमात्माके अनुकूल बन जाता है और उसकी सम्पूर्ण क्रियाएँ परमात्माके अनुकूल हो जाती हैं। वह उन लीलामयकी प्रत्येक लीलामें

बुर पदार्थाका एवं सुख-दु:खाका प्राप्त हाता है, व सब चाहिया जा इस रहस्यका समझता है, वह परमात्माक ईश्वरकी इच्छासे होनेके कारण ईश्वरकी लीला हैं, इस अनुकूल बन जाता है और उसकी सम्पूर्ण क्रियाएँ परमात्माके प्रकार समझकर वह हर समय आनन्दमें मग्न रहता है। अनुकूल हो जाती हैं। वह उन लीलामयकी प्रत्येक लीलामें वस्तुत: पितव्रता स्त्रीका उदाहरण भी ईश्वरके साथ लागू उन लीलामयका दर्शन करता रहता है; इससे उसके लिये नहीं हो सकता; क्योंकि मनुष्यमें स्वार्थ रहता है एवं ज्ञानकी प्रतिकूलताका एवं सम्पूर्ण दु:खोंका अत्यन्त अभाव हो जाता कमी होनेके कारण उससे भूल भी हो सकती है, किंतु है। वह उन लीलामयकी लीलाको और प्रेमास्पद परमात्माको ईश्वर निर्भ्रान्त हैं, इसलिये उनकी लीला न्याय और ज्ञानसे अपने परम अनुकूल देखकर प्रतिक्षण मृग्ध होता रहता है।

ज्ञानकी दृष्टिसे विचार किया जाय तो सांसारिक इसलिये जिसकी स्थिति उस विज्ञानानन्दघन परमात्माके अनुकूलता और प्रतिकूलता वास्तवमें कोई वस्तु ही नहीं स्वरूपमें एकीभावसे हो जाती है, उसकी दुष्टि भी

ठहरती; क्योंकि संसार स्वप्नवत् है और स्वप्नके पदार्थ सब मायामय हैं, इसलिये उससे उत्पन्न होनेवाली

अनुकूलता और प्रतिकूलता भी मायामयी ही है। जब

मनुष्य स्वप्नसे जागता है तब स्वप्नके किसी पदार्थको

सम्पूर्ण पदार्थोंको मायामय समझता है। इस प्रकार जब

मनुष्य सम्पूर्ण पदार्थींको स्वप्नसदुश मायामय समझ लेता

है तब अनुकूलता और प्रतिकूलताकी कुछ भी सत्ता नहीं

रह जाती। फिर एक चेतन विज्ञानानन्दघन परमात्माके

अतिरिक्त कोई भी वस्तु उसको प्रतीत नहीं होती। उसकी

दुष्टिमें एक सर्वव्यापी नित्य विज्ञानानन्दघन ही रहता है

और वह विज्ञानानन्दघन परमात्मा निर्दोष और सम है।

भी नहीं देखता और स्वप्नमें प्रतीत होनेवाले पदार्थींको

मायामय समझता है, इसी प्रकार तत्त्वज्ञानी पुरुष संसारके

हो जाता है। जब अनुकूलता और प्रतिकूलताका अत्यन्त

अभाव हो जाता है तब राग-द्वेषादि सम्पूर्ण अनर्थोंका एवं सम्पूर्ण दु:खोंका अत्यन्त अभाव हो जाता है एवं

उसे परम शान्ति और परम आनन्दकी प्राप्ति हो जाती है। वास्तवमें वह परम आनन्द ब्रह्म ही परम अनुकूल

है एवं वही सबका आत्मा होनेसे अपना आत्मा है। जब

इस प्रकारका ज्ञान हो जाता है तब फिर उसकी प्रतिकृल बुद्धि कहीं नहीं हो सकती; क्योंकि अपने आपमें

प्रतिकुलता नहीं होती। इस प्रकारके ज्ञानके द्वारा या

उपर्युक्त ईश्वर-भक्तिद्वारा सम्पूर्ण दु:खोंके मूल प्रतिकृलताका

सम्पूर्ण संसारमें सम हो जाती है और सांसारिक

अनुकूलता एवं प्रतिकूलताकी दुष्टिका अत्यन्त अभाव

सर्वथा नाश करना चाहिये।

िभाग ९०

-गोमूत्रमें मिला सोना-

गुजरातके जुनागढ कृषि विश्वविद्यालयके एक प्रोफेसर डॉ॰ बी॰ए॰ गोलिकयाने गोमुत्रसे सोना निकालनेका दावा किया है। चार सालोंकी रिसर्चके बाद डॉ० बी०ए० गोलिकयाने गुजरातमें पायी जानेवाली

प्रसिद्ध गीर नस्लकी गायोंके मुत्रसे सोना निकालनेका दावा किया है।

टाइम्स ऑफ इंडियामें छपी रिपोर्टके मुताबिक विश्वविद्यालयके बायोटेक्नोलॉजी विभागके अध्यक्ष डॉ०

गोलिकयाने अपने चार सालोंकी रिसर्चके दौरान गीर नस्लकी ४०० से अधिक गायोंके मुत्रकी लगातार जाँच करनेके बाद उन्होंने एक लीटर गोमुत्रमें ३ मिलीग्रामसे १० मिलीग्रामतक सोना निकालनेका दावा किया है।

उन्होंने कहा कि यह धातु आयनके रूपमें पायी गयी और यह पानीमें घुलनशील है।

गोमूत्र परीक्षणके लिये डॉ॰ गोलिकया और उनकी टीमने क्रोमैटोग्राफी—मास स्पेक्ट्रोमेट्री विधिका

इस्तेमाल किया था। डॉ॰ गोलिकयाने कहा—'अभीतक हम प्राचीन ग्रन्थोंमें ही गो-मूत्रमें स्वर्ण पाये जानेकी बात सुनते थे, लेकिन इसका कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं था। हम लोगोंने इसपर शोध करनेका फैसला किया।

हमने गीर नस्लकी ४०० गायोंके मुत्रका परीक्षण किया और उसमें सोनेको खोज निकाला।'

उन्होंने कहा कि गोमुत्रसे सोना सिर्फ रासायनिक प्रक्रियाके जरिये ही निकाला जा सकता है। जिसमें

एक स्वस्थ गायके मुत्रसे एक दिनमें कम-से-कम ३००० हजार रुपये कीमतका एक ग्राम सोना अर्थात् महीने भरमें लगभग एक लाख रुपयेकी कीमतका सोना निकाला जा सकता है।

डॉ॰ गोलिकयाने कहा कि शोधके दौरान हमने गायके अलावा भैंस, ऊँट, भेड़ोंके मूत्रका भी परीक्षण किया था, लेकिन किसीमें सोना नहीं मिला। इसके अलावा शोधमें यह भी पाया गया है कि गो-मुत्रमें ३८८ ऐसे

औषधीय गुण होते हैं, जिससे कई बीमारियोंको ठीक किया जा सकता है। डॉ० गोलिकयाके अनुसार गीर नस्लकी गायोंके मुत्रमें ५,१०० पदार्थ मिले हैं, जिनमेंसे ३८८में कई बीमारियाँ दुर करनेके चिकित्सकीय गुण हैं। डॉ॰ गोलिकयाकी टीम अब भारतमें पायी जानेवाली अन्य देशी गायोंके गो-मूत्रपर शोध करेगी।

[गो-सम्पदासे साभार]

संख्या १०] जीवोंकी स्वतन्त्रता जीवोंकी स्वतन्त्रता ( ब्रह्मलीन धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ) हूँ, परंतु वह केवल आत्मवंचना होती है। उसकी भगवद्भक्तिनिष्ठा अथवा तत्त्वज्ञाननिष्ठामें जैसे सदाचार, काम-क्रोधादिका राहित्य अपेक्षित है, वैसे ही अन्तरात्मामें बार-बार उस पापका लगाव होता ही है। ऐसा प्राणी अशुभ कर्मींके लिये अपनेको अकर्ता मान भी निरहंकारिता भी परम अपेक्षित है। यदि काम-क्रोधादिसे बचनेका ही घमण्ड हो गया तो भी पतन ही समझना लेता है, परंतु शुभ कर्मींका कर्ता तो वह अपने आपको चाहिये। श्रीनारदजीने कामको जीत लिया, परंतु उसीका ही मान बैठता है। एक सज्जनसे गोहत्या हो गयी, तो घमण्ड होनेसे अन्तमें उन्हें कष्ट उठाना पड़ा। महात्मा उन्होंने कह दिया कि 'मैं कर्ता नहीं हूँ, हाथ और उसका मार्कण्डेयके सामने भी कामादि दोष आये, उन्होंने उनपर देवता इन्द्र इसका जिम्मेदार है। हत्या इन्द्रके पास गयी। विजय प्राप्त कर ली, परंतु उसका कुछ भी मद उन्हें न इन्द्रने कहा—'अच्छा ठहरो।' इन्द्रने वृद्धवेषमें वहाँ हुआ—'इतीन्द्रानुचरैर्ब्रह्मन् धर्षितोऽपि महामुनिः। जाकर जब उसके आश्रम तथा कूपकी प्रशंसा करना यनागादहमोभावं न तच्चित्रं महत्सु हि॥' भागवतोंके प्रारम्भ किया, तब उसने कहा—'यह सब हमने ही लक्षणमें कहा गया है कि जिसे जन्म-कर्मादि किसी भी किया है।' भगवान् परब्रह्मने देवताओंकी सहायता करके हेतुसे इस देहमें अभिमान नहीं होता, वह भगवान्को उन्हें विजय प्रदान की, परंतु देवताओंने उसे अपनी प्रिय होता है—'न यस्य जन्मकर्मभ्यां न वर्णाश्रम-विजय माना। समझा कि हमने अपने अस्त्र-शस्त्र, जातिभिः। सज्जतेऽस्मिन्नहंभावो देहे वै स हरेः सैनिक, बुद्धि तथा बाहुबलसे देवासुर-संग्राममें विजय पायी है। भगवान्ने समझ लिया कि बस, ये भी असुर प्रिय:॥' अनादि अध्यासके कारण ही प्राणी देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, अहंकारादिकी हलचलोंका अपनेमें हो गये; क्योंकि असु-प्राण-तदुपलिक्षत अनात्माको आरोप करके अपनेको कर्ता मानने लगता है। बस, यही आत्मा मानकर उसके वैभवमें जो रमण करता है, वही अहंकार तथा कर्म-लेप ही प्राणीको निरन्तर जनन-'असुर' है अथवा अशोभन अनात्मामें रमण करनेवाला मरणके चक्रमें डालता है। भगवान्ने कहा है जो भी प्राणी असुर ही हो सकता है। दिव्य तेजोमय देहादिकी हलचलमें भी आत्माको निर्लेप तथा अकर्ता ही स्वरूपसे देवताओं के सामने प्रकट होकर भगवान्ने यह दिखला दिया कि अग्नि, मातरिश्वा (वायु) आदि मेरे मानता है, देहादिकी निश्चेष्टताके आधारपर आत्माके अकर्तापनकी भ्रान्ति नहीं करता, वही बुद्धिमान् है। बिना एक तृणको भी जला तथा उड़ा नहीं सकते, दुनिया जपा-कुसुमके सम्बन्धसे स्वच्छ स्फटिकमें जिस समय एक मेरी ही शक्तिसे सर्वत्र काम कर रही है, प्राणी तो अरुणिमाका भान हो रहा हो, ठीक उसी समय कठपुतलीके समान है। जैसे पंखों और लट्टओंमें हलचल स्फटिकको स्वच्छ ही समझना बुद्धिमानी है। जिसको तथा प्रकाश तभीतक है, जबतक उनका सम्बन्ध यह लेप न हो, वह किसी भी भले-बुरे कर्मींसे बद्ध नहीं विद्युद्भवनसे है, उस सम्बन्धके टूटते ही हलचल और होता। इसी सम्बन्धमें 'कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि प्रकाश दुर्लभ ही है। इसी तरह अचिन्त्य, अनन्त च कर्म यः। स बुद्धिमान् मनुष्येषु', 'यस्य नाहङ्कृतो शक्तियोंके अधिष्ठान भगवान्का जहाँतक सम्बन्ध है, भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते। हत्वापि स इमांल्लोकान्न वहींतक किसीकी भी कोई करामात हो सकती है। हन्ति न निबध्यते 'इत्यादि भगवद्कियाँ हैं। प्रह्लादने अपने पितासे कहा था—'राजन्! केवल मेरा ही नहीं, अपितु सब बलवानोंका बल भी भगवान् बिना तपस्या, भजन तथा सम्यक्-विचारके आत्माके ही है।' सम्पूर्ण बलोंका आश्रय प्राण है और उस अकर्तृत्वकी दृढ़ भावना नहीं होती। कहीं प्राणी पापोंसे बचनेके लिये झुठी भावना करता है कि मैं तो अकर्ता प्राणका भी प्राण, प्राणका भी आश्रय भगवान् ही है।

है कि 'तुमने जो मेरी कथाओंसे युक्त मेरी स्तुति की है और जो तुम्हारी तपस्यामें निष्ठा हुई है, वह सब मेरा ही अनुग्रह है—'यच्चकर्थाङ्ग मत्स्तोत्रं मत्कथाभ्यु-



स्वामीका काम करता है, वैसे ही सब प्राणी पराधीन होकर परमेश्वरकी रुचिका अनुसरण कर रहे हैं। जैसे बालकोंके खेलनेके खिलौने खेलनेवाले बालकके पराधीन होते हैं, वैसे ही सब प्राणी ईश्वरके पराधीन होते हैं-कहा-प्रभो! हम आपके शरण आये हैं-यह भी 'यथा क्रीडोपस्करावां संयोगविगमाविह। इच्छया आपकी ही अनुकम्पा है, मेरा तो वह भी सामर्थ्य नहीं क्रीडितुः स्यातां तथैवेशेच्छया नृणाम्॥' है। जब प्राणियोंका संसार मिटना होता है, तब सन्तोंकी काल-कर्म और गुणोंके पराधीन प्राणी स्वतन्त्रताका कृपासे आपके चरणोंमें प्रीति होती हैं—'सोऽहं अहंकार करता है, तो उसका यह उन्माद ही है। जैसे तवाङ्ग्र्युपगतोऽस्म्यसतां दुरापं तच्चाप्यहं भवदनुग्रह घट, कुण्डल, तरंग आदिकी गति-स्थिति आदि मृत्तिका, ईश मन्ये। पुंसो भवेद् यर्हि संसरणापवर्गस्त्वय्यब्जनाभ सुवर्ण एवं जलके ही पराधीन है, वैसे ही जीवोंकी भी

'मैं सेवक सीतापति मोरे' ( पं० श्रीबाबूलालजी द्विवेदी, 'मानस मधुप', साहित्यायुर्वेदरत्न) भाव कुभाव सुश्रुषा कैसी, पता न सेवा धर्म। उर प्रेरक जो कहते-करता, जग के सारे कर्म॥

सेवक सेव्य भाव बिनु भव से कोई पार न पाया। तरना मुश्किल, प्रियतम से मिलने को मन ललचाया॥ भटका, भटक रहा, भटकों ने भी मिलकर भटकाया। युग बीते थक गया जगत ने अब तक खूब रुलाया॥ 'उर अंकुरेउ गर्व तरु भारी'—चौरासी को भोग।

कुछ भी नहीं पात्रता, फिर भी कहते मुझे न शर्म।

तेरा हूँ! इस अहंकार का ही पहिना है वर्म॥

योग, वियोग, सुयोग कहूँ या इसको जुगुल सँयोग॥

सदुपासनया मितः स्यात्॥' भगवान्ने भी ब्रह्मासे कहा

अस अभिमान जाइ जिन भोरे—मुनि सुतीक्ष्ण की बानी। मैं सेवक सीतापति मोरे—यही टेक मनमानी॥

किसी योनि में जन्म मिले, पर रहे न मन में ग्लानी।

सम्पूर्ण स्थिति, प्रवृत्ति परमेश्वराधीन ही है।

दयाङ्कितम्। यद्वा तपसि ते निष्ठा स एष मदनुग्रहः॥' युधिष्ठिरके प्रति देवर्षि नारदकी भी उक्ति है कि 'राजन्! सम्पूर्ण संसार सर्वथा ईश्वरके वशमें है, पालकोंके सहित समस्त लोक उसीको बलि प्रदान करते हैं-'मा कञ्चन शुचो राजन् यदीश्वरवशं जगत्। लोकाः सपाला यस्येमे वहन्ति बलिमीशितुः॥' जैसे नाक छेदकर नथान डालकर पराधीन बनाया हुआ बैल

तुलसी के मानस का सम्बल, पाई यही निशानी॥ तुम अखण्ड में खण्ड, सदा से सत्ता एक रही है। ईश्वर अंश जीव अविनाशी—जो यह उक्ति सही है।। अहम् अस्मि, तत् त्वम् असि, तत्त्वम् असि में इतना जोड़ो।

मैं तेरा हूँ, तू मेरा है-तू तू मैं मैं छोड़ो॥ मैं तेरा हूँ! तुम मेरे हो, मैं कहता—तुम कह दो। प्राण प्राणधन तू मेरा है! बस इतना ही कह दो॥

करुणाकर की करुणा का हूँ, करुणिक, हे करुणाकर! अधमोद्धारक आप, अधम की यही माँग या सेवा। ज्ञानित्राहरू का अधिक स्वापन का अधिक स्वापन का अधिक स्वापन के अधिक स्वापन के अधिक स्वापन के अधिक स्वापन के अधिक 

भगवानुका परम भक्त कौन? संख्या १० ] भगवान्का परम भक्त कौन? (नित्यलीलालीन श्रद्धेय भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार) निरन्तर। ऐसे लोग सबसे ऊँचे हैं। भगवान्ने गीतामें भक्त-प्रेमी लोग बड़े विलक्षण होते हैं। दक्षिण भारतमें दो भक्त हुए स्त्री-पुरुष। जिनमें एकका नाम था कहा है— राँका और दूसरेका नाम था बाँका। राँका पति थे और मद्गतेनान्तरात्मना। योगिनामपि सर्वेषां श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः॥ बाँका उनकी पत्नी थी। वे अत्यन्त दरिद्र थे और भगवान्के परम भक्त थे। उनको भगवान्का ही आश्रय (गीता ६।४७) जो श्रद्धावान् हैं, वे सारे योगियोंमें परम योगी हैं। था। हम लोग कई जगह भूल कर जाते हैं, जब हम यह मानते हैं कि धनसे, पदसे, अधिकारसे, संसारकी जो अन्तरात्मासे मुझको भजते हैं। नामदेवजी सिद्ध महात्मा थे। उन्होंने राँका-वस्तुओंसे, संसारके सुखोंसे भगवान्की कृपाका नाप-तौल होता है, उस समय हम भूल जाते हैं। पता नहीं बाँकाके दारिद्रचको देखा कि पहननेको कपड़ा नहीं, भगवान्की कृपा कल किस रूपमें आयेगी। इसी रूपमें बैठनेको जगह नहीं, सोनेको झोपड़ी नहीं। इतनी दरिद्रता थी। तब एक दिन नामदेवजीने भगवान्से प्रार्थना की कि आये, सो बात नहीं है। उनके विनाशके रूपमें भी आती है। जब भगवानुकी कृपाका वह अवलम्बन करता है, महाराज! ये आपके इतने महान् भक्त हैं। आपके प्रेमी तब सब जगह भगवान्की कृपा देखता है। वह वस्तु हैं। इनको इतना दारिद्रच, इनकी यह दशा है। आपसे नहीं देखता है। वस्तुकी प्राप्तिमें कृपा हो सकती है और इसे कैसे देखा जाता है? भगवान्ने कहा—इनकी यह दशा देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। मैं इनके साथ-वस्तुके विनाशमें भी कृपा हो सकती है, उससे बढकर। इसलिये वस्तुका कोई महत्त्व नहीं है। साथ रहता हूँ। जहाँ बहुत है, वहाँ नहीं रहता। जो गरीब हैं, जिनके पास पैसा नहीं, जिनके पास नामदेवजीने कहा—महाराज! आप रहते तो हैं, अधिकार नहीं, धन नहीं, मिल्कियत नहीं, एक दिन भी परंतु ये बेचारे भूखों मरते हैं। आप सोचिये! भगवान्ने पूजा नहीं करता, जानता नहीं, जो संसारसे अंजान हैं, कहा—ये लेते नहीं हैं। इनको दूसरी चीजसे प्रेम है। लोग जिनको तुच्छ मानते हैं वे भगवान्के परम भक्त हो आप देकर तो देखिये-नामदेवजीने कहा। भगवान्ने सकते हैं। इसे कौन जानता है। राँका-बाँका ऐसे ही थे। कहा—अच्छा! तुम देखना। कल सबेरे ये जब जायँ उन्हें कोई नहीं जानता था, परंतु वे भगवान्के परम भक्त लकड़ी काटने, तब उस समय रास्तेमें तुम अमुक जगह खड़े हो जाना। उन्होंने कहा—ठीक है। जब वे जंगलमें थे। वे रोज दोनों जंगलमें जाकर लकड़ी लाते थे और जाने लगे, तब भगवान्ने अपनी मायासे एक सोनेकी लकड़ीका बोझा उतना ही, जिससे उनका कार्य चल मुहरोंकी थैली भरकर वहाँ डाल दी। उसका कपड़ा जाय। उनमें कोई संग्रह, भोगकी आसक्ति नहीं थी। अधिक लाकर जमा करनेकी प्रवृत्ति नहीं थी। लकडीका पारदर्शी था। मुहरें बाहरसे दीखती थीं। ये राँकाजी मस्त एक बोझा लाते। उस बोझेको बाजारमें बेच देते। उससे होकर भगवान्का कीर्तन करते हुए चले जा रहे थे। उन्हें जितना पैसा मिलता, उसमेंसे आधे पैसे दूसरेको दे बाहरी होश था नहीं। उनका पैर उस थैलीपर पड़ा। पैर देते। हमारे यहाँ शास्त्र कहते हैं कि कमाईका दशांश पड़ते ही छनऽ की आवाज हुई। आवाज होनेपर उन्होंने दान दे देना चाहिये। राँका-बाँका उस आधे पैसेसे अपना देखा तो सोनेकी मुहरें थीं। तब वे जल्दी-जल्दी उसपर धूल डालने लगे। इतनेमें बाँकाजी आ पहुँची। उन्होंने पेट भरते और रात-दिन भगवान्का भजन करते—

भाग ९० \* कहा—सरकार! क्या कर रहे हैं? यह धूलि क्यों डाल आनन्द है। हमें तो केवल उनकी चाकरीमें रहना है। रहे हैं ? बताइये, तो उन्होंने कहा—इसलिये धूल डाल भगवान्की चाकरीमें कौन रहता है? चाकरका स्वभाव क्या है ? आजकलकी यूनियनकी जगह दूसरी रहे हैं कि ये सोनेकी मुहरें थीं। इन्हें देखकर कहीं तुम्हारा मन न विचलित हो जाय। इसलिये धूल डाल है और आजकलके मालिक भी दूसरे हैं। दोनोंमें अन्तर आ गया है। सेवक क्या है? चाकर कौन है? जो अपने रहा हूँ। बाँकाजी बड़े आश्चर्यसे बोलीं—यह धूल-पर-धूल डालनेसे क्या लाभ है ? राँकाजीने तो समझा कि आपको स्वामीकी रुचिमें समर्पित कर दे और मालिक मुहर है, धूल डाल दें, परंतु बाँका समझती हैं कि यह कौन है ? जो सेवकको अपना हृदय दे दे। जो सेवकको धूल है। फिर आप धूल-पर-धूल क्यों डालते हैं? वे अपना हृदय दे दे, वह स्वामी है और जो स्वामीकी आगे गये। तब वहाँ भगवान्ने लकड़ीके बोझ बाँधकर रुचिमें अपने जीवनको समर्पित कर दे, वह सेवक है। रख दिये थे। इनके मनमें आया कि इसे तो कोई बाँध दास्य भक्ति इसीका नाम है। गया है। इन लकड़ियोंको हम कैसे लें? यह तो उनकी हनुमान्जी दास्य भक्तिके आचार्य माने जाते हैं। चीज है। दूसरेका हक कैसे लें? वे लौट आये। बाँकाजी हनुमान्जीके मनमें कभी गर्व आता ही नहीं है कि कुछ बोली नहीं, लेकिन राँकाजीने कहा—देखो, इन अमुक कार्य मैंने किया है। वह तो मानते हैं कि सारा-मुहरोंको देखनेका यह फल मिला कि आज भूखे रहेंगे। का-सारा कार्य भगवान् राघवेन्द्रकी शक्तिसे, उनकी इसका तात्पर्य यह है कि संसारकी किसी वस्तुके प्रेरणासे, उनके बलसे होता है। मैं तो कुछ करनेलायक होने-न-होनेसे भगवत्कृपाका सरोकार नहीं है। एक ही नहीं हूँ। मैं तो बन्दर हूँ। 'साखा ते साखा पर जाई' विशाल सम्पत्तिके स्वामी सम्राट्पर भगवान्की कृपा हो यही तो मेरा कार्य है और मैं क्या कर सकता हूँ। जरा सकती है और उससे भी कहीं अधिक कृपा एक दरिद्रपर भी अभिमान नहीं आया, लेकिन रामकी रुचि ही देखते हो सकती है, जिसके पास कोई वस्तु नहीं है। किसी हैं। उनका इतना ऊँचा भाव है कि भगवान् रामके सामने वस्तुके होने-न-होनेसे भगवान्की कृपा तय नहीं होती नहीं आते। एक बारकी बात है जब अयोध्यामें भगवान् रामका है। हृदयमें, भगवान्के प्रति जिसके मनमें महान्-महान् कृतज्ञता भरी है, जो पल-पलमें भगवान्के प्रति अपनेको राजतिलक हो गया। उसके बाद तय होना था कि सभी समर्पित करता है, जो भगवान्की राजीमें राजी है, लोग भगवान् रामकी सेवा करें। हनुमान्जी भी सेवा जिसको भगवान्का मनोरम पता है, जो भगवान्के मनकी करें। तीनों भाई और सुग्रीव आदि इकट्ठे हुए। उन बात निरन्तर करता रहता है, जो भगवान्के सिवाय और लोगोंने मन्त्रणा की कि ऐसा करो कि हम लोगोंको किसीको जानता मानता नहीं है। इस प्रकारका जो अधिक सेवा मिले और हनुमानको जरा कम मिले। कोई भगवानुका प्रेमी है, उसके लिये संसारकी किसी वस्तुका उपाय सोचो। उन्होंने सेवाकी एक सूची बनायी। कोई लोभ नहीं। अगर वस्तु आती है तो वह समझता भगवान्को कौन-कौन-सी सेवा अपेक्षित है, उसकी एक है कि भगवान्की चीज सेवाके लिये मिली है। ईमानदारीसे लम्बी लिस्ट बना दी और किस समय कौन-सी सेवा होगी, उसका समय भी लिख दिया। उन सेवा कार्योंके सेवा करो। और जाती है तो समझता है कि वह भगवान्की चीज थी, भगवान्ने ले ली। वह अब उसे आगे सेवा करनेवालेका भी नाम लिख लिया। हनुमान्जीके अपनाना चाहते हैं। अपने पास रखना चाहते हैं। यह लिये उसमें कोई जगह नहीं रही। उस सूचीको ले जाकर बड़े आनन्दकी बात है। वे दें तो आनन्द और लें तो भी भगवान् राघवेन्द्रके सामने रख दिये और बोले—

कभी कोई आये। व्यवस्था ठीक नहीं हो रही थी। हम सामने सं लोगोंने विचार किया कि सेवाकार्य सुव्यवस्थित हो। जो	मिलता है और जो सेवासे जी चुराते हैं। उनके विवाका अवसर आकर चला जाता है। भगवान्का हो जाता है, उसे भगवान् सदा मीप रखनेमें प्रसन्नताका अनुभव करते हैं। यदि देते हैं तब भी वह नाराज नहीं होता है, परंतु
कभी कोई आये। व्यवस्था ठीक नहीं हो रही थी। हम सामने सं लोगोंने विचार किया कि सेवाकार्य सुव्यवस्थित हो। जो	नेवाका अवसर आकर चला जाता है। भगवान्का हो जाता है, उसे भगवान् सदा मीप रखनेमें प्रसन्नताका अनुभव करते हैं। यदि देते हैं तब भी वह नाराज नहीं होता है, परंतु
लोगोंने विचार किया कि सेवाकार्य सुव्यवस्थित हो। जो	ं भगवान्का हो जाता है, उसे भगवान् सदा मीप रखनेमें प्रसन्नताका अनुभव करते हैं। यदि देते हैं तब भी वह नाराज नहीं होता है, परंतु
9	मीप रखनेमें प्रसन्नताका अनुभव करते हैं। यदि देते हैं तब भी वह नाराज नहीं होता है, परंतु
इसलिये हमने सभी सेवाकार्यकी सूची बना दी है। आप अपने स	देते हैं तब भी वह नाराज नहीं होता है, परंतु
	. •
इसे देखकर स्वीकार कर लें। भगवान्ने देखा फिर दूर भेज	
मुसकराये। उसमें हनुमान्का नाम नहीं था। बोले—ठीक इससे भ	गवान्की अनुकूलता प्राप्त हो जाती है। इसलिये
है, सब कार्य इसमें आ गया, परंतु हनुमान्का नाम नहीं हम भग	त्रान्के हो जायँ—यह एक बात है। दूसरी बात,
है। उन लोगोंने कहा—महाराज! अब कोई सेवा बची हम भग	ावान्के अनुकूल कार्य करें। उनकी रुचिके
नहीं। इसलिये उनका नाम कहाँ लिखें? भगवान्ने अनुसार	कार्य करें। जब यह हो जायगा तब हमारी रुचि
कहा—ठीक है और उन्होंने उसपर हस्ताक्षर कर दिये। अलग न	हीं रहेगी। हमारी आकांक्षा अलग नहीं रहेगी।
तब हनुमान्जी आये। उन्होंने कहा—महाराज! एक भक्त कौ	न है ? जो अपनी सारी आकांक्षाओंको अपनी
प्रार्थना है। सारी च	ाहोंको, अपने सारे मनोभिलाषको भगवान्के
भगवान्ने कहा—बोलो, हनुमान्! हनुमान्जीने कहा— 🛮 चाहमें गि	नला दे। अपनी अलग चाह रहे ही नहीं। अपनी
महाराज! एक सेवा बच गयी है। वह मुझे दी जाय। चाह न प	रूरी हो तो कोई परवाह नहीं। केवल और केवल
भगवान् राघवेन्द्रने कहा—इसमें तो कोई सेवा बची नहीं भगवान्व	ही चाह पूरी हो। तब क्या होगा? उसे भगवान <u>्</u>
है। यदि बची है तो वह तुम्हारी है। हनुमान्ने कहा— महत्त्व रे	देंगे कि यह मेरा है। उसके द्वारा वह कार्य
महाराज! आप कोई मामूली आदमी तो हैं नहीं। आप करायेंगे,	भगवान् जिस कार्यसे भगवान्का गौरव बढ़ता
राजाधिराज हैं। जब आपको जम्हाई आये, उस समय है। उसक	क्रो भगवान् अपने स्तरपर रखेंगे, जिस स्तरपर
सामने कोई सेवक रहे, जो चुटकी बजा दिया करे। रखनेसे	भगवान् अपने-आपको सुखी अनुभव करेंगे।
भगवान्ने इस कार्यको हनुमान्जीको सौंप दिया। लोगोंने यह बड़े	महत्त्वकी बात है और इसके हम सभी
कहा—यह किस समय लिखा जाय? तब हनुमान्जीने अधिकार	ी हैं। यह चीज बहुत बड़ी है और बहुत सस्ती
कहा—यह तो राघवेन्द्रसरकारसे पूछिये। मैं क्या बताऊँ? भी है।	सस्ती इसलिये कि इसमें और किसी प्रकारके
तब रामजीने कहा—मैं क्या बताऊँ ? जम्हाईका भी कोई विद्याकी	, कर्मकी, किसी विशेष ज्ञानकी, किसी बहुत
समय होता है क्या ? रातको आ जाय, दिनमें आ जाय, बड़ी साध	प्रनाकी, योगधारणाकी, षड्चक्रभेदनकी, कुण्डली-
रास्तेमें आ जाय, महलमें आ जाय, उठने, बैठने, नहाने, जागरणव	<b>ही कोई आवश्यकता नहीं है। यह सब भी</b> मार्ग
सोनेमें कभी भी आ सकती है। लोगोंने कहा—समय हैं और	सब ठीक हैं, परंतु इसमें तो केवल भावकी
क्या लिखें ? भगवान्ने कहा—सब समय लिखो, आठो आवश्यव	कता है। हम भावसे अपनेको भगवान्का बना
प्रहर हनुमान्की सेवा रहेगी। अब सभी लोग हैरान हो लें। अप	नेको अपना न रखें। अपनेको जगत्का न रखें।
गये। हम लोग तो समय-समयपर सेवा करेंगे और अपनेको	विषयोंका न रखें। अपनेको कामना, वासना,
हनुमान् तो हमेशा सेवामें रहेंगे। इसे हम विरोध माने, आसिक्त	और ममताका गुलाम न रखें। केवल भगवान्का
परंतु बात क्या है ? बात सच्ची है। यह सूझ क्यों आयी ? बना लें	। तब हम भगवान्के हो जायँगे। यह ममता,
जिनके मनमें सेवाका भाव जाग्रत् है, उनको सेवाका आसक्ति	और कामना फिर रहेगी ही नहीं।

राधा बिना कृष्ण आधा (श्रीफतेहचन्दजी अग्रवाल) वह सुन्दर चित्रकार थी; किंतु उसने अपनी चित्रा 'कृष्ण' के नटखट स्वरूपको हृदयमें बसा

चित्रांकन-कलाका कभी अभिमान नहीं किया था। उसका नाम उसके गुणोंके अनुकूल था। 'चित्रा' नाम

था उसका। उसका धाम था कृष्णकी पवित्र क्रीडास्थली

'गोकुल'। चित्रांकनकी कलामें वह इतनी निपुण और

सिद्धहस्त थी कि किसी भी वस्तु, पक्षी, पशु, ताल-

तलैया या मानवका चित्र कल्पनामात्रपर बना लिया

करती थी। बस, उसे हाथमें तुलिका उठा लेनेभरकी देर

होती कि चित्र सर्वोत्कृष्ट एवं हृदयाकर्षी बन जाता।

तथा अद्भृत चित्रांकन-कलाके कारण आस-पासके

क्षेत्रोंकी तो बात ही क्या, दूर-दूरतक चर्चित हो गयी

अपने आराध्य कृष्णका सुन्दर-सा चित्र वह बना सके,

इसी प्रयासमें आज वह एक महान् चित्रकार बन गयी थी। उसकी ख्याति इतनी विस्तृत हो गयी थी कि

किसीको भी चित्र बनवाना होता तो उसे बस एक ही नाम सूझता 'चित्रा'। किंतु इतनेपर भी चित्रा सन्तुष्ट नहीं

थी। उसे अपनी चित्रांकन-कलापर कभी-कभी सन्देह

होने लगता था। वह सोचा करती यदि मैं इतनी

प्रतिभासम्पन्न चित्रकार हूँ तो क्यों नहीं अभीतक

थी।

'चित्रा' अपने कुशल-व्यवहार एवं मधुर स्वभाव

वह बचपनसे ही 'कृष्ण'-भक्तिमें अनुरक्त थी।

घण्टों गुमशुम बैठी रहती, सोचती रहती, कितना अच्छा

होता यदि मैं चित्रकार न होकर 'ग्वालिन' होती।

कृष्ण-कन्हैयाको रोज माखन खिला पाती, रोज उसे

देख पाती। उसके साथ धेनु चराने भी चली जाती, भले

ही कोई कुछ भी कहता। मैं किसीकी परवा न करती।

इस प्रकार मन-ही-मन कृष्णका स्मरण करते हुए चित्रा

राधाजीके भाग्यको सराहती तथा कभी-कभी उसे

राधाजीसे ईर्ष्या-सी होने लगती। चित्रा सोचती कहाँ

चित्तचोर सुन्दर श्याम और कहाँ वह गाँवकी राधा।

िभाग ९०

उसके घाघरेमें तो सदा गोबर लगा रहता है, पर भाग्य

देखो, सदा श्यामसुन्दरका सामीप्य प्राप्त है उसे।

धिक्कार है मुझे और मेरी कलाको जो कृष्णके सामीप्यसे वंचित है।

इस प्रकार नित्य शुद्ध और पवित्र हृदयसे 'चित्रा' 'कृष्ण' का चिन्तन किया करती। श्रीकृष्ण तो सदासे ही

भाव और भक्तिके भूखे, भक्तवत्सल और अन्तर्यामी हैं।

वे चित्राके विचित्र एवं निर्मल-निर्भ्रम प्रेमसे अन्ततः एक दिन द्रवित हो ही उठे और अचानक घरमें रूठकर बैठ

प्रात:कालका समय है, यशोदा मैया सोच रही हैं क्या बात है आज लाला माखन माँगने नहीं आया! दूसरे

दिनों तो भले ही सूर्य उदय होना भूल जाय, किंतु वह

भला वह कोई कार्य करता है जो मैं उसे कहीं भेजता!

नन्दबाबाके नटखट श्यामसुन्दर कन्हैया मेरी ओर आकर्षित हुए? उन्होंने आजतक कभी भी मुझे अपना चित्र माखन माँगना नहीं भूलता। माखन, माखनकी रट लगा बनानेके लिये नन्दभवनमें आमन्त्रित क्यों नहीं किया? देता है। आज क्या बात है? माँ यशोदाकी चिन्ता निश्चय ही अभी मैं पूर्णरूपसे चित्रांकन-कलामें निपुण स्वाभाविक थी। वे विचलित-सी हुईं नन्दबाबाके पास नहीं हो पायी हूँ। अचानक फिर उसे दूसरे ही क्षण याद गयीं। पूछा—आपने कन्हैयाको कहीं भेजा है? नहीं तो, आता—मथुरा-नरेशने भी तो मुझसे अपना चित्र बनवाया

था और उस चित्रसे इतने सन्तुष्ट हुए थे कि उन्होंने कल रात चन्द्रावलीकी मटकी फोड़ आया था। इसलिये

अपने दरबारमें राज्यशिल्पी-जैसा उच्चस्थान प्रदान करना भयवश मेरे सामने तो आ ही नहीं सकता। नन्दबाबाके Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sharler था। मैंने हो ती उनके प्रस्तावकी पुरुक्तरा दिया था। प्रमान अधिक चिन्तित हो उठा, बीली आर्थ

गये।

संख्या १०] राधा बिना व	कृष्ण आधा १५
<u> </u>	***********************************
तो फिर कहाँ गया?' इतनेमें ही आवाज आयी	जिसकी वर्षोंसे उसे प्रतीक्षा थी तथा जिस उद्देश्यसे उसने
कृष्णकी—'मैया, अरी ओ मैया! मैं यहाँ हूँ, किंतु मैं	चित्रांकन-कलाको अपने जीवनयापनका माध्यम बनाया
क्यों बताऊँ कि मैं कहाँ हूँ। मैं तो आज रूठा हुआ हूँ	था। वह बेसुध-सी हुई नन्दभवन जानेकी तैयारीमें जुट
और रूठनेवाला चुप रहता है, इसलिये मैं नहीं बताता।'	गयी।
नन्दबाबा और माँ यशोदा दोनों अपने कान्हाकी	नन्दभवनमें बैठी हुई चित्रा कृष्णके स्वरूपका
ऐसी बातें सुनकर मुँह दबाकर हँसने लगे। मैयाने देखा	चिन्तन कर ही रही थी कि इतनेमें ही अचानक उसके
आवाज पलंगके नीचेसे आ रही है। उन्होंने झुककर	जीवनाधार कृष्ण वहाँ आ पहुँचे। वे तुरंत एक छोटी-
पलंगके नीचे देखा, कन्हैया मुँह फुलाये घुटने मोड़े	सी चौकीपर खड़े होते हुए चित्रासे बोले—'चित्र सुन्दर
चुपचाप बैठा है। पसीनेसे तर हुआ श्यामल मुँह	बनाना, मेरी तरह ही।' चित्रा भावविभोर हो अपलक
कुम्हला-सा गया है। यशोदा मैयाने प्राय: नीचे लेटते	कुछ क्षण कृष्णको निहारती रही। सुधि लौटनेपर एक
हुए पलंगके नीचेसे कन्हैयाको निकाला और वात्सल्यप्रेमके	हाथमें तूलिका पकड़ी और दूसरेमें चित्रपट और चाहा
साथ अंकमें भरकर चूमने लगीं। फिर गोदमें बैठाकर	कि कृष्णका चित्र बनाना आरम्भ करूँ, पर यह क्या
प्रेमपूर्वक अपने आँचलसे कृष्णके शरीरका पसीना पोंछने	उसके हाथ शिथिल क्यों हो गये? तूलिकाको क्या हो
लगीं। पुन: पंखा लहराते हुए पूछा—'क्यों रूठा है मेरा	गया, वह क्यों नहीं चलती ? उसने अपने-आपको संयत
लाला! कुछ पता तो चले।''मुझे अपना चित्र बनवाना	किया और चित्र क्यों अंकित नहीं हो रहा है, इसका
है' तुनककर बोले जगत्पिता बालरूप कृष्ण।	अनुसन्धान करने लगी। ओह! उसे ध्यान आया, कृष्ण
मैया यशोदाको जोरोंकी हँसी आ गयी। आज तुझे	तो टेढ़ा खड़ा है, कदाचित् यही कारण है जो चित्र नहीं
यह चित्र बनवानेकी क्या सूझी? रोज तो माखनके लिये	बन पा रहा है। उसने कृष्णको आदेश दिया—'सीधे
रूठा करता था, फिर आज चित्रके लिये क्यों?	खड़े रहो।' कृष्णने शरारती लहजेमें कहा—'सखी! यह
सभीके चित्र हैं हमारे भवनमें; केवल मेरा ही नहीं	कैसे सम्भव है ? मैं तो हमेशासे ही नटखट और टेढ़ा
है, मेरे साथ यह अन्याय क्यों? मेरा भी चित्र तत्काल	हूँ, मैं क्या-क्या चीजें सीधी करूँ ? मेरा मुकुट टेढ़ा, मेरी
बनवाया जाय, सभी चित्रोंके ऊपर लगाया जाय, तभी	बाँसुरी टेढ़ी, मेरा नाम टेढ़ा। क्या तुम नहीं जानती मेरा
मैं मानूँगा। अन्यथा रूठा ही रहूँगा। मचलते हुए कहा	एक नाम बाँकेबिहारी भी है और बाँकेका अर्थ तो टेढ़ा
कृष्णने ।	ही होता है न? तुम एक काम करो, मेरा टेढ़ा ही एक
नरोत्तम कृष्ण जानते थे, मेरा रूठना न तो मैया सह	चित्र बना दो।' चित्रा मन्त्रमुग्ध-सी हुई कृष्णके
सकती हैं और न नन्दबाबा। मेरे रूठे रहनेपर अवश्य ही	वचनोंको सुन रही थी। उसे ऐसा लगने लगा जैसे वह
मेरा चित्र बनवाया जायगा और चित्र बनानेके लिये मेरी	चित्रांकन करना ही भूल गयी है। जिस चित्राके हाथमें
प्रिय भक्ता चित्राको ही बुलाया जायगा। इस प्रकार	तूलिका आनेमात्रसे ही चित्र स्वयं ही बन जाया करते
चित्राकी मन:कामना पूर्ण की जा सकेगी। वही हुआ जो	थे, वह आज हस्तविहीन-सी हो गयी थी। उसका शरीर
कृष्ण चाहते थे। चित्राको बुलवाया गया, वस्तुत: इसी	रोमांचित हो थर-थर काँप रहा था। उससे कृष्णका चित्र
बहाने श्रीकृष्ण चित्राको कुछ शिक्षा भी देना चाहते थे।	नहीं बन रहा था। चित्रा किंकर्तव्यविमूढ हुई चुपचाप
आज चित्राकी प्रसन्नताका ठिकाना नहीं था। वह	बैठ गयी। वह चित्र नहीं बना पानेके कारण लज्जाका
हर्षोत्फुल्ल हो रही थी, आज वह दिन आ गया था,	अनुभव कर रही थी। उसकी आँखोंसे आँसू निकलना

िभाग ९० आधा भाग कृष्णका। चित्राने देखा कृष्णका सम्पूर्ण ही चाहते थे कि कृष्ण उसकी मन:स्थिति भाँपकर बोले—'अच्छा, ठहरो जरा मैं माखन खाकर आता हूँ, स्वरूप कभी राधाके स्वरूपमें परिवर्तित हो जाता और तब बनाना मेरा चित्र। उस समय मेरा चित्र हृष्ट-पुष्ट कभी कृष्णके स्वरूपमें तथा कभी आधे अंगमें कृष्ण बनेगा, अन्यथा मैं चित्रमें कमजोर-सा दीखुँगा।' कृष्ण होते और आधेमें राधा। चले गये बहाना बनाकर। चित्रा कृष्णकी इस अद्भृत लीलाको देखकर तथा चित्रा अकेली रह गयी भवनमें, अब वह अपने उनके पूर्णरूपको देखकर आश्चर्यचिकत रह गयी। उसने आँसुओंके वेगको रोक नहीं पायी। सुबकते-सुबकते न स्वयंको धिक्कारा—'अरे, वह जिसे गाँवकी एक साधारण-जाने कब वह बेसुध-सी हो गयी या उसकी आँख लग सी बालिका, ग्वालिन, छोरी समझे बैठी थी, वह तो गयी। उसने देखा कि कृष्ण उसके सामने खड़े हैं और पराशक्ति है। वह तो कृष्णकी लीला-सहचरी है।' उससे कह रहे हैं- 'सखी चित्रे! मैं तुम्हारी भक्तिसे अचानक उसकी चेतना वापस आयी। उसने सच्चे अत्यन्त प्रसन्न हैं। यह सच है कि तुमने हमेशा मुझे हृदयसे राधाका आह्वान किया, तुरंत ही उसने देखा अपना आराध्य माना, किंतु साथ ही तुम मेरी प्रियतमा, चतुर्भुज-रूपमें तेजपुंज लिये राधा उसके सामने खड़ी मेरी सर्वेश्वरी, मेरी शक्ति राधासे ईर्घ्या करती रही। किंतु मुसकरा रही हैं, साथमें खड़े हैं नटखट कन्हैया। भद्रे! कदाचित् तुम्हें ज्ञान नहीं कि मैं और राधारानी कहना न होगा उसके बाद चित्राने जो कृष्णका एक-दूसरेके अभिन्न अंग और पूरक हैं। राधाके बिना, चित्र बनाया वह अतिललित, सुन्दर तथा भक्तवत्सलतासे हे चित्रे! मैं अधूरा हूँ, इसलिये ज्ञानी भक्त प्राय: यह परिपूर्ण था। आज चित्राकी चित्रांकन-साधना पूर्ण हो कहा करते हैं कि 'राधा बिना कृष्ण आधा' अर्थात् भद्रे! गयी थी, आज उसके जीवनमें माधुर्य-रसकी अजस्र राधाके बिना मेरी भक्तिका कोई महत्त्व ही नहीं रह जाता धारा प्रवाहित हो उठी थी। है और इसी कारण तुम मेरी छिब नहीं बना पा रही हो। भक्तिमती चित्राके इस वृत्तान्तसे यह स्पष्ट हो चित्रा, यदि तुम्हें मेरा चित्र अंकित करना है तो मेरे इस जाता है कि निरन्तरके ध्यानाभ्याससे और साधनादार्ढ्यसे स्वरूपको अपने हृदयमें स्थान दो।' ऐसा कहकर कृष्णने भगवान्का मिलन सबके लिये सम्भव है। कहा भी है— चित्राको अपने पूर्णस्वरूपका दर्शन कराया। चित्राने यद् यद्धिया त उरुगाय विभावयन्ति देखा कृष्णके शरीरका आधा भाग राधाका है और तत्तद्वपु: प्रणयसे सदनुग्रहाय॥ राधा ( श्रीशिवचरणजी चौहान ) गैल में छैल के नैन के बान चुभे दिल घायल है गईं राधा। काम को श्याम लजाय रहे लखि के रित कायल ह्वै गईं राधा।। काहू के बांधे जो नाहिं रही सोई श्याम बधायल ह्वै गईं राधा। ₩ प्रीति के पूत का प्रश्रय पाय के प्रान के पायल है गईं राधा। 钦 नन्द के लाल हैं कृष्ण तो राधा हैं वृषभानु की गोरी लली। ₩ रसिया अलि हैं जो साँवरे श्याम तो राधा हैं रसबोरी कली।। ₩ इक गोकुल गैल को छैल है तो इक है बरसाने की छोरी छली। कवि कैसे कहै दोऊ हैं एकै कचनार हैं केशव किशोरी कली।।

साधकोंके प्रति—

साधकोंके प्रति-

## विर्णनातीतका वर्णनी ( ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज )

[ साधकको चाहिये कि वह एकान्तमें बैठकर शुद्ध वृत्तिसे इस लेखको पढ़े। केवल शब्दोंपर दृष्टि न रखकर अर्थ

महत्त्व देंगे, उतनी ही उसकी सत्ता दीखेगी और वह तत्त्व

अप्राप्त दीखेगा। अप्राप्त दीखनेपर भी वह नित्यप्राप्त है

अर्थात् न दीखनेपर भी तत्त्वमें कभी किंचिन्मात्र भी फर्क

मिलेगा तो वह ठहरेगा नहीं, बिछुड़ ही जायगा।

जितने भी भेद हैं, सब-के-सब प्रकृति (असत्)-

में ही हैं। तत्त्वमें किंचिन्मात्र भी कोई भेद नहीं है। जब

प्राकृत पदार्थींकी सत्ता मानते हुए उनको महत्त्व देते हुए

उस तत्त्वका वर्णन करते हैं, तब वह तत्त्व केवल बृद्धिका विषय हो जाता है और उसमें भेद दीखने लग जाता है<sup>२</sup>।

सभी भेद सापेक्ष होते हैं। अपेक्षा छोड़ें तो कोई भेद नहीं

रहता, एक निरपेक्ष तत्त्व रह जाता है। जैसे, दिनकी

अपेक्षा रात है और रातकी अपेक्षा दिन है, पर सूर्यमें न

दिन है, न रात है अर्थात् वहाँ नित्यप्रकाश है। समुद्रकी

अपेक्षा तरंग है और तरंगकी अपेक्षा समुद्र है, पर जल-तत्त्वमें न समुद्र है, न तरंग है । ऐसे ही गुणोंकी अपेक्षासे

एवं तत्त्वकी तरफ दृष्टि रखते हुए पढ़े, पढ़कर विचार करे और विचार करके भीतरसे चुप हो जाय तो तत्त्वमें स्वतःसिद्ध

स्थिरता जाग्रत् हो जायगी अर्थात् सहजावस्थाका अनुभव हो जायगा<sup>१</sup> और मनुष्यजीवन सफल हो जायगा।]

अप्राप्तिकी तो मान्यतामात्र है। असत्को सत् माननेसे, सत्-तत्त्व एक ही है। उस तत्त्वका वर्णन नहीं होता;

क्योंकि वह मन (बुद्धि) और वाणीका विषय नहीं है— अप्राप्तको प्राप्त माननेसे ही वह तत्त्व अप्राप्तकी तरह

**'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह'** (तैत्तिरीय० दीखने लग गया। असत्को जितनी सत्ता देंगे अर्थात्

२।९), **'मन समेत जेहि जान न बानी। तरिक न** 

सकिहं सकल अनुमानी ॥'(रा०च०मा० १।३४१।७)।

जहाँ वर्णन है, वहाँ तत्त्व नहीं है और जहाँ तत्त्व है, वहाँ

वर्णन नहीं है। उस तत्त्वकी तरफ लक्ष्य नहीं है, इसलिये नहीं पड़ता। यह सिद्धान्त है कि प्राप्ति उसीकी होती है,

केवल उसका लक्ष्य करानेके लिये ही उसका वर्णन किया जो सदासे प्राप्त है और निवृत्ति उसीकी होती है, जिसकी

जाता है, परंतु जब उसका लक्ष्य न करके कोरा सीख लेते सदासे निवृत्ति है। तात्पर्य है कि मिलेगा वही, जो मिला

हैं, तब वर्णन-ही-वर्णन होता है, तत्त्व नहीं मिलता। उसका हुआ है और बिछुड़ेगा वही, जो बिछुड़ा हुआ है। नया

लक्ष्य रखकर वर्णन करनेसे वर्णन तो नहीं रहता. पर तत्त्व कुछ भी मिलनेवाला और बिछुडनेवाला नहीं है। नया

रह जाता है। तात्पर्य है कि उसका वर्णन करते–करते जब

वाणी रुक जाती है, उसका चिन्तन करते-करते जब मन

रुक जाता है, तब स्वत: वह तत्त्व रह जाता है और प्राप्त

हो जाता है। वास्तवमें वह पहलेसे ही प्राप्त था, केवल

अप्राप्तिका वहम मिट जाता है।

प्रकृतिजन्य कोई भी क्रिया, पदार्थ, वृत्ति, चिन्तन

उस तत्त्वतक नहीं पहुँचता। प्रकृतिसे अतीत तत्त्वतक

प्रकृतिजन्य पदार्थ कैसे पहुँच सकता है ? अत: तत्त्वका

वर्णन नहीं होता, प्रत्युत प्राप्ति होती है। उसकी प्राप्ति

भी अप्राप्तिकी अपेक्षासे कही जाती है अर्थात् उसको

अप्राप्त माना है, इसलिये उसकी प्राप्ति कही जाती है।

वास्तवमें वह तत्त्व स्वतः सबको नित्य-निरन्तर प्राप्त है।

१-उत्तमा सहजावस्था मध्यमा ध्यानधारणा। कनिष्ठा शास्त्रचिन्ता च तीर्थयात्राऽधमाऽधमा॥

२-शास्त्रोंमें तत्त्वका जो वर्णन आता है, वह हमारी दृष्टिसे है। हमने असत्की सत्ता मान रखी है, इसलिये शास्त्र हमारी दृष्टिके अनुसार

हमारी भाषामें असत्की निवृत्ति और सत्-तत्त्वका वर्णन करते हैं। यही कारण है कि दृष्टिभेदसे दर्शन अनेक हैं। अनेक दर्शन होते हुए भी तत्त्व एक है। जबतक द्रष्टा, ज्ञाता, दार्शनिक और दर्शन हैं, तबतक तत्त्वके वर्णनमें भेद है। जबतक भेद है, तबतक तत्त्व नहीं है, क्योंकि

संख्या १० ]

तत्त्वमें भेद नहीं है। दूसरे शब्दोंमें, जबतक अहम् (जड़-चेतनकी ग्रन्थि) है, तबतक भेद है। अहम्के मिटनेपर कोई भेद नहीं रहता, केवल

एक तत्त्व ('है') रह जाता है।

मेरा स्वरूप समुद्र है और ईश्वर उसकी तरंग है अर्थात् समुद्र तरंगका है। इन दोनोंमें तरंग समुद्रकी है—यह कहना तो ठीक दीखता है, पर

३-ईश्वर और जीवके विषयमें दो तरहका वर्णन है—पहला, ईश्वर समुद्र है और मैं उसकी तरंग हूँ अर्थात् तरंग समुद्रकी है; और दूसरा,

िभाग ९० \* उस तत्त्वको सगुण-निर्गुण और आकारकी अपेक्षासे उस नित्य है; न उत्पन्न है, न अनुत्पन्न है; न नाशवान् है, न तत्त्वको साकार-निराकार कहते हैं। वास्तवमें तत्त्व न अविनाशी है; न असत्-जड-दु:खरूप है, न सत्-चित्-आनन्दरूप है; न प्राप्त है, न अप्राप्त है; न कठिन है, न सगुण है, न निर्गुण है; न साकार है, न निराकार है। वह एक ही तत्त्व प्रकाश्यकी अपेक्षासे 'प्रकाशक', सुगम है अर्थात् शब्दोंके द्वारा उस तत्त्वका वर्णन नहीं होता। आश्रितकी अपेक्षासे 'आश्रय' और आधेयकी अपेक्षासे वह तत्त्व परतःसिद्धकी अपेक्षासे स्वतःसिद्ध है। 'आधार' कहा जाता है। प्रकाश्य, आश्रित और आधेय अस्वाभाविककी अपेक्षासे वह स्वाभाविक है। तो व्याप्य, विनाशी एवं अनेक हैं, पर प्रकाशक, आश्रय अस्वाभाविकतामें स्वाभाविकका आरोप कर लिया तो और आधार व्यापक, अविनाशी एवं एक है। प्रकाश्य, 'बन्धन' हो गया, स्वाभाविकमें अस्वाभाविकताका आरोप आश्रित और आधेय तो नहीं रहेंगे, पर प्रकाशक, आश्रय कर लिया तो 'संसार' हो गया और अस्वाभाविकताको और आधार रह जायगा; किंतु प्रकाशक, आश्रय और अस्वीकार करके स्वाभाविकका अनुभव किया तो 'तत्त्व' हो गया और अतत्त्वसे मुक्ति हो गयी अर्थात् है ज्यों हो आधार ये नाम नहीं रहेंगे, प्रत्युत एक तत्त्व रहेगा। तात्पर्य है कि तत्त्व न प्रकाश्य है, न प्रकाशक है; न गया! तत्त्व न परत:सिद्ध है, न स्वत:सिद्ध है, न स्वाभाविक आश्रित है, न आश्रय है; न आधेय है, न आधार है। है, न अस्वाभाविक है। परत:सिद्ध-स्वत:सिद्ध, स्वाभाविक-वह एक ही तत्त्व शरीरके सम्बन्धसे शरीरी, क्षेत्रके अस्वाभाविक तो सापेक्ष हैं, पर तत्त्व निरपेक्ष है। सम्बन्धसे क्षेत्री तथा क्षेत्रज्ञ, क्षरके सम्बन्धसे अक्षर, उस तत्त्वको 'है' कहते हैं। वास्तवमें वह 'नहीं' दृश्यके सम्बन्धसे द्रष्टा और साक्ष्यके सम्बन्धसे साक्षी की अपेक्षासे 'है' नहीं है, प्रत्युत निरपेक्ष है। अगर हम कहलाता है। तात्पर्य है कि तत्त्व न शरीर है, न शरीरी 'नहीं' की सत्ता मानें तो फिर उसको 'नहीं' कहना है, न क्षेत्र है, न क्षेत्री तथा क्षेत्रज्ञ है; न क्षर है, न अक्षर बनता ही नहीं; क्योंकि 'नहीं' और सत्तामें परस्परविरोध है; न दूश्य है, न द्रष्टा है; न साक्ष्य है, न साक्षी है। है अर्थात् जो 'नहीं' है, उसकी सत्ता कैसे और जिसकी वह तत्त्व अनेककी अपेक्षासे एक है। जडकी अपेक्षासे सत्ता है, वह 'नहीं' कैसे ? वास्तवमें 'नहीं' की सत्ता वह चेतन है। असत्की अपेक्षासे वह सत् है। अभावकी ही नहीं है, परंतु जब भूलसे 'नहीं' की सत्ता मान लेते अपेक्षासे वह भावरूप है। अनित्यकी अपेक्षासे वह नित्य हैं, तब उस भूलको मिटानेके लिये 'यह नहीं है, तत्त्व है। उत्पन्न वस्तुकी अपेक्षासे वह अनुत्पन्न है। नाशवानुकी है' ऐसा कहते हैं। जब 'नहीं' की सत्ता ही नहीं है, अपेक्षासे वह अविनाशी है। असत्-जड्-दु:खरूप संसारकी तब तत्त्वको 'है' कहना भी बनता नहीं। तात्पर्य है कि अपेक्षासे वह सत्-चित्-आनन्दरूप है। प्राकृत पदार्थोंकी 'नहीं 'की अपेक्षासे ही तत्त्वको 'है' कहते हैं। वास्तवमें तत्त्व न 'नहीं' है और न 'है' है। गीतामें आया है— अपेक्षासे वह प्राप्त अथवा अप्राप्त है। कठिनताकी अपेक्षासे उसको सुगम कहते हैं, नहीं तो जो नित्यप्राप्त है, उसमें ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते। क्या कठिनता और क्या सुगमता? तात्पर्य है कि तत्त्व न अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥ 'जो ज्ञेय है, उस तत्त्वका मैं अच्छी तरहसे वर्णन अनेक है, न एक है; न जड है, न चेतन है; न असत् है, न सत् है; न अभावरूप है, न भावरूप है; न अनित्य है, न करूँगा, जिसको जानकर मनुष्य अमरताका अनुभव कर समुद्र तरंगका है—यह कहना ठीक नहीं दीखता; क्योंकि समुद्र अपेक्षाकृत नित्य है और तरंग अनित्य (क्षणभंगुर) है। अत: तरंग समुद्रकी होती है, समुद्र तरंगका नहीं होता। अगर अपनेको समुद्र और ईश्वरको तरंग मानें तो इस मान्यतासे अनर्थ होगा; क्योंकि ऐसा माननेसे अभिमान पैदा हो जायगा तथा अहम् (चिज्जडग्रन्थि अर्थात् बन्धन) तो नित्य रहेगा और ईश्वर अनित्य हो जायगा! कारण कि जीवमें अनादिकालसे अहम् (व्यक्तित्व)-का अभ्यास पड़ा हुआ है। अत: जहाँ स्वरूपको अहम् कहेंगे वहाँ वही अहम् आयेगा, जो अनादिकालसे है। उस अहम्के मिटनेसे ही तत्त्वकी प्राप्ति होती है। उपर्युक्त दोनों बातोंके सिवा तीसरी एक विलक्षण बात है कि जल-तत्त्वमें न समुद्र है, न तरंग है अर्थात वहाँ समुद्र और तरंगका भेद नहीं Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sha है । समुद्र और तरंग ता सपिक्ष है, पर जल-तत्त्व निरंपक्ष हैं । संख्या १० ] साधकोंके प्रति— लेता है। वह तत्त्व अनादि और परब्रह्म है। उसको न सत् हैं ? ऐसे ही तत्त्वमें न ज्ञान है, न अज्ञान है और न ज्ञान-अज्ञान दोनों हैं। वहाँ न ज्ञाता है, न ज्ञान है, न ज्ञेय है; न कहा जा सकता है और न असत् कहा जा सकता है।'<sup>१</sup> तात्पर्य है कि उस तत्त्वका आदि (आरम्भ) नहीं प्रकाशक है, न प्रकाश है, न प्रकाश्य है; न द्रष्टा है, न है। जो सदासे है, उसका आदि कैसे? सब अपर हैं, वह दर्शन है, न दुश्य है; न ध्याता है, न ध्यान है, न ध्येय है। पर है। वह न सत् है, न असत् है। आदि-अनादि, पर-तात्पर्य है कि तत्त्वमें त्रिपुटीका सर्वथा अभाव है। कारण अपर और सत्-असत्का भेद प्रकृतिके सम्बन्धसे है। वह कि त्रिपुटी सापेक्ष है, पर तत्त्व निरपेक्ष है। वास्तवमें जहाँ तत्त्व तो आदि-अनादि, पर-अपर और सत्-असत्से विलक्षण स्थित होकर हम बोलते हैं, सुनते हैं, विचार करते हैं, वहीं है। इस प्रकार भगवान्ने ज्ञेय-तत्त्वका जो वर्णन किया है, सापेक्ष और निरपेक्षकी बात आती है; तत्त्व वास्तवमें न वह वास्तवमें वर्णन नहीं है, प्रत्युत लक्षक (लक्ष्यकी तरफ सापेक्ष है, न निरपेक्ष है। दुष्टि करानेवाला) है। इसका तात्पर्य ज्ञेय-तत्त्वका लक्ष्य वह तत्त्व वास्तवमें अनुभवरूप है। उसको गीताने करानेमें है, कोरा वर्णन करनेमें नहीं। 'स्मृति'कहा है—**'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा**'(१८।७३)। संतोंकी वाणीमें भी आया है कि न जाग्रत् है, न स्मृति भी विस्मृतिकी अपेक्षासे है; परंतु तत्त्वकी स्मृति स्वप्न है; न सुषुप्ति है, न तुरीय है; न बन्धन है, न मोक्ष विस्मृतिकी अपेक्षासे नहीं है, प्रत्युत अनुभवरूप है। कारण है आदि-आदि। कारण कि ये सब तो सापेक्ष हैं, पर कि स्मृतिकी तो विस्मृति हो सकती है, पर अनुभवका तत्त्व निरपेक्ष है। निरपेक्ष भी वास्तवमें सापेक्षकी अपेक्षासे अननुभव (विस्मृति) नहीं हो सकता। तत्त्वकी विस्मृति नहीं होती, प्रत्युत विमुखता होती है। तात्पर्य है कि पहले है। तत्त्व भी वास्तवमें अतत्त्वकी अपेक्षासे कहा जाता है: अत: उसको किस नामसे कहें? उसका कोई नाम ज्ञान था, फिर उसकी विस्मृति हो गयी—इस तरह तत्त्वकी नहीं है अर्थात् वहाँ शब्दकी गति नहीं है। शब्दसे केवल विस्मृति नहीं होती<sup>३</sup>। अगर ऐसी विस्मृति मानें तो स्मृति उसका लक्ष्य होता है<sup>२</sup>। होनेके बाद फिर विस्मृति हो जायगी! इसलिये गीतामें आया है—'यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहम्' (४।३५) अर्थात् तत्त्व न प्रत्यक्ष है, न अप्रत्यक्ष है; न परोक्ष है, न अपरोक्ष है; न छोटा है, न बड़ा है; न अन्दर है, न बाहर है; उसको जान लेनेके बाद फिर मोह नहीं होता। अभावरूप न ऊपर है, न नीचे है; न नजदीक है, न दूर है; न भेद है, न असत्को भावरूप मानकर महत्त्व देनेसे तत्त्वकी तरफसे अभेद है, न भेदाभेद है; न भिन्न है, न अभिन्न है, न वृत्ति हट गयी—इसीको विस्मृति कहते हैं। वृत्तिका हटना भिन्नाभिन्न है। कारण कि ये सब तो सापेक्ष हैं, पर तत्त्व और वृत्तिका लगना—यह भी साधककी दृष्टिसे है, तत्त्वकी निरपेक्ष है। जैसे सूर्यमें न प्रकाश है, न अँधेरा है और न दृष्टिसे नहीं। तत्त्वकी तरफसे वृत्ति हटनेपर अथवा विमुखता प्रकाश-अँधेरा दोनों हैं। कारण कि जहाँ प्रकाश है, वहाँ होनेपर भी तत्त्व ज्यों-का-त्यों ही है। अभावरूप असत्को अँधेरा नहीं होता और जहाँ अँधेरा है, वहाँ प्रकाश नहीं अभावरूप ही मान लें तो भावरूप तत्त्व स्वत: ज्यों-का-होता, फिर प्रकाश-अँधेरा दोनों एक साथ कैसे रह सकते त्यों रह जायगा। १-गीतामें परमात्माका तीन प्रकारसे वर्णन आता है—(१) परमात्मा सत् भी है और असत् भी है—'सदसच्चाहम्' (९।१९), (२) परमात्मा सत् भी है, असत् भी है और सत्–असत्से पर भी है—'सदसत्तत्परं यत्' (११।३७), (३) परमात्मा न सत् है और न असत् है— 'न सत्तन्नासदुच्यते' (१३।१२)। इसका तात्पर्य यही है कि वास्तवमें परमात्माका वर्णन नहीं किया जा सकता; क्योंकि वह मन, बुद्धि और शब्दसे अतीत है। २-यदि कहनेवाला अनुभवी और सुननेवाला सच्चा जिज्ञासु हो तो शब्दके द्वारा शब्दातीत, इन्द्रियातीत तत्त्वका भी ज्ञान हो जाता है—यह शब्दकी विलक्षण, अचिन्त्य शक्तिका प्रभाव है, परंतु ऐसा होना तभी सम्भव है, जब केवल शब्दोंपर दृष्टि न रखकर तत्त्वकी तरफ दृष्टि रखी जाय। अगर तत्त्वकी तरफ दुष्टि नहीं रहेगी तो सीखनामात्र होगा अर्थात् कोरा वर्णन होगा, तत्त्व नहीं मिलेगा। ३-ज्ञान होनेपर नयापन कुछ नहीं दीखता अर्थात् पहले अज्ञान था, अब ज्ञान हो गया—ऐसा नहीं दीखता। ज्ञान होनेपर ऐसा अनुभव होता है कि ज्ञान तो सदासे ही था, केवल उधर मेरी दृष्टि नहीं थी। यदि पहले अज्ञान था, अब ज्ञान हो गया—ऐसा मानें तो ज्ञानमें सादिपना आ जायगा, जबिक ज्ञान सादि नहीं है, अनादि है। जो सादि होता है, वह सान्त होता है और जो अनादि होता है, वह अनन्त होता है।

अतिथिदेवो भव

( डॉ० श्रीओमप्रकाशजी वर्मा )

भारतीय संस्कृति प्रत्येक गृहस्थको यह सन्देश देती क्या समाजमें बढ़ती हुई इस दुष्प्रवृतिको रोकनेके है कि अतिथिको देवतुल्य समझो। सद्गृहस्थके लिये

अतिथि-सत्कार एक व्रत माना गया है। इस व्रतके सन्देश कुछ सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं ? प्रस्तुत

पालन करते समय मन इस भावनासे ओत-प्रोत रहता है कि अतिथिके रूपमें स्वयं भगवान् हमारा उद्धार करनेके

लिये आये हैं। सनातन परम्परामें गृहस्थके लिये प्रतिदिन

पंचमहायज्ञका विधान है, उनमेंसे एक है—मनुष्य यज्ञ,

जिसका अर्थ है अतिथि-सत्कार। शायद ही संसारकी

किसी अन्य संस्कृतिमें गृहस्थके लिये अतिथिको इतना

महत्त्वपूर्ण समझा गया है। भगवान् वेदव्यास, महात्मा विदुर, महर्षि वसिष्ठ,

मार्कण्डेय आदिने अतिथि-सत्कारके महत्त्वको विभिन्न भावोंमें समझाया है, जिसका सार यह है कि आये हुए

अतिथिको प्रेम-भरी दृष्टिसे देखें, उसके साथ मृदु भाषण करें, बैठनेके लिये आसन दें, शीतल जल पिलायें तथा

सामर्थ्यके अनुसार भोजन करायें। जब अतिथि जाने लगे कुछ दूरतक उसके साथ चलकर सम्मानपूर्वक विदा करें। दुर्भाग्यको बात है कि वर्तमान समयमें एकल-

परिवारकी प्रवृत्ति, व्यस्त जीवन-शैली, स्वार्थपरायणता,

खण्डित होते सामाजिक सम्बन्ध आदिके कारण अतिथि-सत्कारका महत्त्व लुप्त होता जा रहा है।

लिये हमारे शास्त्रोंमें अतिथि-सत्कारके लिये दिये गये है इस विषयपर शास्त्र और संतोंके कुछ कथन।

🛊 अतिथि-सेवा देव-सेवा ही है। उसके प्रसन्न होनेपर देवगण प्रसन्नतापूर्वक कल्याण करते हैं। 🔹 अतिथि साक्षात् पिनाकधारी शिवका स्वरूप होता है, अत: सब कुछ अर्पित करके भी अतिथि की पूजा करें।

🔹 जब विद्वान् और व्रती अतिथि घरपर आये तब गृहस्थको स्वयं उसकी अगुवाई करनी चाहिये। सेवकोंके ऊपर अतिथि-सेवाका कार्य नहीं छोडना चाहिये।

प्रसन्न होते हैं। 🔹 गृहस्थको चाहिये कि अतिथिकी निन्दा नहीं करे। अतिथि सुन्दर रूपवाला हो या कुरूप, मलिन हो या मूर्ख, उसका सदैव सत्कार करना चाहिये।

🔹 जिस घरसे अतिथि निराश होकर लौटता है, वह अतिथि उस गृहस्वामीको अपने पाप दे जाता है तथा गृहस्वामीके पुण्य ले जाता है।

🛊 अपने घरपर आते हुए बड़े या छोटेको देखकर जो छोटा बनकर नम्रता धारण करता है, वही बड़ा है।

🔹 जहाँ अतिथिका आदर होता है, वहाँ देवता

# काशीमें देवियोंके मन्दिर और उनकी यात्रा

# ( पं० श्रीशालिग्रामजी शर्मा )

जिस प्रकारका घनिष्ठ सम्बन्ध पिण्डाण्डका ब्रह्माण्डसे उल्लेख काशीखण्ड आदि प्राचीन ग्रन्थोंमें नहीं आया है। इस लघुकाय लेखमें हम प्राचीन मन्दिरोंका ही वर्णन

है, वैसा ही घनिष्ठ सम्बन्ध काशीका समस्त भारत-

वर्षसे है। हिन्दूधर्मके जितने तीर्थ हैं, जितने देवता हैं,

जितने मत हैं—वे सब-के-सब काशीमें येन केन

प्रकारेण अविकलरूपसे उपस्थित हैं। यद्यपि काशी त्रिपुरारि-राजनगरी है तथापि यहाँ सभी देवताओं के

मन्दिर हैं और वे सब यथासमय नित्य और नैमित्तिकरूपसे

अर्वाचीन मन्दिरोंमें भी अनेक मन्दिर बहुत अच्छे और प्रसिद्ध हैं। इनमें दशाश्वमेधकी कालीजी, संकटाघाटपर पीताम्बरा, पंचगंगाघाटपर गायत्री देवी, महाराजा अमेठीद्वारा

देनेवाले हैं। यहाँ इतना ही कह देना पर्याप्त है कि इन

स्थापित बालात्रिपुरसुन्दरी, रानी भवानीद्वारा स्थापित तारा

िभाग ९०

माने और पूजे जाते हैं। अत: इसमें कोई आश्चर्यकी बात देवी आदि विशेष उल्लेखके योग्य हैं। नहीं कि यहाँ देवियोंके अनेक प्राचीन और अर्वाचीन देवियोंके प्राचीन मन्दिर जितने काशीमें हैं, उन मन्दिर हैं। अर्वाचीन मन्दिर हम उन्हें कहते हैं, जिनका सबका यथोचित वर्णन बिना विस्तारके असम्भव है।

संख्या १०] काशीमें देवियोंके मन्दिर और उनकी यात्रा २१			
<u> </u>	*****************	*************	
संक्षेपसे हम नीचे देते हैं अन्पूर्णादेवी—यह है। यही महागौरीके नाम विश्वनाथजीके पास ही है हो किया जाता है तथापि दिन इनके दर्शनका विशेष प्रतिपदके दिन अन्नकूट— साथ मनाया जाता है। दर्श एकत्र हो जाती है। दुर्गादेवी—यह भी विश्वविद्यालयके मार्गपर पिक विशाल पक्का ताला प्रसिद्ध है। नवरात्रमें, श्रावा यहाँ मेला-सा लगा रहता	कुछ प्रधान-प्रधानका वर्णन काशीके सबसे प्रसिद्ध स्थानोंमें से प्रसिद्ध है। इनका मन्दिर । यों तो इनका दर्शन नित्य नवरात्रमें विशेषकर अष्टमीके माहात्म्य है। कार्तिक शुक्ल महोत्सव भी बड़े समारोहके कोंकों अपार भीड़ उस दिन स्थत है। मन्दिरके उत्तर ओर ब है, जो दुर्गाकुण्डके नामसे गमासमें तथा प्रति भौमवारको है। स्मीजीका मन्दिर लक्शाके	यहाँके तालाबके नामसे लक्ष्मीजीके मन्दिरके नी आश्विन कृष्ण अष्टमीत मेला होता है, जो सोर्रा अवसरपर बहुत-सी वस्तु पात्र यहाँके बहुत प्रसिद्ध चतुःषष्ठी—यह मदूसरे दिन यहाँ बड़ा मेला कहते हैं। समस्त नगरके इनके अतिरिक्त अं काशीमें विराजमान हैं; जै गौरी, लिलताघाटपर लिवशालाक्षी देवी इत्यादि।	न्दिर चौसट्ठी घाटपर है। होलीके होता है, उसको धुरड्डीका मेला त लोग उमड़ पड़ते हैं। र भी अनेक देवियोंके मन्दिर से लक्ष्मणबालाघाटपर मंगला– लितादेवी; धर्मकूपके समीप अब हम इनको छोड़कर कुछ हैं। यहाँकी देवीयात्राओंमें दो
<b>महालद्मा</b> —महाल	दमाणाका मान्दर राक्साक ————————————————————————————————————	नात्राए बहुत प्राप्तक ह-	
प्रतिमास करनी चाहिये। र स्थान नीचे दिये जाते हैं- नाम— (१) मुखनिर्मालिकागौरी (२) ज्येष्ठागौरी (३) सौभाग्यगौरी (४) शृंगारगौरी (५) विशालाक्षीगौरी (६) लिलतागौरी (७) भवानीगौरी (८) मंगलागौरी (९) महालक्ष्मी	यात्रा शुक्ल पक्ष द्वितीयाको नवगौरियोंके नाम और उनके स्थान— गायघाटके ऊपर हनुमान्जीके मन्दिरमें हैं। कर्णघण्टा महल्लेमें ज्येष्ठेश्वर महादेवके समीप। विश्वनाथजीके मन्दिरमें। विश्वनाथजीके मन्दिरमें। मीरघाटपर। लिलताघाटपर। कालिकागलीमें। लक्ष्मणबालाघाटपर। लक्ष्मीकुण्डपर।	क्रमसे की जाती है। नवों दिये जाते हैं— नाम— (१) शैलपुत्री (२) ब्रह्मचारिणी (३) चन्द्रघण्टा (४) कूष्माण्डदुर्गा (५) स्कन्दमाता (६) कात्यायनी (७) कालरात्रि (८) महागौरी	ह यात्रा नवरात्रके नौ दिनोंमें दुर्गाओंके नाम तथा स्थान नीचे स्थान— अलईपुर स्टेशनके उत्तर वरणा नदीके तटपर स्थित है। दुर्गाघाटपर। चौकके पूर्व एक गलीमें। दुर्गाकुण्डपर प्रसिद्ध दुर्गाजी। जैतपुराके समीप बाघेश्वरीके नामसे प्रसिद्ध हैं। संकटाघाटके पास आत्म- वीरेश्वरके मन्दिरमें। कालिकागलीमें। यही अन्नपूर्णाजीके नामसे प्रसिद्ध हैं। सिद्धमाताकी गलीमें अथवा सिद्धेश्वरीमहालमें।
इसके अतिरिक्त औ	र भी अनेक देवीयात्राएँ काशी	में हैं, किंतु वे इतनी प्रसि	गद्ध नहीं हैं।

महारसायन

## ( श्रीसीतारामदासजी ओंकारनाथ )

भर्जनं

'राम-राम सीताराम! मैं दिन-रात नाम-रसायन पान करना चाहता हूँ। मैं निश्चय कर चुका हूँ, कि नाम

लेनेसे सर्वार्थ-सिद्धि होगी। यह मेरा दृढ सिद्धान्त हो गया है कि मेरे-जैसे क्षुद्र जीवके लिये नामके अतिरिक्त

और कोई गित नहीं है। यही मार्ग मैंने पकडा है और इसी मार्गपर चल रहा हूँ। जिससे पथभ्रष्ट न हो जाऊँ,

इसीलिये मैंने शक्ति-प्रार्थना करना सीखा है। फिर भी

हे राम! मैं प्रतिक्षण नाममें तल्लीन नहीं रह सकता। न जाने मेरा कौन-सा कर्मफल मुझे नाम लेनेसे हटा देना

चाहता है। तुम कृपा करो-मुझे निरन्तर अपने नाममें डुबाये रखो। हे यदुनाथ! हे रघुनाथ! हे व्रजनाथ! हे सीतानाथ! हे दीननाथ! हे प्राणनाथ! ऐसा करो कि मैं

सदा-सर्वदा नाम लेकर रह सकूँ, मुझे अपना बना लो।' 'सर्वे नश्यन्ति ब्रह्माण्डे प्रभवन्ति पुनः पुनः। न मे भक्ताः प्रणश्यन्ति निःशङ्काश्च निरापदः॥ कोई डर नहीं है! मेरे भक्तका कभी नाश नहीं

होता। सब नाश हो जायगा, परंतु मेरा भक्त नि:शंक और निरापद अवस्थामें रहेगा। देखो, जीवको तभीतक सोचना पड़ता है जबतक कि वह दृढ़रूपसे मेरा आश्रय नहीं ले

लेता। मैं तुम्हारा हूँ —यह कहकर मेरे शरण आ जानेपर सदाके लिये सारी चिन्ताएँ समाप्त हो जाती हैं। एक बार निरुपाय होकर, मैं तुम्हारा हूँ, यह कहकर मेरे शरण

नाम लेते हुए मेरे पीछे-पीछे चले आओ। मेरे भक्त, मनुष्यकी तो बात ही क्या, यमराजतकका भी भय नहीं करता।

आनेपर मैं सब भूतोंको अभय देता हूँ। तुम क्यों डर रहे 'राम राम जय राम।' हो? तुम्हें किसी प्रकारका भय नहीं है। मैं तुम्हारे मार्गको साफ करता हुआ आगे-आगे चल रहा हूँ, तुम

हो, वह कछ भी नहीं रहेगा। रहेगा केवल नाम। अधिकसे क्या आवश्यकता ? अब आरम्भ करो।' 'ठीक है, यही करूँगा, तुम्हारा नाम ही लूँगा—

भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्।

चले आओ—राम-रामका गर्जन करते हुए तुम चले

तर्जनं यमद्तानां राम रामेति गर्जनम्॥

आओ। जिस कर्मबीजके कारण तुम्हारा पुन:-पुन: जन्म

होना नहीं बन्द होता है, वही कर्मबीज, राम-रामके गर्जनसे

जल जायगा, तुम्हारे न चाहनेपर भी राम-रामके गर्जनसे

संसारकी सुख-सम्पदा तुम्हारे पैरोंपर लोटने लगेगी और

क्या होगा जानते हो ? राम-रामके गर्जनसे यमदूतोंका भी

तिरस्कार होता है। वे राम-रामके गर्जनसे डरकर तुम्हारे

पास नहीं आ सकेंगे। तुम राम-राम भजो। केवल नाम

लो। नाम लो—चाहे अवहेलनासे लो, श्रद्धासे लो, भक्तिपूर्वक

लो, अभिक्तसे लो, खड़े-खड़े लो, बैठकर लो, लेटे हुए

लो, चलते हुए लो, भोजन करते हुए लो, सुखमें लो, दु:खमें लो, हर्षमें लो, विषादमें लो, अभावमें लो,

सम्पन्नावस्थामें लो, रोगमें लो, नीरोगमें लो, शोकमें लो,

विशोकमें लो, चंचलतामें लो, स्थिरतामें लो, स्वजनमें लो,

विजनमें लो, प्रकाशमें लो, अन्धकारमें लो, विक्षेपमें लो,

अविक्षेपमें लो, लयमें लो, अलयमें लो। बस, सब समय

सभी स्थितियोंमें रामका नाम लो। फिर अब जो द्वन्द्व देखते

निन्दन्तु बान्धवाः सर्वे त्यजन्तु स्त्रीसुतादयः। जना हसन्तु मां दृष्ट्वा राजानो दण्डयन्तु वा॥

सेवे सेवे पुनः सेवे त्वामेव परदेवते। त्वत्कर्म नैव मुञ्चामि मनोवाक्कायकर्मभिः॥

रघुपति राघव राजा राम। पतित पावन सीताराम॥

जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल । सो कृपाल मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल॥ जिनका नाम जन्म-मरणरूपी रोगकी [ अव्यर्थ] औषध और तीनों भयंकर पीडाओं ( आधिदैविक, आधिभौतिक

'भौंm अधाराति प्रान्ड उन्हें ) seो रहा नेतालु है। तहे क्षानुस्तानिक मिन्न अप्रान्ति एक प्रस्तानिक प्रान्ति ।

हिन्दु संस्कृतिमें जलके प्रति पुज्य भाव संख्या १० ] हिन्दू संस्कृतिमें जलके प्रति पूज्य भाव ( वैद्य श्रीबालकृष्णजी गोस्वामी ) 'अमृत' संज्ञाधारी जल पंचभूतोंका मुख्य घटक ततोऽपि सारसं पुण्यं तस्मान्नादेयमुच्यते। है। सम्पूर्ण सृष्टिकी उत्पत्ति एवं स्थिति जलसे ही सम्भव तीर्थतोयं ततः पुण्यं गाङ्गं पुण्यन्तु सर्वतः॥ है। हमारे शरीरका ७० प्रतिशत भाग जल ही है। भारतीय (अग्निपुराण १५५।५-६) धर्म एवं संस्कृतिमें प्रत्येक पर्व, उत्सव एवं अनुष्ठानमें जल महाभूतके गुण-कर्मींका आयुर्वेदके ग्रन्थोंमें निकटस्थ नदी, सरोवर एवं निर्झरमें स्नान करनेकी प्रथा निम्न रूपमें उल्लेख किया गया है-है। जलको पृथ्वीका प्रधान रत्न माना गया है— द्रवस्निग्धशीतमन्दमृद्पिच्छिलरसगुणबहुलान्याप्यानि, पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्। तान्युपक्लेदस्नेहबन्धविष्यन्दमार्दवप्रह्लादकराणि । मृढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते॥ (च० सूत्र० २६।११) अर्थात् 'पृथ्वीपर जल, अन्न एवं मीठी वाणी—ये आप्यास्तु—'रसो रसेन्द्रियं सर्वद्रवसमूहो गुरुता तीन ही रत्न हैं। मूढ़ व्यक्ति ही पत्थरके टुकड़ोंको रत्नके शैत्यं स्नेहो रेतश्च।' (सुश्रुत) नामसे पुकारते हैं।' इन कथनोंका तात्पर्य यह है कि जल महाभूत सनातन धर्ममें प्रत्येक कार्य करनेके पूर्व जलसे प्रधान द्रव्य शरीरमें द्रवत्व उत्पन्न करनेवाले. स्निग्ध, स्नान करनेका विधान है। सहस्र कार्य छोड़कर पहले शीत, मृदु, पिच्छिल, गुरु, खर, सान्द्र, स्तम्भ, किंचित् स्नान करनेका शास्त्रीय निर्देश है—'शतं विहाय भोक्तव्यं कषाय एवं लवणरसयुक्त, परंतु मुख्यत्वेन मधुर रसवाले तथा रस गुणवाले होते हैं। जलका उपयोग करनेसे सहस्त्रं स्नानमाचरेत्।' इसी प्रकार सन्ध्या, दान, देवपूजन, शरीरमें क्लेद, स्निग्धता, बन्ध, द्रवस्राव, मृदुता तथा पितृपूजन तथा अन्य कोई सत्कार्य करनेसे पूर्व आचमन करनेका विधान है। आचमनसे स्वयंकी शुद्धि तो होती शरीर, मन और इन्द्रियोंकी तुष्टि होती है। ही है साथ ही ब्रह्मासे लेकर तृणतक सभी तृप्ति प्राप्त वैशेषिकोंने जल महाभूतके दो रूप माने हैं-करते हैं— परमाणु रूप एवं स्थूल रूप। सांख्य दर्शनमें परमाणु रूपको तन्मात्रा एवं स्थूल रूपको महाभूत कहा गया है। एवं स ब्राह्मणो नित्यमुपस्पर्शनमाचरेत्। स्नानका महत्त्व शास्त्रोंमें अनेक स्थानोंपर प्रतिपादित ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं जगत् स परितर्पयेत्॥ किया गया है। स्नानसे रूप, तेज, बल, पवित्रता, आयु, स्नान एवं सन्ध्या आदि धार्मिक कार्योंके पूर्व आरोग्य, निर्लोभता, दु:स्वप्ननाश, तप और मेधा—ये संकल्प करना आवश्यक है। इस प्रक्रियामें जलको दायें दश गुण प्राप्त होते हैं-हाथमें लेकर संकल्प किया जाता है। वस्तृत: जलको गुणा दश स्नानपरस्य साधो! रूपं च तेजश्च बलं च शौचम्। देवता मानकर उसके साक्ष्यमें की गयी प्रतिज्ञा ही संकल्प आयुष्यमारोग्यमलोलुपत्वं दुःस्वप्ननाशश्च तपश्च मेधा॥ है। पवित्रताकी दृष्टिसे सापेक्षत: कुँएके जलसे झरनेका, स्नानान्तर सन्ध्या, देवतर्पण, ऋषितर्पण एवं पितृतर्पण झरनेके जलसे सरोवरका, सरोवरके जलसे नदीका, भी जलसे ही किये जाते हैं। महर्षि अत्रिने कहा है कि नदीके जलसे तीर्थका एवं गंगाका जल तो सबसे अधिक नित्य सन्ध्या करनेसे अज्ञानवश किये गये विकर्म नष्ट श्रेष्ठ होता है-हो जाते हैं। सन्ध्या करनेवाला पापरहित होकर सनातन ब्रह्मलोकको प्राप्त होता है। सन्ध्यामें पवित्रीकरणहेतु भूमिष्ठमुद्धृतात् पुण्यं ततः प्रस्रवणोदकम्।

मार्जन करते हुए निम्न मन्त्रका उच्चारण किया गया है— हिन्दू धर्मके ग्रन्थोंमें जलकी महिमाका विस्तृत ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः।ॐ ता न ऊर्जे दधातन। वर्णन उपलब्ध होता है। निम्न जलस्तुति भी पठनीय है— ॐ महे रणाय चक्षसे।ॐ यो वः शिवतमो रसः। शैत्यं नाम गुणस्तवैव सहजः स्वाभाविकी स्वच्छता किं ब्रूमः शुचितां भवन्ति शुचयः स्पर्शेन यस्यापरे। (यजुर्वेद ११।५०) इस वैदिक मन्त्रका भाव यह है कि 'हे जल! तुम वातः परमुच्यते स्तुतिपदं यज्जीवनं देहिनां त्वं चेन्नीचपथेन गच्छिस पयः कस्त्वां निरोद्धं क्षमः॥ ही सुखको प्रदान करनेवाले हो। वही तुम हम लोगोंको रसका उपभोग करनेके लिये समर्थ बना दो।' यजुर्वेदमें 'शीतलता तेरा नाम एवं जन्मजात गुण स्वाभाविक ही बहुत सुन्दर कामना की गयी है-स्वच्छता है। तेरी पवित्रताका तो कहना ही क्या? तेरे स्पर्शमात्रसे अन्य सभी पवित्र हो जाते हैं। इससे अधिक ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। और क्या कहें—क्योंकि तुम प्राणियोंके साक्षात् जीवन ही पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः। हो, अतः सभीके द्वारा वन्दनीय भी हो। हे जल! तुम यदि (यजुर्वेद २०।२०) निम्नगामी हो तब भी तुम्हें रोकनेमें कौन सक्षम है ?' अर्थात् पादुकासे अलग हुए की तरह, पसीनेसे भीगे हुए व्यक्तिके स्नान करनेसे मैलमुक्त होनेकी तरह, आयुर्वेदीय शास्त्रोंमें रोगनिवारक एवं बलकारक वस्त्रसे छानकर शुद्ध किये हुए घीकी तरह जल मुझे द्रव्योंकी सूचीमें वर्षाके जलका समावेश किया गया है। शुद्ध करे अर्थात् पापसे मुक्त करे। 'सर्वेषामनुपानानां तोयं माहेन्द्रमुत्तमम्' कहकर यह कात्यायनसूत्रमें भी जलकी महनीयता दृष्टिगत स्पष्ट किया है कि पानीय पदार्थों एवं औषधिके होती है-अनुपानरूपमें अन्तरिक्षका जल सर्वोत्तम होता है। चरकने हिमालयसे निकलनेवाले जलको पथ्य अर्थात् गुणकारी ॐ अन्तश्चरिस भूतेषु गुहायां विश्वतोमुख:। माना है, इसमें विशेषत: गंगाजलका ही संकेत है। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥ अर्थात् हे जलदेवता! तुम समस्त प्राणियोंके भीतर अठारहवीं शताब्दीके एक हस्तलिखित ग्रन्थमें गंगाजलके हृदयमें विचरते हो। तुम्हारा मुँह सब तरफ है। तुम ही गुणोंका सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है—

गीतामें भगवान् स्वयं जलसे प्रसन्नताकी अनुभूति करते हैं-पत्रं पृष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥

यज्ञ, हविष्य, द्रव, प्रकाश एवं अमृत हो।

(गीता ९।२६) 'जो कोई भक्त मेरे लिये प्रेमसे पत्र, पुष्प, फल,

जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध अन्त:करणवाले भक्तका प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ पत्र-जल आदि मैं

सगुण रूपमें प्रकट होकर प्रीतिसहित ग्रहण करता हूँ।'

उदाहरणके रूपमें प्रस्तुत किया जा सकता है।

यहाँ विदुर, सुदामा, द्रौपदी, शबरी, रन्तिदेव आदिको

एवं बुद्धिवर्धक होता है।

इस प्रकार हिन्दू संस्कृतिमें जलका महत्त्व अतुलनीय है। सनातन धर्मकी जलसे घनिष्ठता चिरंतन एवं नैत्यिक

शीतं स्वादु स्वच्छमत्यन्तरूच्यं पथ्यं पाचनं पापहारि।

तृष्णामोहध्वंसनं दीपनं च प्रज्ञां धत्ते वारि भागीरथीयम्॥

कि गंगाका जल श्वेत, स्वादु, स्वच्छ, अत्यन्त रुचिकर,

पथ्य, भोजन पकानेयोग्य, पाचनशक्ति बढ़ानेवाला, सब

पापोंको हरनेवाला, तृष्णानाशक, मोहनिवारक, अग्निदीपक

'भोजनकुतृहल' नामक उस ग्रन्थमें कहा गया है

है। इसी कारण संस्कृत भाषामें जलको अमृत, पय, जीवन, भुवन, पुष्कर, सर्वतोमुख, क्षीर, नीर, तोय आदि नामोंसे सम्बोधित किया गया है।

िभाग ९०

भगवद्गीता-विज्ञान संख्या १० ] भगवद्गीता-विज्ञान [ भगवद्गीताके वैज्ञानिक स्वरूपको बताता आलेख] ( श्रीसुमितचन्द्रजी श्रीवास्तव, एम० एस-सी० ) इस सृष्टिमें तीन सबसे रहस्यमय घटनाएँ हैं-है, पर नष्ट नहीं होती। ऊष्मागतिकीका ये नियम जीवन, जीवनकी उत्पत्ति और जीवनकी मृत्यु। इन तीन ऊर्जाके सभी रूपोंके लिये लागू होता है। ये विभिन्न रूप घटनाओंको विज्ञान आजतक नहीं बता पाया। जीवन हैं गतिज ऊर्जा, स्थितिज ऊर्जा, वैद्युत ऊर्जा आदि। और जीवनकी उत्पत्तिके विषयमें कुछ मत तो हैं, पर आत्मा नाम सुनकर बहुत लोगोंको डर लगता है, मृत्युके विषयमें कुछ भी नहीं है; क्योंकि विज्ञानकी कुछ पर ये भी ऊर्जाका एक रूप है, जो हमें निर्जीव चीजोंसे सीमाएँ हैं, जैसे न तैरना जाननेवालेकी सीमा नाव ही है, अलग करता है। इसी ऊर्जासे हम जीवित हैं, ये नहीं वह नदीमें नहीं जा सकता। तो हम निर्जीव, जैसे एक खिलौनेसे सेल या बैटरी विज्ञानकी सीमाओंको तोड़ती है 'भगवद्गीता' जो निकाल दें तो वह नहीं चलेगा; क्योंकि उसकी ऊर्जाका लगभग प्रत्येक हिन्दु घरके पुजागृहमें होती है और स्रोत निकल जाता है। अत: आत्मा एक ऊर्जा है और पूजा-योग्य मानी जाती है, पर क्या ये केवल हिन्दुओं के इसी ऊर्जाके संरक्षणका नियम श्रीकृष्णने दिया 'आत्मा लिये है ? नहीं, ये प्रत्येक मानवके लिये है। किसी भी (ऊर्जा)-को न अग्नि जला सकती है, न जल गला मानवके जीवनका स्वरूप क्या होना चाहिये बताती है— सकता है, न वायु सुखा सकती है अर्थात् ऊर्जाको नष्ट नहीं किया जा सकता। ये केवल शरीर बदलती है भगवदुगीता। अर्थात् स्वरूप बदलती है। ऊपर ऊष्मागतिकीके प्रथम मनुष्यकी बुद्धिकी सीमा है। वह बड़े एवं छोटे और शुरू और अन्तके बीच ही सब कुछ समझती है, नियमपर दृष्टि डालिये, क्या ये दोनों नियम एक नहीं? इसलिये इन्हींके बीच विज्ञान समाया है। मृत्युके बाद अवश्य एक हैं फिर भी श्रीकृष्णके इस नियमको भौतिक क्या होता है, नया जन्म कैसे होता है—ये सब बातें हमें विज्ञानमें स्थान प्राप्त नहीं। बुद्धिकी क्षमता और सीमा बढाकर ही पता चलेंगी, परंतु ऊष्मागतिकीका द्वितीय नियम कहता है कि प्रत्येक जो बातें बुद्धिकी सीमाके अन्दर हैं, उन्हें विज्ञानकी तन्त्र ऊर्जा मुक्त करता है ताकि वह सन्तुलित अवस्थामें कसौटीपर कसा जा सकता है। सचमुच ये चौंकानेवाली आ जाय। तन्त्रसे तात्पर्य उस व्यवस्थासे है, जिसमें बात है कि जो नियम भौतिक विज्ञानकी जड़ है, उसे प्रत्येक भाग मिलकर कार्य करते हैं। जैसे हमारा शरीर एक तन्त्र है, कम्प्यूटर एक तन्त्र है, ये ब्रह्माण्ड भी एक श्रीकृष्णने तर्कसंगत रूपसे ५ हजार साल पहले बताया था और उसे हम भौतिक विज्ञानमें ऊष्मागतिकीका तन्त्र है। नियम कहते हैं। ऊष्मागतिकीके नियमको गीताके ऊष्मागतिकीका द्वितीय नियम यही कहता है कि ज्ञानकी कसौटीपर कसते हैं तो जो तथ्य प्राप्त होते हैं, प्रत्येक तन्त्र जितनी ज्यादा ऊर्जा मुक्त करता है, उतनी वे ये हैं-ही स्थायी अवस्थामें आता है और इसीके साथ ही ऊष्मागतिकीका प्रथम नियम ऊर्जा संरक्षणका तन्त्रमें लचीलापन आता है। नियम है और श्रीकृष्णका आत्माकी अमरताका नियम ऊष्मागतिकीका द्वितीय नियम और श्रीकृष्णका भी यही कहता है। ऊष्मागतिकीका प्रथम नियम कहता कर्मका नियम। श्रीकृष्णने गीतामें कहा है निष्काम है कि 'ऊर्जा न तो उत्पन्न की जा सकती है और न कर्मद्वारा ही मुक्ति प्राप्त होती है और जीवन सार्थक होता है और इसीको आगे कहा शरीरका प्रथम कर्तव्य ही ही नष्ट। ये केवल स्वरूप बदलती है।' जैसे पंखेमें वैद्युत ऊर्जा गतिज ऊर्जामें परिवर्तित होकर हमें हवा देती कर्म करना है।

अर्थात् ये शरीर (एक तन्त्र) ऊर्जा मुक्त करके बताया गया कर्म अपने लाभके लिये नहीं, अपितु (अर्थात् कर्म करके; क्योंकि ऊर्जा मुक्त करके ही कर्म निष्काम कर्म है। निष्काम कर्म करनेसे ही उपर्युक्त किया जा सकता है) सन्तुलित अवस्था (मोक्ष या अवस्थाकी प्राप्ति होती है। मुक्ति) प्राप्त कर सकता है अर्थात् ऊष्मागतिकीका हम इस प्रकृतिका एक भाग हैं और इसके विरुद्ध द्वितीय नियम भी श्रीकृष्णका दिया हुआ है। क्या फर्क हम कुछ भी करें, हमें सन्तुलित अवस्था प्राप्त नहीं हो पड़ता है कि वे ऊर्जा मुक्त करना कहें या कर्म करना, सकती। सूर्यकी ऊर्जा हो या बादलोंकी वर्षा, वे अपनी सन्तुलित अवस्था कहें या मोक्ष; जैसे हम साइंसको ऊर्जाका प्रयोग बिना भेदभावके समाजके कल्याण एवं विज्ञान कहते हैं अर्थ तो वही होता है। पोषणके लिये करते हैं। प्रकृतिका भाग होनेके कारण इस विश्लेषणसे बहुत-से लोग सोचेंगे कि मैं रोज जब हम उसीकी तरह अपनी ऊर्जा या कर्मका प्रयोग इतनी चोरियाँ करता हूँ, उतना लूटता हूँ, इतना कत्ल समाजके कल्याणके लिये करते हैं तभी हमारे तन्त्र और करता हूँ, ये भी कर्म हैं; मेरे भी शरीरको और उससे उससे जुड़ी आत्माको स्थायी अवस्था या मोक्ष प्राप्त हो जुड़े आत्माके तन्त्रको सन्तुलित अवस्था या मोक्ष प्राप्त सकता है और इसीको विज्ञान ऊष्मागतिकीका द्वितीय होगा; परंतु ऐसा नहीं है; क्योंकि भगवान् श्रीकृष्णद्वारा नियम कहता है और श्रीकृष्ण गीतामें निष्काम कर्म।

# सरलता और आनन्द

( पं० श्रीलालजीरामजी शुक्ल एम०ए० )

उसके ऊपर सवार होते थे। इस प्रकार अलफ्रेड बच्चोंके होगी। मनुष्य अपने साधारण व्यवहारमें कपट-छलसे Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Sha साथ असीम आनन्दका उपभाग करता था। जो अनन्द प्रारित रहता है। हमारी आत्मा इस प्रकारक अनुभवास

सरलता ही आनन्दका मूल स्रोत है। सरलता ही शक्तिका केन्द्र है। सरलता भगवान्को प्यारी है। जैसे-

जैसे बालक चत्र होता जाता है, निजानन्दको खोता जाता है। आनन्दपूर्वक जीवित रहनेके लिये प्रत्येक व्यक्तिको बालभाव प्राप्त करना तथा बालकोंमें मिलना

आवश्यक है। बच्चोंसे हरेक व्यक्ति प्रसन्न रहता है। बडे-बडे सांसारिक जटिल कार्य करनेवाले लोग, जिनका उत्तरदायित्व असीम रहता है, अपना थोडा-सा समय बच्चोंके साथ व्यतीत करनेमें अपना सौभाग्य समझते हैं।

बच्चे उनमें नवजीवनका संचार कर देते हैं। इंग्लैण्डके राजा अलफ्रेडके बारेमें यह कथा

प्रसिद्ध है कि वह किसी-किसी दिन गुप्तरूपसे अपना

राज्यका कार्य छोडकर एक गरीब बृढियाके यहाँ चला जाता था। उसकी संरक्षकतामें दो शिशु रहते थे, राजा उन बालकोंके साथ खेलता था। उनके आनन्द-विनोदको बढाता था। कभी-कभी अलफ्रेड स्वयं घोडा

बनकर पैरों और हाथोंसे चलने लगता था और बच्चे

कोई बौद्धिक उत्तर देना कठिन है। यह हमारे अव्यक्त मनकी प्रेरणा है। अज्ञातरूपसे वह हमें सरलता और स्फूर्तिकी ओर ले जाती है। बालकमें सरलता, स्फूर्ति और आनन्द भरपूर होता है। बस, यही वस्तुएँ हमें उसकी ओर खींच

बच्चोंकी संगतिमें उसको सुलभ हो गया।

राज्यका इतना बड़ा अधिकार प्राप्त करनेमें नहीं था, वही

लेती हैं। हमारा सहज स्वरूप सरलता, स्फूर्ति और आनन्दमय

है। बालक हमें अपने स्वरूपका स्मरण करा देते हैं। उसी

बच्चोंकी ओर हम आकर्षित क्यों होते हैं ? इसका

िभाग ९०

असीम आनन्दकी ओर हमें ले जाते हैं। महात्मा ईसाने कहा है—'जबतक तुम बच्चे-जैसे नहीं बन जाओगे, तबतक परमात्माकी प्राप्ति कभी नहीं होगी।' हमारा सांसारिक जीवन निरानन्दमय होता है।

अतएव वह हमें आत्मस्थितिमें अथवा आत्मानन्दसे दूर ही ले जाता है। बालककी संगति यदि बोधपूर्वक की जाय तो वह अवश्य परमानन्द और आत्मज्ञान प्राप्त करनेमें सहायक

सूडानमें गोमाताकी पूजा-अर्चना संख्या १० ] पीड़ित हो उठती है। हम सचाईको ढूँढ़ना चाहते हैं। और सद्व्यवहार तत्त्वज्ञानियोंका। वास्तवमें तीनों गुण असत् व्यवहार बालकके स्वभावके प्रतिकृल है। बालकका एक ही तत्त्वके भिन्न-भिन्न नाम हैं। जीवन सद्भावनामय होता है, अतएव उसका दर्शनमात्र मनुष्य चतुर बनकर कुछ भी स्थायी लाभ प्राप्त मनुष्यको पवित्र करता है। नहीं कर पाता। चतुर मनुष्य सांसारिक व्यवहारमें कुशल हम अपने मित्रों और संसारके व्यक्तियोंमें जो बहुत होता है, किंतु वह आत्मज्ञानसे वंचित रहता है। इस प्रकारके मनुष्यसे उसके आसपास रहनेवाले लोग भयातुर शिष्टाचार पाते हैं। वह प्राय: छलमय होता है। हम स्वयं इसी प्रकारका छलमय व्यवहार संसारमें करते हैं। अवश्य रहते हैं, किंतु वह प्रेमका पात्र नहीं हो पाता। ऐसे मनुष्यके हृदयमें किंचिन्मात्र भी आनन्द नहीं रहता। इसी प्रकारके व्यवहारसे हमारा हृदय आक्रान्त हो उठता वह जहाँ जाता है, वहीं अपने आसपासके व्यक्तियोंमें है। बालकके हृदयमें कपट-व्यवहारके लिये स्थान नहीं। अतएव वह सदा आनन्दसमुद्रमें निमग्न रहता है। शंका, भय और चिन्ताका संसार निर्माण कर देता है। मनुष्यकी सभ्यताका दूसरा नाम छल है। सभ्यता जिस तरह बालक अपनी सरलतासे आसपासके लोगोंको कपट-व्यवहारका विकसित रूप है। रूसो महाशयने अपने सन्तुष्ट करता है, जिस प्रकार एक-एक खिला हुआ एक लेखमें यही दिखलाया है कि जैसे-जैसे सभ्यता फूल देखनेवालोंके मनको खिला देता है, उसी प्रकार बढ़ती जाती है, मनुष्यके सदाचारका नाश होता है। जो सरल स्वभाववाला आदमी सदा अपने-आप प्रसन्न मनुष्य जितना सभ्य और शिष्ट कहलाता है, वह प्राय: रहता है और उस प्रसन्नताका दान दूसरोंको भी दिया उतना ही असद्व्यवहार करनेवाला और धूर्त होता है। करता है। इसके विपरीत चतुर मनुष्य दूसरे लोगोंको चतुर बनाता है और इस तरह उनके हृदयको संकुचित रूसोका दृष्टिकोण महात्माओं, कवियों और और कपटसे कलुषित कर देता है। अंगरेजीमें एक तत्त्वज्ञानियोंका दृष्टिकोण है। कवि सरल-हृदय होता है। कविता गंगाजीकी पवित्र धाराके समान कविके कहावत है—'स्वास्थ्य उतना ही संक्रामक है, जितनी कि बीमारी।' बीमार आदमी सबमें बीमारी फैलाता है और हृदयरूपी स्वच्छ मानसरोवरसे निकलती है। कविता दलदलकी उपज नहीं, संसारके आघात-प्रतिघातसे विकृत स्वस्थ मनुष्य स्वास्थ्य। इसी तरह जिस मनुष्यका जीवन बुद्धि कविताका उद्गमस्थान नहीं बन सकती। सरलता, संसारमय है, वह अपने सम्पर्कसे दूसरोंको संसारी बनाता है और जिसका जीवन परमार्थमें लगा हुआ है, वह सहानुभूति और सद्व्यवहार—सबका स्रोत एक है। सरलता महात्माओंका गुण है, सहानुभूति कवियोंका दुसरोंके मनमें भी परमार्थकी भावनाको दृढ करता है। – स्रडानमें गोमाताकी पूजा-अर्चना – दक्षिणी सूडानकी मुंदारी प्रजातिके आदिवासी गाय और बैलोंसे बहुत प्यार करते हैं और उन्हें अपने परिवारका हिस्सा मानते हैं। गायकी पूजा करते हैं और उन्हें अपने परिवारका हिस्सा मानते हैं। गायकी पूजा करना और उनकी देखभाल करना ही उनका एकमात्र काम है। मुंदारी जनजातिके लोग गोमूत्रसे नहाते हैं, क्योंकि उन लोगोंका मानना है कि ऐसा करनेसे उनके शरीरमें

कोई रोग नहीं होता। साथ ही त्वचा हल्के नारंगी रंगकी हो जाती है जो कि उनके लिये अच्छा है। यहाँ गायकी पूजा करते हैं। उनका मानना है कि गाय ही उनके जीवनको बचा सकती है। वे बैलोंसे खेती करते

गायका पूजा करत है। उनका मानना है कि गाय हा उनके जावनका बचा सकता है। व बलास खता करत हैं। उन्होंने अपनी गायोंकी नस्लमें कोई बदलाव नहीं होने दिया है।

[साभार—नागरिक टाइम्स, लखनऊ]

भक्त श्रीगणेश योगीन्द्र संत-चरित— ( पं० श्रीदामोदर प्रह्लादजी पाठक, शास्त्री ) वर्तमान गाणपत्य सम्प्रदायके अनुयायियोंके मूलपुरुष यही पुत्र श्रीगणेश योगीन्द्राचार्यके नामसे प्रख्यात हुआ। एवं गुरुतुल्य विप्रवर गणेश योगीन्द्र ही हैं। ये महात्मा श्रीगणेश परम ज्ञान-पिपासु थे। उपनयनके अनन्तर

[भाग ९०

उन्होंने सर्वप्रथम अपने पिता और फिर विनायकशास्त्री-प्रख्यात मुद्गलमुनिके अवतार माने जाते हैं। इनके पवित्र वंशमें प्राय: सभी उद्भट विद्वान् और नामक गुरुके चरणोंमें बैठकर वेदादि शास्त्रोंका ज्ञान गाणपत्य थे। इनके पितामह विप्र सोमनाथ गुजरातमें प्राप्त किया। इसके अनन्तर उन्होंने प्रसिद्ध विद्वानोंके पास जाकर बड़े परिश्रमसे षट्शास्त्र, स्मृति, इतिहास, पुराण, ज्यौतिष और योग आदि समस्त शास्त्रोंका सविधि अध्ययन कर लिया। घर लौटनेतक उनके हेरम्ब नामक एक अनुज भी हो गया था।

सोरटी सोमनाथके आंबी-नामक गाँवमें रहते थे। सोमनाथ विद्वान्, धर्मात्मा एवं तेजस्वी ब्राह्मण थे। इनकी सहधर्मिणी उमादेवी भी पतिपरायणा एवं धर्मानुरागिणी थीं। इनके चिन्तामणि और मोरेश्वर नामक दो सुयोग्य पुत्र उत्पन्न हुए। दोनों पुत्र वेद-शास्त्रोंके विद्वान् थे। एक दिन स्वप्नमें धर्मात्मा सोमनाथसे शृंगेरीमठकी अधिष्ठात्री देवी शारदाने कहा—'शृंगेरीमठके यति मरणासन्न हैं। उक्त पदका दायित्व सँभालनेके लिये तुम अपने ज्येष्ठ पुत्र चिन्तामणिको वहाँ भेज दो।' सोमनाथ पत्नी और पुत्रोंसहित शृंगेरी पहुँचे। वहाँ पीठस्थ यति नृसिंहाश्रमाचार्यने भी ऐसा ही स्वप्न देखा था। उन्होंने ब्राह्मण सोमनाथात्मज चिन्तामणिको संन्यासकी दीक्षा देकर उन्हें उक्त पवित्र पीठपर नियुक्त कर दिया। सोमनाथ अपनी सहधर्मिणी और पुत्र मोरेश्वरके साथ आम्बी लौट आये। मोरेश्वर सविधि गृहस्थ हुए, किंतु अधिक दिन व्यतीत होनेपर भी उनके कोई संतान नहीं हुई। पौत्र-मुख देखे बिना ही सोमनाथ और उनकी पत्नी उमादेवीका यथासमय शरीरान्त हो गया।

आचार्यपीठस्थ चिन्तामणि आचार्यने अद्वैतसिद्धान्तकी स्थापनामें सहयोग प्राप्त करनेके लिये विद्वान् मोरेश्वरको शृंगेरी बुलाया। मोरेश्वरने उनकी आज्ञाका पालन किया। उन्होंने विरुद्ध मतोंका खण्डनकर चिन्तामणि योगीन्द्राचार्यकी बड़ी सहायता की। तदनन्तर वे आम्बी लौट आये। विद्वान् मोरेश्वर वंश-परम्पराकी रक्षाके लिये चिन्तित थे। वे सपत्नीक महाराष्ट्रके जाग्रत् गणेश-पीठ मोरगाँव जाकर मयूरेश्वरकी उपासना करने लगे। एक मासतक

लिये आप मुझपर दया कीजिये।' गणेश-भक्त पिताने पुत्रकी पवित्र कामनासे प्रसन्न होकर पहले तो उससे आवश्यक शास्त्रोक्त तपश्चर्या करवायी, तदनन्तर उसे श्रीगणेश-मन्त्रकी दीक्षा दे दी। श्रीगणेश-मन्त्र प्राप्त हो जानेपर गणेशने सविधि अनुष्ठान प्रारम्भ किया। उनकी श्रद्धा-भक्तिसे प्रसन्न होकर गजमुखने प्रकट होकर कहा—'वर माँगो।' परम भक्त गणेशने अपने आराध्य गजवक्त्रसे याचना की—'मुझे आपके चरणोंकी सुदृढ भक्ति प्राप्त हो।' (मुद्गलमुनिने भी भगवान् गणेशके सम्मुख यही इच्छा व्यक्त की थी।) परमप्रभु गजाननने कहा—'आर्यधरापर गणेश-मार्ग लुप्तप्राय है। तुम उक्त भक्ति-योगप्रधान मार्गकी स्थापना करो। तुम शृंगेरी जाकर अपने ज्येष्ठ पितृव्य चिन्तामणि योगीन्द्रसे संन्यासकी दीक्षा लेकर पुनः इस भूस्वानन्द-क्षेत्रमें मेरे समीप आकर अनवरतरूपमें लोकोद्धारका कार्य करते रहो।' निरन्तर उपासनाकर वे पुन: आम्बी आ गये। भगवान् भगवान् मयूरेश्वरने अपना प्रसाद-मोदक भक्त मयुरेश्वरके अनुग्रहसे उनकी धर्मपत्नीने श्रावणशुक्ल ५ गणेशके मस्तकपर रखा और अदृश्य हो गये। उक्त शकाब्द १४९९ में पुत्र-प्रसव किया। शृंगेरीपीठस्थ आचार्य दुर्लभतम प्रसादके ग्रहण करते ही भक्त गणेशका सम्पूर्ण शरीर अत्यन्त कान्तिमान् हो गया। चिन्तामणिके अनुज गणेशोपासक विद्वान पं० मोरेश्वरका

समस्त शास्त्रोंके प्रकाण्ड विद्वान् श्रीगणेश विद्यासे

तृप्त नहीं थे। उन्होंने अपने पिताके चरणोंपर मस्तक

रखकर अत्यन्त श्रद्धापूर्वक विनीत वाणीमें निवेदन

किया—'पिताजी! आपने स्वानन्द-गणेशकी कृपाका जो

अलौकिक आनन्द प्राप्त किया, उस आनन्दकी प्राप्तिके

संख्या १०] भक्त श्रीग	णेश योगीन्द्र २९
***********************************	********************
माता-पिताकी आज्ञा प्राप्तकर गणेश शृंगेरी पहुँचे।	बात है ? गाणपत्योंको 'मौद्गलपुराण'का नित्य-पाठ
उन्होंने अपने ज्येष्ठ पितृव्यको सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया।	आवश्यक है। मेरे पास तो यह सम्पूर्ण 'मुद्गलपुराण' है।'
उन्होंने कहा—'मुझे भी सुरेन्द्रपाद योगीन्द्रसे यही आज्ञा	अत्यन्त व्याकुलतासे श्रीगणेश योगीन्द्रने कहा—
प्राप्त हुई है।' उन्होंने गणेशको संन्यासकी दीक्षा दे दी	'मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि आपके मनुष्य-वेषमें मेरे
और उनका नामकरण किया—'गणेश योगीन्द्र।'	यहाँ साक्षात् भगवान् गणेश ही पधारे हैं। इस ग्रन्थके
श्रीगणेश योगीन्द्र मोरगाँव आकर मयूरेश्वरके पीछे	लिये मैं दीर्घकालसे आकुल हूँ। यदि आप कुछ समयके
एक अहातेमें रहते हुए श्रीगणेशोपासनाके साथ लोकोद्धारके	लिये मुझे इसे दे देनेकी कृपा करें तो मैं इसकी
शुभ कार्यमें जुट गये। किंतु उनके मनकी एक कामना	प्रतिलिपिकर शीघ्र ही इसे आपको लौटा दूँगा।'
उत्तरोत्तर तीव्र होती गयी—'साक्षात् स्वानन्द गणेशने	ब्राह्मणने उत्तर दिया—'गणेश–भक्तोंका वचन कैसे
मुद्गलऋषिको जो शतोपनिषद्-ज्ञान प्रदान किया, वह	टाला जा सकता है ? मैं प्रत्येक चतुर्थीको इसका एक-
उपनिषत्पुराण कहाँ मिलेगा ?' एतदर्थ श्रीगणेश योगीन्द्र	एक खण्ड आपको देता जाऊँगा। इस प्रकार मुझे
भारत–भ्रमण करने लगे। उक्त प्राचीन ग्रन्थके जहाँ प्राप्त	भगवद्दर्शनका लाभ प्राप्त होता रहेगा और आपकी
होनेकी सूचना मिली, वहीं वे गये। इसके लिये उन्होंने	लालसाकी पूर्ति भी हो जायगी।'
काशीमें भी अधिक समयतक निवास किया; किंतु ग्रन्थ	ब्राह्मण देवता 'मुद्गलपुराण'का उक्त प्रथम खण्ड
कहीं प्राप्त नहीं हुआ। विवशत: वे मोरगाँव जाकर अपने	श्रीगणेश योगीन्द्रको देकर चले गये। इसी प्रकार वे प्रत्येक
आराध्यदेव प्रभु मयूरेश्वरसे करुण-प्रार्थना करने लगे।	चतुर्थीको एक खण्ड श्रीस्वामीजीको दे देते और श्रीस्वामीजी
एक दिन श्रीगणेश योगीन्द्रके समीप एक ब्राह्मण	उसकी प्रतिलिपि करके ठीक दूसरी चतुर्थीको उन्हें लौटा
देवताने आकर कहा—'आप कृपापूर्वक कुछ देरके लिये	देते। इस प्रकार उन्होंने सम्पूर्ण 'मुद्गलपुराण' लिख लिया।
मेरी यह पोथी अपने पास रख लीजिये। मैं अभी स्नान	उसी ब्राह्मणसे प्राप्त कारिकासहित 'मौद्गलादेश'का
करके लौटता हूँ।' ब्राह्मण देवता स्नान करके लौटे। उन्होंने	लेखन श्रीगणेश योगीन्द्रने चतुर्थीसे नवमीतक छ: दिनोंमें
सन्ध्या-वन्दनादिके पश्चात् उक्त ग्रन्थका पाठ करना प्रारम्भ	ही पूरा कर लिया। ब्राह्मण देवता तो आगामी चतुर्थीतक
किया। अत्यन्त तेजस्वी, पर सर्वथा सरल ब्राह्मणको देखते	पधारेंगे, यह सोचकर श्रीगणेश योगीन्द्रने उसके शुद्धाशुद्धको
ही श्रीगणेश योगीन्द्रका मन उनकी ओर आकृष्ट हो गया।	देखनेका विचार किया; किंतु ठीक उसी समय ब्राह्मण
वे ब्राह्मणकी प्रत्येक क्रिया ध्यानपूर्वक देख रहे थे। ब्राह्मणने	देवताने आकर कहा—'मौद्गलादेश दीजिये।'
पाठ-समाप्तिके अनन्तर श्रीगणेश योगीन्द्रके चरणोंमें साष्टांग	आश्चर्यचिकत होकर श्रीगणेश योगीन्द्रने ब्राह्मणसे
प्रणाम किया। श्रीगणेश योगीन्द्रने ब्राह्मणसे पूछा—'आप	पूछा—'आप निर्धारित समयसे पूर्व ही कैसे पधारे ? मैंने
किस ग्रन्थका पाठ कर रहे थे?'	प्रतिलिपि पूरी कर ली, यह आपको कैसे विदित हुआ?'
ब्राह्मणने अत्यन्त विनयपूर्वक उत्तर दिया—'स्वामिन्!	ब्राह्मणने उत्तर दिया—'इस क्षेत्रमें मेरा एक भाई
यह 'मौद्गलपुराण'का प्रथम खण्ड है। इसका प्रतिदिन	
पाठ करनेका नियम होनेसे मैं प्रवासमें भी इसे अपने पास	'आपका भाई? महागणेश? वे इसी क्षेत्रमें रहते
रखता हूँ।'	हैं और आजतक मैं उन्हें नहीं जान सका? चलिये, मैं
'मौद्गल'! नाम कानमें पड़ते ही गणेश योगीन्द्रकी	3,
विचित्र दशा हो गयी। उनके नेत्र भर आये। 'मैं इसी	ब्राह्मणका हाथ पकड़कर उनके साथ चल पड़े। ब्राह्मण
ग्रन्थ-रत्नके लिये सर्वत्र भटक आया।'—गद्गद् कण्ठसे	•
श्रीगणेश योगीन्द्रने कहा—'यह ग्रन्थरत्न आपके पास	*
है, इस कारण आप निश्चय ही भाग्यवान् हैं।'	ही थे कि ब्राह्मण देवता अदृश्य हो गये।
ब्राह्मणने सहज भावसे कहा—'इसमें आश्चर्यकी क्या	श्रीगणेश योगीन्द्र उदास हो गये। वे सोचने लगे—

भाग ९० कल्याण \* 'कितनी करुणा है परमप्रभु गणेशमें! वे कृपापूर्वक स्वयं लिये दो मार्गींका निर्देश किया। एक तो शुद्ध गणेशयोगमार्ग मेरे यहाँ पधारे और मैं उन्हें पहचान भी नहीं सका; किंत् अर्थात् दीक्षाप्रधान वैदिक मार्ग। किंतु सर्वत्र मन्त्रसंकर मेरी कामना-पूर्तिके लिये उन्होंने स्वयं मुझे 'मौद्गलपुराण' होनेके कारण वैदिक-पथपर आरूढ़ होना कठिन प्रतीत एवं 'मौद्गलादेश' प्रदान करनेका अनुग्रह किया। यह हुआ, इस कारण उन्होंने उक्त मार्गके कुछ भागमें मन्त्रोपदेश सोचकर वे प्रसन्न भी हुए और आनन्दमग्न होकर उन्होंने अर्थात् भक्तियोगप्रधान भागका मिश्रणकर दूसरे भक्तियोग-उसी समय भगवान् मयूरेश्वरका गद्गद कण्ठसे स्तवन प्रधान मिश्रमार्गकी स्थापना की। इस प्रकार उनके द्वारा किया। वह 'विघ्नेशाष्टक स्तुति'के नामसे प्रसिद्ध है। सर्वसाधारणके लिये गणेशतत्त्वका पथ प्रशस्त हो गया। श्रीगणेश योगीन्द्रने 'मुद्गलपुराण' और 'कारिकासहित श्रीगणेश योगीन्द्रके कितने ही शिष्य थे, किंतु उनके मुद्गलादेश'-इन दोनों ग्रन्थोंपर भाष्य लिखा। इनके यति शिष्योंमें ये पाँच प्रमुख थे—सिद्धेश्वर, सुब्रह्मण्य, अतिरिक्त उन्होंने सर्वसारनिर्णय टीका, गाणकप्रस्थानत्रयी ढुण्ढिराज, कृष्णेन्द्र और राघवेन्द्र। इनमें सिद्धेश्वर श्रीगणेश भाष्य, गणेशपुराणान्तर्गत सहस्रनामका शुद्धिकरण और योगीन्द्रके देहावसानतक उनके पास ही थे। सुब्रह्मण्य दक्षिण भाष्य, गणेशपुराण-टिप्पणी, पातंजलसूत्रभाष्यपर शान्ति-भारतके विद्याधीशपुरमें गणेश महाक्षेत्रके योगीन्द्रमठमें भाष्य, व्यासके ब्रह्मसूत्रोंपर सिद्धान्तलेश नामक निबन्ध-गणेश-तत्त्वके प्रचार-प्रसारके लिये भेज दिये गये थे। ग्रन्थ और गणेशगीतापर योगेश्वरी नामक (ओवीबद्ध) ढुण्ढिराज काशी भेजे गये थे। कृष्णेन्द्रको श्रीगंगाजीके उत्तर-टीकाके द्वारा विशाल एवं समृद्ध वाङ्मय निर्माणकर भागमें निर्मित मठ-शाखामें तथा राघवेन्द्रको इसी पवित्रतम श्रीगणेशोपासकोंका मार्ग प्रशस्त कर दिया। कार्यके लिये हिमालय पर्वतके प्रदेशोंमें भेजा गया था। श्रीगणेश-तत्त्वज्ञानके प्रमुख उद्गाता, गणेश-वे प्रचारक भी अद्भुत थे। श्रीगणेशजीके १०८ क्षेत्रोंमें घूम-घूमकर आपने सर्वत्र गणेश-भक्तियोगका सम्प्रदायके प्रवर्तक, मुद्गलमुनिके अवतार श्रीगणेश प्रचार किया और इस शुभ कार्यमें उन्हें अकल्पित योगीन्द्रकी गुरु-परम्परा भी महागाणपत्योंकी है। (१) श्रीगौडपादाचार्य योगीन्द्र—ये गणेशाथर्वशीर्ष, माण्डुक्य सफलता भी प्राप्त हुई। श्रीगणेशजीके अनन्य भक्त श्रीगणेश योगीन्द्रने गणेश-गुरुपीठका उद्धार भी किया। उपनिषद्-भाष्यकार, महावाक्यदर्शनकर्ता एवं गणेश-श्रीगणेश योगीन्द्रके भाष्यसे सन्तुष्ट होकर महामुनि गीतासार ग्रन्थके लेखक थे। इनके शिष्य (२) श्रीमत् मुद्गलने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर आदेश दिया—'गणेश-शंकराचार्य योगीन्द्रने प्रस्थान-त्रयीपर भाष्य प्रस्तुत किया। मार्ग लुप्तप्राय हो गया है और शुद्ध शास्त्रीय उपासना इनके शिष्य (३) श्रीगिरिजासुत योगीन्द्र थे। इन्होंने गणेशाद्वैतसिद्धान्तकी स्थापना एवं श्रीक्षेत्र मयूरेश्वरके कहीं नहीं रह गयी है। इस प्रचलित पाषण्डका नाशकर गणेश-पथ-प्रदर्शित करनेके लिये तुम्हारा जन्म मेरे वंशमें महासिद्धपीठ नामक गणेश-गुरुस्थानादिके उद्धारके साथ हुआ है। तुम ब्रह्मानन्द योगीन्द्रकी शरण ग्रहणकर पूर्वके अनेक उपयोगी ग्रन्थोंकी रचना की। इनके शिष्य (४) धर्माचार्योंकी तरह अद्वैत मतकी स्थापनाके लिये कार्य करो।' श्रीब्रह्मानन्द योगीन्द्र हुए और इन्हींके शिष्य (५) महान् महामुनि मुद्गलके आज्ञानुसार श्रीगणेश योगीन्द्र गाणपत्य श्रीगणेश योगीन्द्र हए। ब्रह्मानन्द योगीन्द्रका शिष्यत्व स्वीकारकर भूस्वानन्द-स्वनामधन्य श्रीगणेश योगीन्द्रने शक सम्वत् १७२७ पीठका कार्य करने लगे। इस भूतलपर श्रीगणेश योगीन्द्र माघ कृष्ण १० (सन् १८०५ ई०)-के दिन समाधि ले ली। उनकी समाधि मोरगाँवमें करहा नदीके तटपर है। श्रीगणेश २२७ वर्षतक जीवित रहे। इतनी दीर्घायु प्राप्तकर उन्होंने महानु कार्य भी किया। उन्होंने जीवनके प्रथम शतकमें योगीन्द्रके मराठी-स्तवनकी एक पंक्ति इस प्रकार है-गणेशाद्वैत सिद्धान्त एवं द्वितीय शतकमें मिश्रमार्ग ॐ नमो गणेशपायांसी। जया नमनें सर्वांसी। (भक्तियोगप्रधान मार्ग)-की स्थापना की। सकलसिद्धि सरसासीं। पावनी अनंत॥ बौद्ध-धर्मके हीनयान और महायान—दो पन्थोंकी 'जिनके नमनसे समस्त सिद्धियाँ अनन्त कालतक तम्बाक्षीराष्ट्रेश्वत्योगोडेहर्वेतसण्डाक्रक्षक्रक्षक्रस्त्रहरः/श्वीडसमुद्धलेशवासम्बद्ध वोत्तीब्रैं DE WITTHAT वे उपयोगे में प्रेयरामयहात है।

आदर्श बी०ए० बहु संख्या १० ] प्रेरक कथा— आदर्श बी०ए० बहू (पं० श्रीरामनरेशजी त्रिपाठी) जिन्दगीवाला पूरा साहब मिलता; कहीं दहेज इतना माँगा बात न पुरानी है, न सुनी हुई कहानी है। कानसे ज्यादा आँखें जानती हैं। कहानीके सभी पात्र वास्तविक जाता कि रिश्वत न लेनेवाला जज दे नहीं सकता। कन्याके हैं; अतएव नाम बदलकर ही कहना होगा। पिताको जज, डिप्टी कमिश्नर, डिप्टी कलक्टर आदि शब्द एक रिटायर्ड जज हैं। कहा जाता है कि उन्होंने कितने महँगे पड़ते हैं; यह वे ही जान सकते हैं। कभी रिश्वत नहीं ली थी। धार्मिक विचारोंके सद्-गृहस्थ लक्ष्मीने बी०ए० पास कर लिया और अच्छी श्रेणीमें हैं। दावतोंमें, पार्टियोंमें, मित्रोंके यहाँ खान-पानमें वे चाहे पास किया। अब वह पिताके पास परायी थातीकी तरह हो जितने स्वतन्त्र रहे हों, पर घरके अन्दर रसोई-घरकी रूढियोंके गयी। अब उसे किसी नये घरमें बसा देना अनिवार्य हो गया। जज साहब वर खोजते-खोजते थक चुके थे और पालनमें न असावधानी करते थे, न होने देते थे। गृहिणी शिक्षिता हैं; सभा-सोसाइटियोंमें, दावतोंमें निराश होकर पूजा-पाठमें अधिक समय लगाने लगे थे। पतिके साथ खुलकर भाग लेती रही हैं; पर घरके अन्दर मनुष्यके जीवनमें कभी-कभी विचित्र घटनाएँ घट चुल्हेकी मर्यादाका वे पतिसे भी अधिक ध्यान रखती हैं। जाती हैं। क्या-से-क्या हो जाता है; कुछ पता नहीं चलता। तुलसीको प्रत्येक दिन सबेरे स्नान कराके जल चढ़ाना एक दिन शहरकी एक बड़ी सड़कपर जज साहब अपनी और सन्ध्या समय उसे धूप-दीप देना और उसके चबूतरेके कारमें बैठे थे। इंजनमें कुछ खराबी आ गयी थी, इससे वह चलता नहीं था। ड्राइवर बार-बार नीचे उतरता, इंजनके पास बैठकर कुछ देर श्रीरामचरितमानसका पाठ करना— यह उनका नियमित काम है, जो माता-पितासे विरासतकी पुरजे खोलता-कसता; तार मिलाता, पर कामयाब न होता। तरह मिला है और कभी छूट नहीं सकता। उसने कई साधारण श्रेणीके राह-चलतोंको कहा कि वे जज साहबके कोई पुत्र नहीं; एक कन्या है। कारको ढकेल दें, पर किसीने नहीं सुना। सूट-बूटवालोंको जिसका नाम लक्ष्मी है। माता-पिताकी एक ही संतान कहनेका उसे साहस ही नहीं हुआ। एक नवयुवक, जो बगलसे होनेके कारण उसे उनका पूर्ण स्नेह प्राप्त था। लक्ष्मीको ही जा रहा था और जिसे बुलानेकी ड्राइवरको हिम्मत भी भगवान्ने सुन्दर रूप दिया है। न होती, अपने-आप कारकी तरफ मुड़ पड़ा और उसने लक्ष्मीको खर्च-बर्चकी कमी नहीं थी। युनिवर्सिटीमें ड्राइवरको कहा—' मैं ढकेलता हूँ, तुम स्टेयरिंग पकड़ो।' पढ़नेवाली साथिनोंमें वह सबसे अधिक कीमती और ड्राइवरने कहा—'गाड़ी भारी है, एकके मानकी नहीं।' आकर्षक वेष-भूषामें रहा करती थी। वह स्वभावकी कोमल युवकने मुसकराकर कहा—देखो तो सही। थी, सुशील थी, घमण्डी नहीं थी। घरमें आती तो माँके ड्राइवर अपनी सीटपर बैठ गया। युवकने अकेले साथ मेमनेकी तरह पीछे-पीछे फिरा करती थी। माँकी ही गाड़ीको दूरतक ढकेल दिया। इंजन चलने लगा। इच्छासे वह तुलसीके चबूतरेके पास बैठकर तुलसीकी जज साहबने युवकको बुलाया, धन्यवाद दिया। पुजामें भी भाग लेती और माँसे अधिक देरतक बैठकर युवकका चेहरा तप्त कांचनकी तरह चमक रहा था। चेहरेकी मानसका पाठ भी किया करती थी। भारतीय संस्कृति और बनावट भी सुन्दर थी। जवानी अंग-अंगसे छलकी पड़ती युनिवर्सिटीकी रहन-सहनका यह अद्भुत मिश्रण था। थी। फिर भी पोशाक बहुत सादी थी—धोती, कुरता और जज साहबकी इच्छा थी कि लक्ष्मी बी०ए० पास चप्पल। चप्पल बहुत घिसी-घिसाई थी और धोती तथा कर ले, तब उसका विवाह करें। वे कई वर्षोंसे सुयोग्य कुरतेके कपड़े भी सस्ते किस्मके थे। फिर भी आँखोंकी वरकी खोजमें दौड़-धूप कर रहे थे। बी०ए० कन्याके ज्योति और चेहरेपर गम्भीर भावोंकी झलक देखकर जज लिये एम०ए० वर तो होना ही चाहिये; पर कहीं एम०ए० साहब उससे कुछ बात किये बिना रह नहीं सके। वर मिलता तो कुरूप मिलता; कहीं भयंकर खर्चीली इंजन चल रहा था, ड्राइवर आज्ञाकी प्रतीक्षामें था।

भाग ९० कल्याण जज साहबने युवकसे कहा—शायद आप भी इसी तरफ गाँव जाकर घरको ठीक-ठाक करा आऊँ, तब बहूको चल रहे हैं; आइये, बैठ लीजिये। रास्तेमें जहाँ चाहियेगा, ले जाऊँ। उतर जाइयेगा। युवक गाँव आया। गाँव दूसरे जिलेमें शहरसे बहुत युवक जज साहबकी बगलमें आकर बैठ गया। दूर था और पूरा देहात था। उसका घर भी एक टूटा-जज साहबने पूछ-ताछ की तो युवकने बताया कि वह फूटा खँडहर ही था। उसपर एक सड़ा-गला छप्पर रखा युनिवर्सिटीका छात्र है। अमुक जिलेके एक गरीब था। उसके नीचे उसका बुड्डा बाप दिन-भर बैठे-बैठे कुटुम्बका लड़का है। मैट्रिकसे लेकर एम०ए० तक हक्का पिया करता था। बराबर प्रथम आते रहनेसे उसे छात्रवृत्ति मिलती रही; युवकके चाचा धनी थे और उनकी बखरी बहुत उससे और कुछ अँगरेजी कहानियोंके अनुवादसे पारिश्रमिक बड़ी और बेटों-पोतों एवं बहुओंसे भरी हुई थी। युवकने पाकर उसने एम०ए० प्रथम श्रेणीमें पास कर लिया और चाचासे प्रार्थना की कि उसे वह अपने ही घरका बतायें अब उसे विदेशमें जाकर शिक्षा ग्रहण करनेके लिये और पन्द्रह दिनोंके लिये उसकी बहुको अपने घरमें रहने सरकारी छात्रवृत्ति मिलेगी। वह दो महीनेके अन्दर दें। चाचाने स्वीकार कर लिया। घरके बाहरी बरामदेमें एक कोठरी थी। युवकने विदेश चला जायगा। जज साहबका हाल तो—'पैरत थके थाह जनु उसीको साफ कराके उसमें जरूरी सामान रखवा दिये; **पाई** 'जैसा हो गया। बात करते-करते वे अपनी कोठीपर एक कुरसी और मेज भी रखवा दिये। बहु चाचाके घरमें आ गये। स्वयं उतरे, युवकको भी उतारा; और कहा— खाना खा लिया करेगी और उसी कोठरीमें रहेगी। एक आपने रास्तेमें मेरी बड़ी सहायता की। अब कुछ जल-लड़केको नौकर रख लिया गया। पान करके तब जाने पाइयेगा। युवक वापस जाकर बहुको ले आया। पाँच-सात युवकको बैठकमें बैठाकर जज साहब अन्दर गये दिन बहुके साथ गाँवमें रहकर युवक अपनी विदेश-और लक्ष्मी एवं उसकी माताको भी साथ लेकर आये यात्राकी तैयारी करनेके लिये शहरको वापस गया और बहु चाचाके घरमें अकेली रहने लगी। दोनों वक्त घरके और उनसे युवकका परिचय कराया। इसके बाद नौकर जल-पानका सामान लेकर आया और युवकको जज अन्दर जाकर खाना खा आती और नौकरकी सहायतासे साहबने बड़े प्रेमपूर्वक जल-पान कराया। इसके बाद दोनों वक्त कोठरीके अन्दर चाय बनाकर पी लिया युवकको जज साहब अक्सर बुलाया करते थे और वह करती। चायका सामान वह साथ लायी थी। दो ही चार दिनोंमें बहुका परिचय गाँवकी प्राय: आता-जाता रहा। गरीब युवकके जीवनमें यह पहला ही अवसर था, सब छोटी-बड़ी स्त्रियों और बच्चोंसे हो गया। बहुका जब किसी रईसने इतने आदरसे उसे बैठाया और स्वभाव मिलनसार था। माता-पिताकी धार्मिक शिक्षाओंसे और श्रीरामचरितमानसके नियमित पाठसे उसके हृदयमें खिलाया-पिलाया हो। अन्तमें यह हुआ कि जज साहबने लक्ष्मीका कोमलता और सिहष्णुता आ गयी थी। सबसे वह हँसकर प्रेमपूर्वक मिलती, बच्चोंको प्यार करती, बिस्कुट विवाह युवकसे कर दिया। युवकके विदेश जानेके दिन निकट चले आ रहे देती और सबको आदरसे बैठाती। रेशमी साड़ीके अन्दर थे। जज साहबने सोचा कि लक्ष्मी कुछ दिन अपने लुभावने गुण देखकर मैली-कुचैली और फटी धोतियोंवाली पतिके साथ उसके गाँव हो आये तो अच्छा; तािक ग्रामीण स्त्रियोंकी झिझक जाती रही और वे खुलकर दोनोंमें प्रेमका बन्धन और दृढ़ हो जाय और युवक बातें करने लगीं। विदेशमें किसी अन्य स्त्रीपर आसक्त न हो। बहुको सीना-पिरोना अच्छा आता था, हारमोनियम जज साहबका प्रस्ताव सुनकर युवकने कहा—मैं बजाना और गाना भी आता था। कण्ठ सुरीला था, नम्रता

संख्या १०] आदर्श बी	०ए० बहू ३३
\$	***********************************
और विनयका प्रदर्शन करना वह जानती थी, उसका तो	उससे गोबर मँगाया; एक बाल्टी पानी मँगाया। कोठरी
दरबार लगने लगा। कोठरीमें दिनभर चहल-पहल	और ओसारेको झाड़् लगाकर साफ किया। फिर रेशमी
रहती। गाँवके नरकमें मानो स्वर्ग उतर आया था।	साड़ीकी कछाँड़ मारकर वह घर लीपने बैठ गयी।
गाँवकी स्त्रियोंका मुख्य विषय प्राय: परनिन्दा	यह खबर बात-की-बातमें गाँवभरमें और उसके
हुआ करता है। कुछ स्त्रियाँ तो ऐसी होती हैं कि ताने	आसपासके गाँवोंमें भी पहुँच गयी। झुण्ड-के-झुण्ड
मारना, व्यंग्य बोलना, झगड़े लगाना उनका पेशा–सा हो	स्त्री-पुरुष देखने आये। भीड़ लग गयी। कई स्त्रियाँ
जाता है और वे घरोंमें चक्कर लगाया ही करती हैं। एक	लीपनेके लिये आगे बढ़ीं; पर बहूने किसीको हाथ लगाने
दिन ऐसी ही एक स्त्री लक्ष्मीके पास आयी और उसने	नहीं दिया। वृद्धा स्त्रियाँ आँसू पोंछने लगीं। ऐसी बहू
बिना संकोचके कहा—तुम्हारा बाप अन्धा था क्या, जो	तो उन्होंने कभी देखी ही नहीं थी। पुरुष लोग उसे
उसने बिना घर देखे विवाह कर दिया?	देवीका अवतार मानकर श्रद्धासे देखने लगे।
लक्ष्मीने चिकत होकर पूछा—क्या यह मेरा घर	इतनेमें बाजारसे बरतन आ गये। बहूने पानी
नहीं है ?	मँगवाकर कोठरीमें स्नान किया। फिर वह रसोई बनाने
स्त्री उसका हाथ पकड़कर बरामदेमें ले गयी और	बैठ गयी। शीघ्र ही भोजन तैयार करके उसने ससुरजीसे
उँगलीके इशारेसे युवकके खँडहरकी ओर दिखाकर	कहा कि वे स्नान कर लें।
कहा—'वह देखो, तुम्हारा घर है और वह तुम्हारे ससुरजी	ससुरजी आँखोंमें आँसूभरे मोह-मुग्ध बैठे थे।
हैं, जो छप्परके नीचे बैठकर हुक्का पी रहे हैं। यह घर	किसीसे कुछ बोलते न थे। बहूकी प्रार्थना सुनकर उठे,
तो तुम्हारे पतिके चाचाका है, जो अलग रहते हैं।'	कुएँपर जाकर नहाया और आकर भोजन किया। बरतन
लक्ष्मीने उस स्त्रीको विदा किया और कोठरीमें	सब नये थे। खँडहरमें एक ही झिलँगा खाट थी। बहूने
आकर उसने गृहस्थीके जरूरी सामान—बरतन, आटा,	उसपर दरी बिछा दी। ससुरको उसपर बैठाकर, चिलम
दाल, चावल, मिर्च-मसालेकी एक सूची बनायी और	चढ़ाकर हुक्का उनके हाथमें थमा दिया। फिर उसने
नौकरको बुलाकर अपना सामान बँधवाकर वह उसे उसी	स्वयं भोजन किया।
खँडहरमें भेजवाने लगी।	बहूने चाचासे कहा—दो नयी खाटें और एक चौकी
चाचा सुन पाये। वे दौड़े आये। आँसू भरकर कहने	आज ही चाहिये। बाधके लिये उसने चाचाको पैसे भी
लगे—बहू! यह क्या कर रही हो? मेरी बड़ी बदनामी	दे दिये। चाचा तो बाध खरीदने बाजार चले गये।
होगी ।	लोहार और बढ़ई वहीं मौजूद थे। सभी तो
घरकी स्त्रियाँ भी बाहर निकल आयीं। वे भी	आनन्द-विभोर हो रहे थे। हर-एकके मनमें यही
समझाने लगीं। लक्ष्मीने सबको एक उत्तर दिया—दोनों	लालसा जाग उठी थी कि वह बहूकी कोई सेवा करे।
घर अपने ही हैं। मैं इसमें भी रहूँगी और उसमें भी रहूँगी।	लोहारने कहा—मैं पाटीके लिये अभी बाँस काटकर
फिर उसने चाचाके हाथमें कुछ रुपये और सामानकी सूची	लाता हूँ और पाये गढ़कर खाटें बना देता हूँ।
देकर कहा—यह सामान बाजारसे अभी मँगा दीजिये।	बढ़ईने कहा—मैं चौकी बना दूँगा।
चाचा लाचार होकर बहुत उदास मनसे बाजारकी	बाध भी आ गया। खाट बिननेवाला अपनी सेवा
ओर गये, जो एक मील दूर था। बहू खँडहरमें आयी।	प्रस्तुत करनेके लिये मुँह देख रहा था। उसने दो खाटें
आते ही उसने आँचलका छोर पकड़कर तीन बार	बिन दीं। ससुरकी झिलँगा खाट भी बहूने आये-गयेके
ससुरका पैर छुआ। फिर खँडहरमें गयी। एक कोठरी	लिये बिनवाकर अलग रख ली। बढ़ईने चौकी बना दी।
और उसके सामने छोटा-सा ओसारा, घरकी सीमा इतनी	शामतक यह सब कुछ हो गया।
ही थी। नौकरने सामान लाकर बाहर रख दिया। बहूने	रातमें बहूने अपने माता-पिताको एक पत्र लिखा,

भाग ९० जिसमें दिनभरमें जो कुछ हुआ, सब एक-एक करके उस कागजको छातीसे चिपकाकर देरतक रोती रही। लिखा, पर पिताको यह नहीं लिखा कि तुमने भूल की जज साहबने गुमाश्तेको सब काम समझा दिया और मुझे कहाँ-से-कहाँ लाकर डाल दिया। बल्कि बडे था। मकानका एक नक्शा भी उसे दिया था। गुमाश्तेने गाँवके पास ही एक खुली जगह पसन्द की। जमींदार उल्लासके साथ यह लिखा कि मुझे आपकी और माताजीकी सम्पूर्ण शिक्षाके उपयोग करनेका मौका मिल उस जगहको बहुके नामपर मुफ्त ही देना चाहता था, गया है। पर गुमाश्तेने कहा कि जज साहबकी आज्ञा है कि कोई बहुके झोंपड़ेपर तो मेला लगने लगा। सब उसको चीज मुफ्त न ली जाय। अतएव जमींदारने मामूली-सा देवी करके मानने लगे थे। बराबर उम्रकी बहुएँ दुसरे दाम लेकर जज साहबके वचनकी रक्षा की। गाँवोंसे आतीं तो आँचलके छोरको हाथोंमें लेकर उसका पड़ोसके एक दूसरे गाँवके एक जमींदारने पक्का पैर छूनेको झुकतीं। बहु लज्जाके मारे अपने पैर साडीमें मकान बनवानेके लिये ईंटोंका पजावा लगवा रखा था। छिपा लेती। उनको पास बैठाती, सबसे परिचय करती ईंटोंकी जरूरत सुनकर वह स्वयं आया और बहुके नामपर ईंटें मुफ्त ले लिये जानेका आग्रह करने लगा, पर और अपने काढ़े हुए बेल-बूटे दिखाती। गाँवोंके विवाहित और अविवाहित युवक भी गुमाश्तेने स्वीकार नहीं किया। अन्तमें पजावेमें जो लागत बहुको देखने आते। बहु तो परदा करती नहीं थी, पर लगी थी, उतना रुपया देकर ईंटें ले ली गयीं। युवकोंकी दुष्टिमें कामुकता नहीं थी। बल्कि जलकी मजदूर बिना मजदूरी लिये काम करना चाहते थे, रेखाएँ होती थीं। ऐसा कठोर तप तो उन्होंने कभी देखा पर बहुने रोक दिया और कहा कि सबको मजदूरी लेनी ही नहीं था। होगी। रातमें बहुके झोंपड़ेके सामने गाँवकी वृद्धा स्त्रियाँ दो राजगीर और भी रख लिये गये। पास-पडोसके जमा हो जातीं। देवकन्या-जैसी बहु बीचमें आकर बैठ गाडीवाले अपनी गाडियाँ लेकर दौड पडे। पजावेकी जाती। 'आरी-आरी कुस-कॉॅंसि, बीचमें सोनेकी रासि।' कुल ईंटें ढोकर आ गयीं। मजदुरोंकी कमी थी ही नहीं। एक लम्बे-चौड़े अहातेके बीचमें एक छोटा-सा सीमेंटके बहु वृद्धाओंको आँचलसे चरण छुकर प्रणाम करती; मीठी-मीठी हँसी-ठठोली भी करती। वृद्धाएँ बहुके पलस्तरका पक्का मकान, जिसमें दो कमरे नीचे और दो स्वभावपर मुग्ध होकर सोहर गाने लगतीं। लोग हँसते ऊपर तथा रसोई-घर, स्नानागार और शौचालय थे, दो-तो वे कहतीं—बहुके बेटा होगा, भगवान् औतार लेंगे, तीन हफ्तोंके बीचमें बनकर तैयार हो गया। अहातेमें हम अभीसे सोहर गाती हैं। बहू बेचारी सुनकर लज्जाके फूलों और फलोंके पेड़-पौधे भी लगा दिये गये। एक मारे जमीनमें गड-सी जाती थी। पक्की कुइयाँ भी तैयार करा दी गयी। चौथे रोज जज साहबकी भेजी हुई एक लारी युवकको अभीतक किसी बातका पता नहीं था। आयी, जिसमें सीमेन्टके बोरे, दरवाजों और खिडिकयोंके लक्ष्मीने भी कुछ लिखना उचित नहीं समझा; क्योंकि चौकठे और पल्ले, पलँग, मेज-कुर्सियाँ और जरूरी भेद खुल जानेसे पतिको लज्जा आती और जज साहबने लोहा-लक्कड भरे थे और एक गुमाश्ता और दो भी लक्ष्मीको दूसरे पत्रमें लिख भेजा था कि वहाँका कोई समाचार वह अपने पतिको न लिखे। राजगीर साथ थे। गुमाश्ता जज साहबका एक लिफाफा भी लाया गुमाश्तेका पत्र पाकर जज साहबने गृह-प्रवेशकी था; जिसमें एक कागज था और उसपर एक ही पंक्ति साइत पूछी और गुमाश्तेको लिखा कि साइतके दिन मैं, लक्ष्मीकी माँ और उसके पति भी आ जायँगे। एक हजार लिखी थी— व्यक्तियोंको भोजन करानेकी पूरी तैयारी कर रखो। पबित्र किए कुल दोऊ। Hinduisma Diagorda Server https://dsc.gg/dharma deMADE WHTHEOVER BY Axinasty Shi

आदर्श बी०ए० बहु संख्या १० ] पलँग, उसपर बिछानेकी दरी, गद्दा और चादर, तिकये बैठनेका उनको साहस नहीं होता था। बहु स्वयं उनके और मसहरी गाँवहीमें मँगा लिया था। चाँदीका एक पास गयी और एक-एकका हाथ पकड़कर ले आयी फर्शी हुक्का, चाँदीकी चिलम, चाँदीका पीकदान साथ और बिछी हुई दरीपर एक तरफ उन्हें बैठा दिया और लेते आनेके लिये उसने पिताको पत्र लिखा था। सब उनके गन्दे कपड़ोंका विचार किये बिना उनके बीचमें चीजें आ गयी थीं। बैठ गयी। सबका परिचय पूछा और स्वागत-सत्कारमें ठीक समयपर बड़ी धूम-धामसे गृह-प्रवेश हुआ। जो पान-इलायची अन्य स्त्रियोंको दिया गया, वही सबसे पहले युवकके पिता सुन्दर वस्त्र पहने हुए उनको भी दिया। चारों ओरसे बहूपर आशीर्वादोंकी वृष्टि मकानके अन्दर गये। बढ़िया चादर बिछी हुई नेवारकी होने लगी। पलँगपर बैठाये गये, पास ही लक्ष्मीने स्वयं चिलम सन्ध्याको निमन्त्रितोंको भोजन कराया गया। लोग चढ़ाकर फर्शी हुक्का रख दिया। लक्ष्मीने ससुरके लिये प्रत्येक कौरके साथ बहुको आशीर्वाद देते थे। जबतक एक सुन्दर-सा देहाती जूता भी बनवाया था; वही वे भोजन करते रहे, बहुके ही गुणोंका बखान करते रहे, पहनकर ससुरने गृहमें प्रवेश किया था, वह पलँगके नीचे ऐसी शोभा बनी कि कुछ कहते नहीं बनता। बड़ी शोभा दे रहा था। पलँगके नीचे चाँदीका पीकदान युवक तो यह सब दृश्य देखकर अवाक् हो गया भी रखा था। ससुरको पलँगपर बैठाकर और हुक्केकी था। पत्नीके गुणोंपर वह ऐसा मुग्ध हो गया था कि दोनों सुनहली निगाली उनके मुँहमें देकर बहुने आँचलका छोर आमने-सामने होते तो उसके मुँहसे बात भी नहीं निकलती थी। दिनभर उसकी आँखें भरी रहीं। पकड़कर तीन बार उनके चरण छुए। ससुरके मुँहसे तो बात ही नहीं निकलती थी। उनका तो गला फूल-दो दिन उसी मकानमें रहकर लक्ष्मीके ससुरके फूलकर रह जाता था। हाँ, उनकी आँखें दिनभर लिये वर्षभर खानेका सामान घरमें रखवाकर लक्ष्मीके नौकरको उन्हींके पास छोड़कर और युवककी एक अश्रुधारा गिराती रहीं। प्रेम छिपाये ना छिपै, जा घट परगट होय। चाचीको, जो बहुत गरीब और अकेली थी, लक्ष्मीके जो पै मुख बोलै नहीं, नयन देत हैं रोय॥ ससुरके लिये खाना बनानेके लिये नियुक्त करके जज साहब अपनी पुत्री, उसकी माता और युवकको साथ गृह-प्रवेश कराके लक्ष्मीके माता-पिता एक कमरेमें जा बैठे थे। ससुरको पलँगपर बैठाकर और पतिको उनके लेकर अपने घर लौट गये। जानेके दिन आसपासके पास छोडकर बहु अपने माता-पिताके कमरेमें गयी। दस-पाँच मीलोंके हजारों पुरुष-स्त्री बहुको विदा करने पहले वह पिताकी गोदमें जा पडी। पिता उसे देरतक आये थे। वह दृश्य तो अद्भृत था। आज भी लोग चिपटाये रहे और आँसू गिराते रहे। फिर वह माताके आँखोंमें हर्षके आँसू भरकर बहुको याद करते हैं। गलेसे लिपट गयी। दोनों बाहें गलेमें लपेटकर वह वह पक्का मकान, जो सड़कसे थोड़ी दूरपर है, मूर्छित-सी हो गयी। माँ-बेटी देरतक रोती रहीं। आज भी बहुके कीर्तिस्तम्भकी तरह खड़ा है। माता-पितासे मिलकर बहू निमन्त्रितोंके लिये युवक विदेशसे सम्मानपूर्ण डिग्री लेकर वापस भोजनकी व्यवस्थामें लगी। उसने छोटी-से-छोटी कमीको आया है और कहीं किसी बड़े पदपर है। बहू उसीके भी खोज निकाला और उसे पूरा कराया। गृह-प्रवेशके दिन बड़ी भीड़ थी। आसपासके गाँवोंकी स्त्रियाँ, जिनमें एक बी॰ए॰ बहूकी इस प्रकारकी कथा शायद यह सबसे पहली है और समस्त बी०ए० बहुओंके लिये वृद्धा, युवती, बालिका सब उम्रोंकी थीं, बहुका दर्शन करने आयी थीं। गरीब और नीची जातिकी स्त्रियोंका गर्वकी वस्तु है। हम ऐसी कथाएँ और सुनना चाहते हैं। एक झुण्ड अलग खड़ा था। उनके कपड़े गन्दे और यह श्रीरामचरितमानसका चमत्कार है, जिसने फटे-पुराने थे। भले घरोंकी स्त्रियोंके बीचमें आने और चुपचाप लक्ष्मीके जीवनमें ऐसा प्रकाश-पुंज भर दिया।

मानव जीवनमें गुण-दोष

### ( ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज )

स्वभावत: कोई भी व्यक्ति अपनेको अपनी दुष्टिमें भी गुणके अपना लेनेपर सभी गुण स्वत: आ जाते हैं।

भला ही देखना चाहता है, पर भलाई करके तो हम भले इस दृष्टिसे दोषोंकी निवृत्ति और सद्गुणोंकी अभिव्यक्ति

होते नहीं - भले होते हैं अपने जीवनमेंसे जानी हुई युगपद् (automatic and simultaneous) है।'

बुराइयों (दोषों)-का त्याग करनेसे। अपने जीवनमेंसे 'सर्वांशमें गुणोंकी अभिव्यक्ति होनेपर निरभिमानता

जानी हुई बुराइयोंको निकाल देनेपर भला बननेके लिये

कुछ करना नहीं पड़ता, हम स्वत: भले बन जाते हैं।

निर्दोषतामें हमारे व्यक्तित्वमें गुणोंकी अभिव्यक्ति होती

है, परंतु उनका अभिमान भी नहीं रखना है।

प्रश्न उठता है कि जिसकी इतनी चर्चा की गयी

है, वह बुराई (दोष या भूल कहें) वास्तवमें है क्या और

जो जीवनसे जानी हुई बुराई निकालनेकी बात कही गयी है, वह कैसे सम्भव है। निम्नलिखित उद्धरणसे इस प्रश्नका सरल और स्पष्ट उत्तर मिल जाता है—

'अब विचार करना है कि गुण क्या है और दोष

क्या है ? दूसरोंकी ओरसे अपने प्रति होनेवाले दोषका ज्ञान स्वतः हो जाता है और दूसरोंसे हम वही आशा करते हैं, जो गुण है। कोई भी अपना अनादर, हानि-

क्षिति नहीं चाहता। सभी आदर, प्यार और रक्षा चाहते हैं। जिन प्रवृत्तियोंसे किसीकी क्षित हो, किसीका अनादर हो,

किसीका अहित हो, वे सभी दोष हैं और जिन प्रवृत्तियोंसे

दूसरोंका हित, लाभ एवं प्रसन्नता हो वे सभी गुण हैं।' 'गुणोंका उपयोग दूसरोंके प्रति होता है और उससे अपना विकास स्वतः हो जाता है। जिन प्रवृत्तियोंसे

दूसरोंका अहित होता है, उन प्रवृत्तियोंसे अपना भी अकल्याण ही होता है। यह रहस्य जान लेनेपर दूसरोंके

अहितकी कामना सदाके लिये मिट जाती है और सर्वहितकारी भावना स्वत: जाग्रत् होती है।'

पाते हैं। जो किसीका बुरा नहीं चाहता, उसके सभी दोष

मिट जानेपर सभी दोष मिट जाते हैं और सर्वांशमें किसी

'सर्व-हितकारी भावनाकी भूमिमें ही गुण विकास

स्वत: मिट जाते हैं। एक ही दोष स्थानभेदसे भिन्न-

भिन्न प्रकारका भासता है। सर्वांशमें किसी भी दोषके

अपनेको बुराईरहित बनाना अर्थात् हम किसीको

कोई गैर नहीं।'

आ जाती है; क्योंकि दोषोंकी उत्पत्ति नहीं होती और

गुणोंसे अभिन्नता हो जाती है। यह नियम है कि जिससे

अभिन्नता (identity) हो जाती है, उसका भास नहीं

होता, अर्थात् उसमें अहम्बुद्धि नहीं होती अपित् वह

तथा दोष क्या हैं और दोषोंकी निवृत्ति और गुणोंकी

अभिव्यक्ति किस प्रकार सम्भव है। यहाँ यह ध्यान

देनेकी बात है कि हमें अपनेको अपनी दृष्टिमें तौलना

है न कि इस आधारपर कि हमें लोग कैसा समझते हैं।

'हमें कोई बुरा न समझे, इससे हम भले हो नहीं जाते,

बननेकी क्या जरूरत है, हम जैसे हैं, वैसे ही ठीक हैं,

परंतु ऐसा वही कह सकता है, जिसकी जीवन-बुद्धि

विकारों और वासनाओंमें ही है और जीवनका कोई लक्ष्य ही नहीं है। जिसके जीवनमें लक्ष्य अथवा

वास्तविक माँग परम शान्ति, परम स्वाधीनता और परम

प्रियताकी है, वह ऐसा नहीं कहेगा; क्योंकि वह जानता

है कि इनकी प्राप्ति निर्दोषताके बिना नहीं हो सकती।

ऐसा तर्क कोई प्रस्तुत कर सकता है कि हमें भले

भले तो बुराईके त्यागसे ही हो सकते हैं।'

उपर्युक्त कथनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि गुण

जीवन हो जाता है।'

दृष्टिसे सभी परमात्माके अंश हैं और ईश्वरवादीकी

बुरा न समझें, किसीका बुरा न चाहें और किसीके प्रति बुराई न करें, सहज हो जाता है, यदि यह ध्यान बना रहे कि भौतिकवादीकी दृष्टिसे जो जगत्की ही सत्ता मानते हैं, जगत्के नाते हम सब एक हैं, अध्यात्मवादीकी

िभाग ९०

दुष्टिसे सभी उसीके रूप हैं। इसलिये 'कोई और नहीं

साधनोपयोगी पत्र विषके समान समझा जाय। इन बातोंको ध्यानमें रखकर (१) नि:स्वार्थ प्रेम और सच्चरित्रताकी महिमा सत्यकी रक्षा करते हुए ही धनोपार्जनकी चेष्टा करनी प्रिय महोदय! सप्रेम हरिस्मरण। पत्र तो मैं नहीं दे चाहिये और यदि धन प्राप्त हो तो उसे भगवान्की चीज पाता, परंतु आपकी और आपके घरभरकी मधुर स्मृति मानकर अपने निर्वाहमात्रका उसमें अधिकार समझकर कई बार होती है। संसारका मिलना बिछुड़नेके लिये ही शेष धनसे भगवान्की सेवा करनी चाहिये। कुटुम्बसेवा, हुआ करता है। जहाँ राग होता है, वहाँ विछोहमें दु:ख गरीब-दुखी और विधवाओंकी सेवा आदिके रूपमें यह और स्मृतिमें सुख-सा प्रतीत होता है। जहाँ द्वेष होता भगवत्सेवा की जा सकती है। सेवा करके अभिमान नहीं है, वहाँ विछोहमें सुख और स्मृतिमें दु:ख होता है। राग-करना चाहिये। भगवान्की वस्तुसे भगवत्सेवा हो; हमें तो केवल निमित्तमात्र हैं, उन्हींकी चीज है, उन्हींके काममें

साधनोपयोगी पत्र

द्वेषसे परे नि:स्वार्थ प्रेमकी एक स्थिति होती है, वहाँ माधुर्य-ही-माधुर्य है। स्वार्थ ही विष और त्याग ही अमृत है। जिस प्रेममें जितना स्वार्थत्याग होता है, उतना ही उसका स्वरूप उज्ज्वल होता है। प्रेमका वास्तविक स्वरूप तो त्यागपूर्ण है, उसमें तो केवल प्रेमास्पदका सुख-ही-सुख है। अपने सुखकी तो स्मृति ही नहीं है। अस्तु, धन कमानेमें उन्नति हो यह तो व्यावहारिक

संख्या १० ]

दृष्टिसे वाञ्छनीय है ही, परंतु जीवनका उद्देश्य यही नहीं धन कमानेकी इच्छा ऐसी प्रबल और मोहमयी न

है। जीवनका असली उद्देश्य महान् चरित्रबलको प्राप्त करना है, जिससे भगवत्प्राप्तिका मार्ग सुगम होता है। धन, यश, पद, गौरव, मान, सन्तान सब कुछ हो, परंतु यदि मनुष्यमें सच्चरित्रता नहीं है तो वह वस्तुत: मनुष्यत्वहीन है। सच्चरित्रता ही मनुष्यत्व है। होनी चाहिये, जिससे न्याय और सत्यका पथ छोडना पडे, दूसरोंका न्याय्य स्वत्व छीना जाय और गरीबोंकी रोटीपर हाथ जाय। जहाँ विलासिता अधिक होती है, खर्च बेशुमार होता है, भोगासिक बढ़ी होती है, झुठी प्रेस्टिज (Prestige)-का भार चढ़ा रहता है, वहाँ धनकी आवश्यकता

बहुत बढ़ जाती है और वैसी हालतमें न्यायान्यायका विचार नहीं रहता। गीतामें आसुरी सम्पत्तिके वर्णनमें भगवान्ने कहा है—'कामोपभोगपरायण पुरुष अन्यायसे अर्थोपार्जन करता है।' बुद्धिमान् पुरुषको इतनी बातोंपर ध्यान रखना चाहिये—विलासिता न बढ़े, फिजूलखर्ची न हो, जीवन यथासाध्य सादा हो, इज्जतका ढकोसला न

रखा जाय, भोगियोंकी नकल न की जाय और परधनको

शेष प्रभुकृपा। (२) श्रीजगन्नाथजीके प्रसादकी महिमा कृपापत्र मिला। श्रीजगन्नाथपुरी

लगती है, उन्हींके आज्ञानुसार लगती है। इसमें हमारे लिये अहंकारकी कौन-सी बात है ? प्रभुके काममें न लगाकर

स्वयं भोगते तो बेईमानी थी, पाप था। इन सब बातोंका

खयाल रखना चाहिये। हो सके तो नित्य कुछ सद्ग्रन्थोंका

स्वाध्याय और भगवद्भजन भी अवश्य करना चाहिये।

इसकी आवश्यकता पीछे अवश्य मालुम होगी और उस

समय पहलेका अभ्यास न होनेसे बडी कठिनाई होगी।

(पुरुषोत्तमक्षेत्र) काशीकी भाँति ही बहुत ही प्राचीन तीर्थ है। पुराणोंमें इसका बड़े विस्तारसे वर्णन है। स्कन्दपुराणके विष्णुखण्डमें पुरुषोत्तम-माहात्म्यके ५१ अध्याय हैं। परिवर्तन तो सभी क्षेत्रोंमें हुए हैं। यहाँ भी हुए हैं। आपने श्रीगजन्नाथजीके प्रसादके सम्बन्धमें पूछा

सो इस सम्बन्धमें यह निवेदन है कि भगवान्के प्रसादमें साधारण अन्न-बुद्धि करना पाप माना गया है। प्रसाद प्रसाद ही है और बिना किसी संकोचके सबको उसका ग्रहण करना चाहिये। फिर, श्रीजगन्नाथजीके प्रसादके सम्बन्धमें तो यहाँतक वचन मिलते हैं कि—

पद्मायाः सन्निधानेन सर्वे ते शुचयः स्मृताः॥ वेश्यालयगतं तद्धि निर्माल्यं पतितादयः। स्पृशन्यन्नं न दुष्टं तद्यथा विष्णुस्तथैव तत्॥

पाकसंस्कारकर्तृणां सम्पर्कोऽत्र न दुष्यति।

लिये साधारण अन्न नहीं है, वह तो परम दुर्लभ, निन्दन्ति ये तदमृतं मूढाः पण्डितमानिनः। सर्वपापनाशक महाप्रसाद है। प्रसादका स्वाद, उसकी बाहरी स्वयं दण्डधरस्तेषु सहते नापराधिनः॥ येषामत्र न दण्डश्चेद्धुवा तेषां हि दुर्गतिः। पवित्रता, उसका मीठा या कडुवापन नहीं देखा जाता। कुम्भीपाके महाघोरे पच्यन्ते तेऽतिदारुणे॥ उसमें देखनेकी बात केवल एक ही है कि वह भगवान्का प्रसाद है। जिसको हमारे प्रभुने मुँहमें रख लिया, वही कुक्कुरस्य मुखाद्भ्रष्टं तदनं पतते यदि। हमारे लिये परम पवित्र, परम मधुर और परम अमृत है। ब्राह्मणेनापि भोक्तव्यं सर्वपापापनोदनम्॥ अतएव भक्तोंको बिना किसी विचारके भक्ति-श्रद्धापूर्वक (स्कन्दपुराण, वैष्णवखण्ड) 'रसोई बनानेवालोंके सम्पर्कमें कोई दोष नहीं तथा सत्कारके साथ प्रसादको ग्रहण करना चाहिये। होता: क्योंकि श्रीलक्ष्मीजीकी सन्निधिके कारण वे सभी इसका यह अर्थ नहीं कि साधारण खान-पानमें पवित्र हो जाते हैं। महाप्रसाद यदि वेश्यालयमें हो अथवा पवित्रताका ख्याल छोड़ दिया जाय। वहाँ तो शास्त्रोक्त पिततादिके द्वारा स्पर्श किया हुआ हो, तब भी दूषित नहीं सभी प्रकारकी पवित्रताका खयाल पहले करना चाहिये। भगवत्प्रसाद साधारण अन्नकी श्रेणीसे परे है। शेष प्रभुकृपा होता। वह विष्णुकी तरह पवित्र ही रहता है। जो पण्डिताभिमानी मूढ् लोग अमृतरूप प्रसादकी निन्दा करते

#### पण्डिताभिमानी मूढ़ लोग अमृतरूप प्रसादकी निन्दा करते हैं, भगवान् उनके अपराधको न सहकर स्वयं उन्हें दण्ड देते हैं। यहाँ कदाचित् उनको दण्ड भोगते हुए न भी देखा जाय परंतु यह तो निश्चय ही है कि उनकी दुर्गति भी अवश्य होती है। मरनेके बाद वे महाघोर भयानक जिर कुम्भीपाक नरकमें यातना भोगते हैं। सारे पापोंका नाश माल

Hin श्राताङाला का होटस्त के इन्ह श्री क्षा निस्तृत्व : असहर भुकु लिक निकार के अप मानि का कि का कि का कि का कि मानि का कि का क

#### भी आध्यात्मिक स्थिति होती है और वह अच्छी होती है, जिसमें अन्तरमें उदासी न होनेपर भी चेहरेपर उदासी–सी मालूम होती है। यह वैराग्यकी एक अवस्था है, परंतु

चेहरेकी उदासी और गम्भीरता ही आध्यात्मिक उन्नति या स्थितिकी पहचान नहीं है। गम्भीरता होनी चाहिये भीतर, इतनी कि जो किसी भी प्रकारसे किसी भी बाह्य परिस्थितिमें

गम्भीरता या प्रसन्नता

पत्र मिला, धन्यवाद! निवेदन यह है कि एक ऐसी

िभाग ९०

चित्तको क्षुब्ध न होने दे। बाहर तो सदा प्रसन्नता और हँसी ही होनी चाहिये। समुद्रका अन्तस्तल कितना गम्भीर होता है, उसमें कभी बाढ़ आती ही नहीं, परंतु उसके वक्ष:स्थलपर असंख्य तरंगें नित्य-निरन्तर नाचती रहती हैं—अठखेलियाँ करती रहती हैं। इसी प्रकार हृदय विशुद्ध,

विकाररहित, स्थिर, गम्भीर और भगवत्संयोगयुक्त होना

चाहिये और बाहर उनकी विविध लीलाओंको देख-देखकर

पल-पलमें परमानन्दमयी हँसीकी लहरें लहराती रहनीं चाहिये। मुर्दे-सा मुर्झाया हुआ मुँह किस कामका? जिसे देखते ही देखनेवालोंका भी हृदय हँस उठे, मुखकमल खिल उठे, मुखमुद्रा तो ऐसी ही होनी चाहिये। इसका यह अर्थ भी नहीं कि विनोदके नामपर मर्यादारहित अनर्गल, असत्य प्रलाप किया जाय। उसका

पवित्रं भुवि सर्वत्र यथा गङ्गाजलं द्विज।
तथा पवित्रं सर्वत्र तदन्नं पापनाशनम्॥
'पुरुषोत्तमक्षेत्रमें चाण्डालके द्वारा स्पर्श किया हुआ
प्रसाद भी द्विजोंको ग्रहण करना चाहिये। हे द्विज! जैसे
पृथ्वीमें गंगाजल सर्वत्र ही पवित्र है, वैसे ही यह प्रसाद
भी सर्वत्र पवित्र और पाप-नाश करनेवाला है।'
प्रसिद्ध भक्त श्रीरघुनाथ गोस्वामी तो पुरुषोत्तमक्षेत्रमें
नालेमें बहकर आता हुआ प्रसाद बटोरकर उसे खाया
करते थे। वह प्रसाद इतना पवित्र माना जाता था कि
स्वयं श्रीचैतन्य महाप्रभुने एक दिन उनके हाथसे छीनकर
उसको खा लिया था।

करनेवाला प्रसाद यदि कुत्तेके मुखसे गिरा हुआ हो,

चाण्डालेनापि संस्पृष्टं ग्राह्यं तत्रान्नमग्रजैः।

उसको भी ब्राह्मणतक खा सकते हैं।'

इसी प्रकार पद्मपुराणमें आया है-

व्रतोत्सव-पर्व

# व्रतोत्सव-पर्व

संख्या १० ]

प्रतिपदा प्रात: ७।५९ बजेतक द्वितीया रात्रिशेष ५ । ३४ बजेतक

तृतीया 🗤 ३।५७ बजेतक बुध

चतुर्थी रात्रिशेष ५। ३८ बजेतक गुरु

पंचमी प्रात: ६।५५ बजेतक|शनि

षष्ठी 🕠 ७।४७ बजेतक रिव

सप्तमी दिनमें ८।६ बजेतक सोम

अष्टमी 🕶 ७। ५२ बजेतक 🗐 मंगल

नवमी प्रात: ७।११ बजेतक बुध

शक्र

पंचमी अहोरात्र

सं० २०७३, शक १९३८, सन् २०१६, सूर्य दक्षिणायन, शरद्-ऋतु, कार्तिक कृष्णपक्ष तिथि नक्षत्र दिनांक

मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि

सोम | अश्विनी दिनमें ११।१ बजेतक | १७ अक्टूबर | मूल दिनमें ११। १ बजेतक, तुला संक्रान्ति रात्रिमें ८। २६ बजे। तृतीया रात्रिमें ३।९ बजेतक मिंगल भरणी 😗 ९। २१ बजेतक १८ ,,

भद्रा सायं ४। २२ बजेसे रात्रिमें ३। ९ बजेतक, वृषराशि दिनमें २।५६ बजेसे।

भद्रा सायं ४। ४८ बजेसे रात्रिशेष ५। ३८ बजेतक, धनुराशि रात्रिमें

श्रीसूर्यषष्ठीवृत, विशाखानक्षत्रका सूर्य रात्रिमें ८।४ बजे।

शनि पुनर्वसु 😗 २।४० बजेतक |२२ 🕠 चन्द्रोदय रात्रिमें ११। २१ बजे। " २।१० बजेतक २३ 🔐 पुष्य रात्रिमें ७।५ बजे। सोम | आश्लेषा 😶 २ । ७ बजेतक | २४ 🕠 नक्षत्र का सूर्य दिनमें १२।५६ बजे। भद्रा सायं ४। २५ बजेतक, मूल रात्रिमें २। ३१ बजेतक। मंगल मघा ११२। ३१ बजेतक | २५ ११ पु० फा० '' ३।२८ बजेतक रम्भाएकादशीव्रत ( सबका ), गोवत्सद्वादशीव्रत। बुध २६ ,,

कृत्तिका प्रातः ७।४१ बजेतक १९ 🕠 संकष्टी (करवा) श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रिमें ८। २८ बजे। चतुर्थी 🕖 १२ । ४८ बजेतक 🛮 बुध मृगशिरा रात्रिशेष ४।४१ बजेतक २० मिथुनराशि सायं ५।२४ बजेसे। पंचमी 🕖 १०। ३७ बजेतक गुरु षष्ठी 🤊 ८। ३८ बजेतक आर्द्रा रात्रिमें ३। ३० बजेतक | २१ 🕠 भद्रा रात्रिमें ८। ३८ बजेसे। शुक्र भद्रा दिनमें ७।५० बजेतक, कर्कराशि रात्रिमें ८।५३ बजेसे, अहोईव्रत, सप्तमी <table-cell-rows> ७। ० बजेतक मूल रात्रिमें २।१० बजेसे, श्रीराधाष्टमी, सायन वृश्चिकराशिका सूर्य अष्टमी सायं५। ४२ बजेतक रिव

नवमी 🦙 ४।४९ बजेतक भद्रा रात्रिमें ४। ३७ बजेसे, सिंहराशि रात्रिमें २। ७ बजेसे, स्वाती

दशमी 🕠 ४। २५ बजेतक एकादशी 🕖 ४ । ३२ बजेतक

द्वादशी 🦙 ५। १२ बजेतक गुरु उ०फा० रात्रिशेष ४।५५ बजेतक २७ ,, कन्याराशि दिनमें ९।५१ बजेसे, प्रदोषव्रत। भद्रा रात्रिमें ६। १७ बजेसे, धनतेरस, धन्वन्तरि-जयन्ती, नरकचतुर्दशी। हस्त अहोरात्र त्रयोदशी रात्रिमें ६ ।१७ बजेतक शुक्र चतुर्दशी 🕠 ७।५२ बजेतक भद्रा दिनमें ७।५ बजेतक, तुलाराशि रात्रिमें ७।५६ बजेसे, श्रीहनुमज्जयन्ती। शनि हस्त प्रात: ६। ४९ बजेतक २९

चित्रा दिनमें ९।४ बजेतक अमावस्या 🕫 ९ । ४५ बजेतक 🛮 रवि अमावस्या, दीपावली। सं० २०७३, शक १९३८, सन् २०१६, सूर्य दक्षिणायन, शरद्-ऋतु, कार्तिक शुक्लपक्ष

तिथि वार दिनांक मूल, भद्रा, पंचक तथा व्रत-पर्वादि नक्षत्र प्रतिपदा रात्रिमें ११।५० बजेतक सोम स्वाती दिनमें ११। ३३ बजेतक ३१अक्टूबर काशीसे अन्यत्र गोवर्धनपूजा। विशाखा" २।१२ बजेतक द्वितीया 😗 १।५८ बजेतक मंगल १ नवम्बर वृश्चिकराशि दिनमें ७। ३२ बजेसे, यमद्वितीया, भइयादूज।

२ "

3 "

8 11

4 11

अनुराधा सायं ४।४५ बजेतक

ज्येष्ठा रात्रिमें ७।४ बजेतक

पु० षा० ११ १०। ३६ बजेतक

उ० षा० ११ १४ । ४१ बजेतक

श्रवण १११२।१५ बजेतक

धनिष्ठा '' १२। १९ बजेतक

🗤 ९। ४ बजेतक

भद्रा दिनमें ८।६ बजेसे रात्रिमें ७।५९ बजेतक। 9 11 कुंभराशि दिनमें १२।१७ बजेसे, गोपाष्टमी, अक्षयनवमी, पंचकारम्भ 6 11 दिनमें १२। १७ बजे।

७।४ बजेसे, **वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थीव्रत।** 

मुल सायं ४। ४५ बजेसे।

मुल रात्रिमें ९।४ बजेतक।

मकरराशि रात्रिमें ४। ४२ बजेसे।

दुर्लभ सन्धिकरयोग प्रातः ७। ११ से रात्रिमें ११। १५ बजेतक। शतभिषा 🗤 ११।५५ बजेतक 9 "

दशमी रात्रिशेष ६।२ बजेतक एकादशी रात्रिमें ४। ३१ बजेतक गुरु पु० भा० ११ ११ । ११ बजेतक । १० ११ भद्रा सायं ५। १७ बजेसे रात्रिमें ४। ३१ बजेतक, मीनराशि सायं

५। २२ बजेसे, प्रबोधिनी एकादशीव्रत (स्मार्त)। उ० भा० 😗 १०।४ बजेतक द्वादशी 🗤 २ । ३९ बजेतक 🛛 शुक्र ११ "

एकादशीव्रत ( वैष्णव ), तुलसीविवाह, मूल रात्रिमें १०। ४ बजेसे। रेवती ग्ग् ८।४२ बजेतक **मेषराशि** रात्रिमें ८।४२ बजेसे, **शनिप्रदोषव्रत, पंचक समाप्त** रात्रिमें ८।४२ बजे। १२ "

त्रयोदशी 😗 १२। ३३ बजेतक 🛛 शनि अश्विनी ११७। ९ बजेतक भद्रा रात्रिमें १०।१७ बजेसे, श्रीवैकुण्ठचतुर्दशीव्रत, मूल रात्रिमें ७।९ बजेतक। चतुर्दशी १११० । १७ बजेतक | रवि १३ " भद्रा दिनमें ९।६ बजेतक, वृषराशि रात्रिमें ११।५ बजेसे, कार्तिकी पूर्णिमा। पूर्णिमा ''७।५५ बजेतक सोम भरणी सायं ५। ३० बजेतक १४ "

श्रीभगवन्नाम-जपको शुभ सूचना ( इस जपकी अवधि कार्तिक पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०७२ से चैत्र पूर्णिमा, विक्रम-संवत् २०७३ तक रही है )

ते सभाग्या मनुष्येषु कृतार्था नृप निश्चितम्। इंदौर, इचलकरंजी, इटावा, इटौन्हा, इसौली, इलाहाबाद, इरांग पार्ट I-II, इरेल भेली I-II, ईसरदा, उखुल, उज्जैन,

स्मरन्ति ये स्मारयन्ति हरेर्नाम कलौ युगे॥

'राजन्! मनुष्योंमें वे लोग भाग्यवान् हैं तथा निश्चय ही कृतार्थ हो चुके हैं, जो इस कलियुगमें स्वयं श्रीहरिका उन्नाव, उरतुम, उलहासनगर, उस्मानाबाद, ऊदपुर, ऊना,

नाम-स्मरण करते और दूसरोंसे नाम-स्मरण करवाते हैं।'

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

—इस वर्ष भी इस षोडश नाम-महामन्त्रका जप

पर्याप्त संख्यामें हुआ है। विवरण इस प्रकार है—

(क) मन्त्र-संख्या ७५,४२,२१,५०० (पचहत्तर करोड़, बयालीस लाख, इक्कीस हजार, पाँच सौ)।

(ख) नाम-संख्या १२,०६,७५,४४,००० (बारह अरब,

छ: करोड़, पचहत्तर लाख, चौवालीस हजार)। (ग) षोडश नाम-महामन्त्रके अतिरिक्त अन्य मन्त्रोंका

भी जप हुआ है। (घ) बालक, युवक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, गरीब-अमीर,

अपढ़ एवं विद्वान्—सभी तरहके लोगोंने उत्साहसे जपमें योग दिया है। भारतका शायद ही कोई ऐसा प्रदेश बचा

हो, जहाँ जप न हुआ हो। भारतके अतिरिक्त बाहर फ्रामिंघम, मिडिलटाउन, यू०के०, यू०एस०ए०, यूनाइटेड किंगडम,

नेपाल आदिसे भी जप होनेकी सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं।

स्थानोंके नाम—

अंकलेश्वर, अंगनापारा, अंधराठाढी, अंबरनाथ,

अंबाजोगाई, अंबाला कैंट, अंबाला शहर, अकबरपुर,

अकोड़ा, अकोला, अगराना, अचरोल, अचानामुरली, अजमेर, अटरिया, अठहठा, अडसीसर, अनगाँव, अमरा,

अमरावती, अमलोह, अमृतपुर, अमृतसर, अम्बाह, अरड्का, अलकनन्दा, अलवर, अलीगढ़, अलीपुरकला, अल्मोड़ा,

अवरीकला, असुरेश्वर, अहमदाबाद, आइसन, आई.टी. रोड, आऊवा, आगरा, आडंद, आनन्दनगर, आबूरोड, आमगाँवबडा, आमागढ, आरंभा, आर्वी, आष्टा, आला

(नेपाल), आलेफाटा, आलोट, आसंग, इंगतपुरी, इंदरवास,

उतासैली, उदखेड़, उदगीर, उदयपुर, उधमसिंहनगर,

ऊमरी, ऊसरी, ऋषिकेश, एटा, ऐनखेडा, ओड़ारसकरी, ओबरा, औरंगाबाद, कंचनपुर, कघारा, कछुआ, कछुआरा, कटक, कटनी, कटरा, कटिहार, कड़ीला, कदन्ना, कनखल, कन्नौज, कपासन, कफलोड़ी, करनसर, करनाल, करबगाँव,

करही (शुक्ल), करीमुद्दीनपुर, करौदी, कलकत्ता, कल्याणपुर, कवलपुरा मठिया, कसारीडीह, कॉंगड़ा, कांग्पोक्पी, कांग्लातोम्बी,

काचीगुड़ा, कानड़ी, कानपुर, कानूनगोयान, कान्दीवली, कापरेन, कालका, कालपी, कालाडेरा, कालापहाड, कालीकट,

कालुखाँड, कालूहेडा, काशीपुर, किरारी, किदवईनगर, किशनगंज, कीसयारपुर, कुँआरिया, कुंडा, कुकड़ेश्वर, कुक्कुटपल्ली, कुक्षी, कुचामन सिटी, कुरमापाली, कुरावली,

कुरुक्षेत्र, कुशहर, कुसैला, कूडाघाट, कृष्णनगर, केकड़ी, केंकरा, केदारपुरा, केन्दुआ, केशरपुरा, केसिंगा, कैथल, कोंच, कोईरागै, कोईलारी, कोकलकचक, कोटई, कोटद्वार,

कोटा, कोठार, कोठी, कोडलिहया, कोथराखुर्द, कोब्रुलैखा, कोरबा, कोलकाता, कोलारस, कोलिया, कोसीकला, कोसीर, कोहका, कोहलिमश्र, कोडिया, कौहाकुड़ा, कौलती (नेपाल),

कौवाताल, खंडवा, खंडेला, खगड़िया, खजुरीरुण्डा, खजुहा, खंजूरी, खडगवॉकला, खड़ीत, खरखो, खरगढ़, खरगापुर,

खरगोन, खराड़ी, खरेडा, खवासा, खाकोली, खानिकत्ता, खालवागाँव, खालिकगढ़, खिरिकया, खिरिलया, खुँटपला, खुरपावडा, खुरई, खेडा रसुलपुर, खेलदेश पाण्डेय,

खैराचातर, खैराबाद, खैल, खोकराकला, गंगापुर सिटी, गंगाशहर, गंगेव, गंगोह, गंज, गड़कोट, गढ़पुरा, गढ़बसई, गणेती, गनोड़ा, गम्हरिया, गया, गरियाखेड़ी, गहमर, गाँधीनगर,

गागर, गाजियाबाद, गाजीपुर, गाडरवारा, गाडीपुरा, गुंडरदेही, गुड़गाँव, गुड़ाकला, गुड़ाबीजा, गुरदासपुर, गुलबर्गा, गोंडा, गोकुलेश्वर, गोडडा, गोपिबुंग, गोपेश्वर, गोरखपुर, गोरेगाँव,

<b>प्तंख्या १०</b> ] श्रीभगवन्नाम-ज	पकी शुभ सूचना ४१
£\$	<u>*******************************</u>
गोहिदा, गौंछेड़ा, गौरिया वरारी, ग्वालियर, घगोंट, घघरा,	नंदपुर, नअगा, नन्दावता, नदौरा, नन्हावारा कला, नमककटरा,
घरसोंधी, घरैहली, घाटासेर, घिंचलाय, घुंसी, घुघुली,	नबाबगंज, नयी दिल्ली, नरवाना, नरसिंहपुर, नरायनपुर,
घुनमारा, चंडीगढ़, चंदपुर, चंदौली, चंदला, चंदौली,	नरेलाशंकरी, नलवार, नवादा, नहरकाटा, नांगलोई, नांदन,
चंदौसी, चक्कीरामपुर, चपकीबघार, चम्पाघाट, चाँडेल,	नाकोट, नागपुर, नागोद, नागौर, नाचनी, नाढ़ी, नाथूखेड़ी,
चाचौड़ा, चाणेयाँ, चार हजारे, चावलपानी, चिखलाकला,	नानगाँव, नानामाण्डवा, नारायणगढ़, नारायणपुरा, नावांशहर,
चिचोली, चित्तौड़गढ़, चित्रकूट, चिलौली, चिल्हाड, चीचली,	नासिक, निफाड़, निमाज, नीमच, नीमताल, नेवरा, नेवासा,
चुड़ा चाँदपुर, चुरू, चेन्नई, चेबड़ी, चैतड़, चैसार, चोरबड़,	नैनकरा, नैनवा, नैनीताल, नोएडा, नोनीहाट, नोनैती, नौगाँव,
चोपड़ा, चौखा, चौमहला, चौरास, चौरी, चौहटन, च्यौड़ी,	न्यूमाधोपुर, न्यूशिमला, पंडतेहड़, पंडेर, पकड़ी, पचपेड़ा,
छकना, छिरास, छैंकुरी, छोटालाम्बा, जंगबहादुरगंज, जंघोरा,	पचावली, पटना, पटना सिटी, पड़ग, पतालघुटकुरी,
जगाधरी, जबलपुर, जमशेदपुर, जमालुद्दीनपुर, जमुआव,	पतारी, पत्थरकोट (नेपाल), पत्योरा, पदमपुर, पथरगुआँ,
जमुड़ी, जम्मू, जयपुर, जरयाई, जरूड़, जलंब, जलपाईगुड़ी,	पथरिया, पनवाड़ी, पद्मनाभनगर, परभड़ी, परलीबैजनाथ,
जलालगढ़, जलोदा खाटयान, जसो, जसवंतढ़, जसवंतपुरा,	परसापाली, पलेई, पलेरा, पवई, पंहगेर, पहरा, पहारपुर,
जसदेवपुर, जहाँगीराबाद, जाजगीर, जाजरदेव, जाजली,	पाटमऊ, पाटलीपुत्र, पडरिडांडा, पानीपत, पाली, पाली
जानडोल, जामपाली, जालन्धर, जालौन, जिन्तूर, जींद,	मारवाड़, पाहल, पिंडरई, पिजड़ा, पिछोर, पिथापुर, पिपरिया,
जुलगाँव (नेपाल), जैतगढ़, जैतो, जैपूर, जैसलसर, जोधपुर,	पिपलगाँवबसंत, पिपरियागंगा, पिपरौआकला, पिरौना, पिलखुआ,
जोरहाट, जोस्यूड़ा, जौनपुर, जौनायंचाकला, जौलजीवी,	पीठीपट्टी, पीपलरावा, पीलीभीत, पुखऊ, पुणे, पुनासा,
झहुराटभका, झाँसी, झापा,  झुट्ठा, झुन्झूनू, झूँसी, झूलाघाट,	पुपरी, पुरसन्डा, पुरेना, पुर्निया, पूरेगंगाराम, पेटलावद,
टटेड़ा, टिकरीखिलड़ा, टिकैतगंज, टिक्करी, टीकमगढ़,	पोखरभिण्डा, पोटली, पौआखाली, पौना, प्रतापपुर तरहर,
टूंगरी, टूण्डरी टाउन, टेघरा, टाडाभीम, टोडाराय सिंह,	प्रीतमपुरी, फतेहगढ़, फरीदाबाद, फर्रुखाबाद, फसिया, फागा,
टोरड़ा, टोंकखुर्द, ठकुरापार, ठकठौलिया, ठठारी, ठाँ,	फागी, फिरोजपुर, फिल्लौर, फूलपुररामा, फूलबेहड़, फैजाबाद,
ठाणे, ठीकरिया, ठुटी, डंडापुरा, डकोर, डडवाड़ा, डड़िहथ,	बंगलौर, बंसीपुर, बन्तवालु, बक्खापुरवा, बगदड़िया, बघेरा,
डडूका, डबरा, डबोक, डबारो, डिब्रूगढ़, डीग, डीडवाना,	बछरावा, बजकोट, बटेसरा, बड़कागाँव, बड़खेरवा, बड़वानी,
डुंमराव, डोंगरिया, डोमचाचा, ढकनालहिया, ढाँगू, ढाड़ीरावत,	बड़ालू, बड़ोरावला, बड़ीमुरवानी, बड़ौदा, बढ़लठोर, बदडीहा,
ढेकवारी, ढेगाडीह, तरकेडी, तरीचरकला, तर्भा, तामली,	बदायूँ, बनवसा, बनवारीबसंत, बनेड़िया, बनोरा, बनैल,
ताल, तालागाँव, तिनसीना, तिलाड़, तिसपरी, तीनफेड़िया,	बन्नी, बभनान, बमोरा, बमनियाकला, बयडीहा, बयाना,
तुनी, तेलंगाना, तेल्हारा, तोक्या, तोला, तोरीबारी, त्रिवेन्दरम,	बरखेडासोमा, बरवाडीह, बरगदही वसंतनाथ, बरडा, बरडेज,
थरभीतिया, थाणा, थाणे, थानेसर, थुलवासा, दत्यारसुनी,	बरमकेला, बरेला, बरेली, बरूड़, बरेलीकलॉ, बरोरी,
दितया, दमनपुर, दनकौर, दलिसंहसराय, दरगहिया, दहमी,	बरोहा, बर्डोद, बलवाड़ा, बलदेवा, बलिया, बलौदा,
दहिवद, दांदेड़ा, दातारामगढ़, दामनजोड़ी, दामोदरपुर,	बसन्तपुरखुर्द, बसदेहड़ा, बस्ती, बहादुरपुर, बहेरी, बस्तर,
दारानगरगंज, दिगौड़ा, दियरी, दिलौरी, दिल्ली, दुआरी,	बाँसवाडा, बाँसाकला, बागपत, बागबहरा, बाघमारा, बाछौर,
दुर्ग, देईखेड़ा, देचू, देवनगर, देरगाँव, देवगाँव, देवठी,	बामौरीताल, बाडमेर, बाप, बाबई, बामनखेड़ा, बायतु,
देवरा, देवरिया, देवरीकला, देवास, देशनोक, देहरादून,	बार, बारा, बालासोर, बाराबंकी, बालूमाजरा, बावड़ियाकला,
दौलतपुर चौक, दौसा, द्वारका, धनपुरा, धनसार, धन्धौड़ा,	बास, बिटोरा, बिदरेली, बिरहाकन्हई, बिलरा, बिलवई,
धनौरामण्डी, धमधा, धमोतर, धरवार, धर्मपुरा, धानीखेड़ा,	बीकानेर, बीड़का खेड़ा, बीनागंज, बीरमपुरा, बीसापुरकला,

िभाग ९० \* \* बुड़तरा, बुलन्दशहर, बुल्ढाणा, बेगूँ, बेनियाकाबास, बेरलीखुर्द, लखीमपुर खीरी, लमतड़ा, लरछुट, ललितपुर, लश्कर, बेहड़ी, बेरहामपुर, बेरावल, बेरासो, बेरी, बेलड़ा, बेलसोन्डा, लाखागुडा, लाडपुरा, लासूरसेहान, लाहरखेरा, लिखमीपुर, बेलोना, बैकुंठपुर, बैरिसया, बैला, बोकारो, बोधन, बोराड़ा, लिलवानी, लिलुआ, लुंगफी, लुणस्, लुधियाना, लेडुआखाड, ब्रह्मावल्ली, भईन्दर, भटगाँव, भटवलिया, भटिण्डा, भदानीनगर, लोहरदगा, लोहासिंहा, लोहारा, लैमाखोंग, वंडा, वक्खापुरवा, वटवारा, वदनरेंगगाई, वर्धमान, वर्धा, वल्लभनगर, वसई, भदरु धनेटा, भन्सुली, भन्दर, भयन्दर, भरतपुर, भरथना, वाड़ा, वाड़ी, वाड़ता, वापी, वाराणसी, वाहेगाँव दिमनी, भरवाई, भरसी, भरूच, भलकी, भलदेन, भलस्वा ईसापुर, विछलखा, विजावर, विदिशा, विराटनगर (ने०), विलसंडा, भवराणा, भाटनटोला, भाड़तू, भाणुजा, भादरा, भिण्ड, विशाखापट्टनम्, विशाड्, विशुनपुरवा, वैर, वैशाली नगर, भिण्डुवा, भिनगा, भीकनगाँव, भिनाय, भिलाई, भिवण्डी, भिवानी, भीखनपुर, भीमदासपुर, भीनासर, भुज, भुसावर, वौना, व्यावर, शक्तिनगर, शमसाबाद, शान्तिपुर, शाजापुर, भूसावल, भैसलाना, भैसछोड, भैरमपुर, भोकरदन, भोगपुर, शाहकोट, शाहजहाँपुर, शाहतलाई, शाहपुर, शाहपुर (मगरौन), भोड़वालमाजरी, भोपाल, मंगराजपुर, मंडी, मंडीगोविन्दगढ़, शाहपुरा, शाहपुरागोगावां, शिकारपुर, शिकोहाबाद, शिवाड, मंत्रिपुखी, मक्यांग, मऊ, मकवा, मजिरकांडा (नेपाल), शेखपुर, शेखावटी, शेरगढ़, शेरुडा, श्यामगढ़, श्योपुर, श्यामलाहिल्स, श्रीगंगानगर, संगढ़ेसिया, संदणा, संगनेश्वरनगर, मझगुवाँखुर्द, मझरिया, मझलैटा, मडू, मथुरा, मदाना, मधुबनी, मनकापुर, मनोरी, मलँगवा (ने०), महराजगंज, संगावली, संघर, संबलपुर, सकरी, सतना, सन्तोलाबारी, महरौनी, महल, महाजनान, महादेवा, महासमुन्द, महिषी, सपिया, सफीपुर, सरथुआ, सलखुआ, सलेमपुर, सल्लिया, महुआ, महुआशाला, महुडर, महेसानी (ने०), महेन्द्र, सरहुला, सरैधी, सरैया प्रवेशपुर, सिल्लया, ससना, सहारनपुर, महेशानी, मांडल, माचलपुर, माजिरकाडा, माडलगढ़, सांगटी, साँगोद, सांगानेर, साढ़मल, सानड, सागर, सादाबाद, मानेडाड़ा, मारगोमुण्डा, मिर्जापुर, मिश्रपुर, मिश्राढ़ौर, मीलवां, सानण पण्डितान, सामला, सारेयाद, सालोन बी, सावदा, मुँगेर, मुँगेली, मुखेड, मुम्बई, मुजफ्फरनगर, मुजफ्फरपुर, साह्, साह्कारा, सिंगापुर, सिंगोली, सिंगहा यूसुफपुर, सिंघानी, मुठीपार, मुबारकपुर, मुरडाकिया, मुरमूनी, मुरादाबाद, सितारगंज, सिधौली, सिमलैगर बाजार, सिमरी, सिरपुर कागजनगर, सिरसा, सिरहौल, सिरोही, सिलीगुड़ी, सिवनी, मुर्रई, मुलड, मुलताई, मुल्लनपुर, मुलुण्ड, मुस्तफाबाद, सीहोर, सीकर, सीतामढ़ी, सीथल, सीनखेड़ा, सीपरीबाजार, मूडी, मेड़तारोड, मेड़तासिटी, मेरठ, मेवड़ा, मैगलगंज, मैहर, मोटबुंग, मोतियाडुमरिया, मोरपा, मोरकोन, मोलकोन, सीमातल्ला, सुखलिया, सुगवा, सुधारबाजार, सुरनगर, मोहाली, मौजपुर, यमुनानगर, यवतमाल, रंगिया, रगजा, सुरही, सुल्तानपुर, सुहागपुर, सुरत, सेतीखोला, सेनापित, सेमराघुनवारा, सेमरामेडोल, सेमराहाट, सेमरीदेव, सेमारी, रघुनाथपुर, रजीपुरा, रठेरा, रणग्राम, रतनपुर, रतनमहका, रतलाम, रतनागरपुर, रनचिराई, रनवारी, रन्नौद, रन्नी, सेम्फेंजुंग, सेंठा, सेरा (ने०), सेरो, सेलु, सेहरी, सैमल चौड़, सोनपुरी, सोनभद्र, सोनरा, सोनवर्षाराज, सोनाहातु, रसूलपुर, रसूलिया, रहली, राँची, राजनगर, राजनाद गाँव, सोनीपत, सोपेंजा नेपाली, सोरखी, सोरवना, सोलन, सोलापुर, राजपुर, राजरूपपुर, राजाआहर, राजापारा, राजेपुर, रादौर, रानापुर, रानीकटरा, रामनगर, रामपुर, रामपुरनैकिन, रामपुरवा, हंसनगर, हटनी, हटवा, हटा, हतीसा, हथौड़ाखेड़ा, हमीरपुर, हरदा, हरदोई, हरसौली, हरिद्वार, हरिहरपुर, हल्दिया, हल्द्वानी, रामेश्वर कम्पा, रायगढ़, रायपुर, रायपुरशिवाला, रायबरेली, हल्दौर, हसनपालीया, हसनपुर, हसलपुर, हसुआ, हाजीपुर, रायरंगपुर, रायला, रावतपुर, रावतभाटा, रावली, रावतसर, रींगस, रुड़की, रुदौली, रुस्तमनगर, रुहट्टा, रेवड़ापुर, हातोतोता, हातोद, हाथरस, हाबड़ा, हारमा, हिंडौनसिटी, रेहलू, रैहन, रोपर, रोपा, रोहतक, रोहनिया, लक्ष्मणगढ़, हिसार, हिगोलाकला, हिम्मतगंज, हुगली, हुबली, हुमायूँपुर, लानानरा।इसन करें रेजा से संस्थित के जिल्ला से साम से साम करा है से साम से साम से सम्बन्ध के साम से सम्बन्ध से स

श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना संख्या १० ] श्रीभगवन्नाम-जपके लिये विनीत प्रार्थना भगवन्नाम-स्मरणसे नहीं टल सकता और ऐसी कौन-सी हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। वस्तु है, जो नहीं मिल सकती? इस कलिकालमें हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ आज सारे संसारमें जीवनकी जटिलताएँ बढ़ती जा मंगलमय भगवान्के आश्रयके लिये भगवन्नामका सहारा रही हैं। अधिकतर लोग अपनी असीमित भौतिक ही एकमात्र अवलम्बन है। अतएव भारतवर्ष एवं समस्त आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेमें संलग्न हैं। वे अपने क्षुद्र विश्वके कल्याणके लिये, लौकिक अभ्युदय और पारलौकिक स्वार्थकी सिद्धिके लिये दूसरोंका अहित करनेमें भी कोई सुख-शान्तिके लिये तथा साधकोंके परम लक्ष्य एवं मानव-जीवनके परम ध्येय-भगवान्की प्राप्तिके लिये संकोच नहीं करते। परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य, कलह और हिंसाके वातावरणमें अशान्त स्थिति है। देशके कुछ सबको भगवन्नामका स्मरण-जप-कीर्तन करना चाहिये। अतः 'कल्याण' के भाग्यवान् ग्राहक-अनुग्राहक, भागोंमें तो हिंसाका नग्न ताण्डव दिखायी दे रहा है। पाठक-पाठिकाएँ स्वयं तथा अपने इष्ट-मित्रोंसे प्रतिवर्ष अधिकतर लोग मानसिक तनावके शिकार बनते जा रहे हैं। कलिका प्रकोप सर्वत्र व्याप्त है। प्रश्न यह होता है कि भगवन्नाम-जप करते-कराते आये हैं। इस स्थितिका समाधान क्या है? ऋषि-महर्षि, मुनि और गत वर्ष पंचानबे करोड नाम-जपकी प्रार्थना की गयी शास्त्रोंने इस स्थितिको अपनी अन्तर्दृष्टिसे देखकर बहुत थी। इस वर्ष विभिन्न स्थानोंसे जो सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं; पहलेसे यह घोषित कर दिया है कि 'कलिकालमें मानव-उनके अनुसार पचहत्तर करोड, बयालीस लाख, इक्कीस हजार, पाँच सौ मन्त्रके नाम-जप हुए हैं। पिछले वर्षकी कल्याण और विश्वशान्तिके लिये श्रीहरि-नामके अतिरिक्त कोई दूसरा सुलभ साधन नहीं है।' इसीलिये यह बात जोर अपेक्षा इस वर्ष श्रीभगवनाम जप एवं जापकोंकी संख्यामें देकर शास्त्रोंमें कही गयी है कि 'भगवान् श्रीहरिका नाम काफी कमी हुई है, जो शोचनीय है। भगवन्नाम-प्रेमी ही एकमात्र जीवन है। कलियुगमें इसके अतिरिक्त कोई महानुभावोंसे प्रार्थना है कि जपकी संख्यामें विशेष उत्साह दूसरा सहारा-चारा नहीं है'-दिखलायें, जिससे भगवन्नाम-जपकी संख्यामें और वृद्धि हो सके। आशा है, अधिक उत्साहसे नाम-जप होता रहेगा। हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्। कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥ जपकर्ताओंकी सूचना अभीतक लगातार आ रही है, किंतु विलम्बसे सूचना आनेपर उसे प्रकाशित करना सम्भव (ना०पूर्व० ४१।११५) हमारे शास्त्रोंके अतिरिक्त अनुभवी संत-महात्माओंने नहीं है। अत: जपकर्ताओंको जप पूरा होने (चैत्र शुक्ल भी भगवन्नाम-स्मरण-जपको कलियुगका मुख्य धर्म (ऐहिक-पूर्णिमा)-के अनन्तर तत्काल सूचना प्रेषित करनी चाहिये, पारलौकिक कल्याणकारी कर्तव्य) माना है। इतना ही नहीं, जिससे उनके जपकी संख्या प्रकाशित की जा सके। जगतुके समस्त धर्म-सम्प्रदाय भी किसी-न-किसी रूपमें आप महानुभावोंसे पुन: इस वर्ष पंचानबे करोड़ भगवान्के नाम-स्मरण-जपके महत्त्वको प्रतिपादित करते भगवन्नाम-मन्त्र-जपकी प्रार्थना की जा रही है। यह नाम-हैं। नामके जप-स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई भी जप अधिक उत्साहसे करना तथा करवाना चाहिये, जिससे नियम नहीं है। श्रीचैतन्यमहाप्रभुने भी कहा है— भगवन्नाम-जपकी संख्यामें उत्तरोत्तर वृद्धि हो। नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-निवेदन है कि पूर्ववत् कार्तिक शुक्ल पूर्णिमासे जप आरम्भ किया जाय और चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (वि० सं० स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः। 'हे भगवन्! आपने लोगोंकी विभिन्न रुचि देखकर २०७४)-तक पूरा किया जाय। पूरे पाँच महीनेका समय है। नित्य-सिद्ध अपने बहुत-से नाम कृपा करके प्रकट कर भगवान्के प्रभावशाली नामका जप स्त्री-पुरुष, ब्राह्मण-दिये। प्रत्येक नाममें अपनी सारी शक्ति भर दी और नाम-शूद्र सभी कर सकते हैं। इसलिये 'कल्याण' के भगवद्विश्वासी पाठक-पाठिकाओंसे हाथ जोड़कर विनयपूर्वक प्रार्थना स्मरणमें देश-काल-पात्रका कोई नियम भी नहीं रखा।' विपत्तिसे त्राण पानेके लिये आज श्रीभगवन्नामका की जाती है कि वे कृपापूर्वक सबके परम कल्याणकी स्मरण ही एकमात्र उपाय है। ऐसा कौन-सा विघ्न है, जो भावनासे स्वयं अधिक-से-अधिक जप करें और प्रेमके

भाग ९० कल्याण साथ विशेष चेष्टा करके दूसरोंसे भी जप करवायें। तो उसके प्रति मन्त्र-जपकी संख्या १०८ होती है, जिसमें नियमादि सदाकी भाँति ही हैं। भूल-चुकके लिये ८ मन्त्र बाद कर देनेपर गिनतीके लिये एक (१) जप प्रारम्भ करनेको तिथि कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा सौ मन्त्र रह जाते हैं। अतएव जिस दिन जो भाई-बहन मन्त्र-(दिनांक १४। ११। २०१६ ई०) सोमवार रखी गयी है। इसके जप आरम्भ करें, उस दिनसे चैत्र शुक्ल पुर्णिमातकके मन्त्रोंका बाद किसी भी तिथिसे जप आरम्भ कर सकते हैं, परंतु उसकी हिसाब इसी क्रमसे जोड़कर हमें अन्तमें सूचित करें। सूचना पूर्ति चैत्र शुक्ल पूर्णिमा, वि० सं० २०७४ दिन-मंगलवार भेजनेवाले सज्जनोंको जपकी संख्याके साथ अपना नाम-पता, (दिनांक ११।४।२०१७)-को कर देनी चाहिये।इसके आगे मोबाइल नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिये। भी अधिक जप किया जाय तो और उत्तम है। (८) प्रथम सूचना तो मन्त्र-जप प्रारम्भ करनेपर (२) सभी वर्णों, सभी जातियों और सभी आश्रमोंके भेजी जाय, जिसमें चैत्र पूर्णिमातक जितनी जप-संख्याका नर-नारी, बालक-वृद्ध, युवा इस मन्त्रका जप कर सकते हैं। संकल्प किया हो, उसका उल्लेख रहे और दूसरी बार जप (३) एक व्यक्तिको प्रतिदिन उपरिनिर्दिष्ट मन्त्रका आरम्भ करनेकी तिथिसे लेकर चैत्र पूर्णिमातक हुए कुल जपकी संख्या उल्लिखित हो। कम-से-कम १०८ बार (एक माला) जप अवश्य ही करना चाहिये, अधिक तो कितना भी किया जा सकता है। (९) प्रथम सूचना प्राप्त होनेपर जपकर्ताको सदस्यता (४) संख्याकी गिनती किसी भी प्रकारकी मालासे दी जाती है। द्वितीय सूचना भेजते समय सदस्य-संख्या अथवा अंगुलियोंपर या किसी अन्य प्रकारसे भी रखी जा अवश्य लिखनी चाहिये। सकती है। तुलसीजीकी माला उत्तम होगी। (१०) जप करनेवाले सज्जनको सूचना भेजने-(५) यह आवश्यक नहीं है कि अमुक समय भिजवानेमें इस बातका संकोच नहीं करना चाहिये कि आसनपर बैठकर ही जप किया जाय। प्रात:काल उठनेके जपकी संख्या प्रकट करनेसे उसका प्रभाव नष्ट हो समयसे लेकर चलते-फिरते, उठते-बैठते और काम करते जायगा। स्मरण रहे, ऐसे सामृहिक अनुष्ठान परस्पर उत्साहवृद्धिमें सहायक होकर प्रभावक बनते हैं। हुए सब समय-सोनेके समयतक इस मन्त्रका जप किया जा सकता है। (११) जापक महानुभावोंको प्रतिवर्ष श्रीभगवन्नाम-(६) बीमारी या अन्य किसी कारणवश जप न हो जपकी सूचना अवश्य दे देनी चाहिये। सके और क्रम टूटने लगे तो किसी दूसरे सज्जनसे जप (१२) सूचना संस्कृत, हिन्दी, मराठी, मारवाड़ी, करवा लेना चाहिये। पर यदि ऐसा न हो सके तो बादमें गुजराती, बँगला, अंग्रेजी, उर्दूमें भेजी जा सकती है। अधिक जप करके उस कमीको पूरा कर लेना चाहिये। सूचना भेजनेका पता-(७) संख्या मन्त्रकी होनी चाहिये, नामकी नहीं; नामजप-कार्यालय, द्वारा—'कल्याण' सम्पादकीय विभाग, उदाहरणके रूपमें— गीताप्रेस, पो०—गीताप्रेस—२७३००५ (गोरखपुर) हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। प्रार्थी— राधेश्याम खेमका हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ सम्पादक—'कल्याण' —सोलह नामके इस मन्त्रकी एक माला प्रतिदिन जपें राम जपु, राम जपु, राम जपु बावरे । घोर भव-नीर-निधि नाम निज नाव रे॥ एक ही साधन सब रिद्धि-सिद्धि साधि रे । ग्रसे कलि-रोग जोग-संजम-समाधि रे॥ भलो जो है, पोच जो है, दाहिनो जो, बाम रे । राम-नाम ही सों अंत सब ही को काम रे॥ जग नभ-बाटिका रही है फलि फूलि रे । धुवाँ कैसे धौरहर देखि तू न भूलि रे॥ राम-नाम छाड़ि जो भरोसो करै और रे । तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौर रे॥ [विनय-पत्रिका] श्रीभगवन्नाम-जपके जापक महानुभावोंको अपनी स्थायी सदस्य-संख्या एवं नाम-पता ( मोबाइल नम्बरसहित ) साफ-साफ अक्षरोंमें लिखना चाहिये, जिससे उनके ग्राम/नगरका शुद्ध नाम दिया जा सके। —सम्पादक

कृपानुभूति (१) जो भगवान्के अनन्य भक्त थे। वे भगवान्के भक्तों-सन्तोंकी भोलेनाथकी कृपा सेवा सर्मपण भावसे प्रेमपूर्वक किया करते थे। अखण्ड मेरे दामाद एक प्रतिष्ठित कम्पनीमें बड़े पदपर ब्रह्माण्ड-नायक प्रभुकी कृपा उनपर बरसती थी। वैश्य कार्यरत हैं। कार्यवश सालमें चार-पाँच महीने उन्हें जातिमें जन्म पाकर भी वे वणिक्-कर्मसे अधिक महत्त्व विदेशमें रहना होता है। वे स्वभावसे बहुत ही उदार, गौ, ब्राह्मण, गंगा, गीताकी सेवामें देते थे। श्रीगीता सत्संगमें मिलनसार और परोपकारी तो हैं ही साथ ही गणेशजीके उस समय बड़े त्यागी संत, महात्मा गीता-जयन्तीपर आया परम भक्त भी हैं। जब वे जयपुरमें होते हैं तो हर करते थे। परम पूज्य करपात्रीजी, स्वामी सच्चिदानन्दजी, बुधवारको जयपुरस्थित 'गढ गणेश' मन्दिरके दर्शन स्वामी नारदानन्द, स्वामी श्रीरामदेवजी महाराज ( जो भयंकर करने जरूर जाते हैं और लड्डका प्रसाद चढ़ाते हैं। यह सर्दी दिसम्बर-जनवरीमें भी) कमरके ऊपर कोई वस्त्र क्रम उनका १६-१७ सालसे चल रहा है। धारण नहीं करते थे, इन सबकी सेवामें ही वे भगवान्की अभी कुछ दिन पूर्वकी घटना है कि वे श्रीगणेशजीके सेवा समझते थे। उनके जीवनका सिद्धान्त था— दशर्नार्थ 'गढ़ गणेश' मन्दिरपर गये हुए थे। मन्दिरसे लौटते मन क्रम बचन कपट तिज जो कर भूसर सेव। समय एक गेरुआ वस्त्रधारी, तेजस्वी आकृतिवाले महात्माने मोहि समेत बिरंचि सिव बस ताकें सब देव॥ उनका रास्ता रोककर हँसते हुए कहा 'भई! पुत्रके दर्शन (रा०च०मा० ३।३३) तो हमेशा करते हो, कभी पिताको भी स्मरण कर लिया जीविकोपार्जनके लिये उनकी गनेशगंजमें एक आटा-

कपान्भात

दी और चले गये। उन्होंने लपककर उनके चरण-स्पर्श तो कर लिये, पर जबतक वे बातको समझते, वे जा चुके थे। आश्चर्य और कौतृहलके भावसे जब गाडीमें आकर उन्होंने डिब्बी खोली तो उसमें एक सुनहली चेन थी, जिसमें 'शिवजी'का पैन्डिल पड़ा हुआ था, (पैन्डिलमें शिवजी' का सुन्दर फोटो है) बादमें सर्राफको दिखलाया तो उसने बतलाया कि चेन २२ कैरिट सोनेकी है। आजके जमानेमें कौन एक अपरिचितको युँ सोनेकी चेन रास्ता चलते दे सकता है! ये तो प्रत्यक्ष 'शिवजी' ने उन्हें मार्गदर्शन दिया है; क्योंकि 'शिवभक्ति' के बिना तो सभी 'भक्तियाँ' अपूर्ण हैं। मेरे दामाद केवल गणेशजीको ही नमन कर रहे थे। बादमें उस जगह वे महात्माजी कभी

(२)

भगवान्का अनुग्रह

नमन करने लगे हैं। - करुणा मिश्रा

करो'—यह कहकर उन्होंने एक डिब्बी उनके हाथमें रख

संख्या १० ]

पुत्री रखती थी, उसको लेकर बिजलीका बिल चुकानेहेत् वे रेजकारी निकालकर बिजली कम्पनी पहुँचे। बिजलीका बिल और धनराशि दिया, परंतु यह क्या? काउण्टरपर कैशियरने बिलपर हस्ताक्षर कर दिया और कहा कि अभी-अभी आप धन देकर गये और कहा था, बिल लेकर आता हूँ। सूरजप्रसादजी स्तब्ध हो गये, बहुत कहा कि मैं तो अभी-

अभी आया हूँ, पहले आया ही नहीं, परंतु ईमानदार कैशियरने

चक्की थी, पर स्वयं वे कभी नहीं बैठते थे, केवल जाकर

निरीक्षण कर लिया करते थे। एक प्रसंग सन् १९४८ ई० के

आसपासका है, जब श्रीसूरजप्रसादजी परम विरक्त हो गये

थे, उनकी पत्नीका शरीर शान्त हो चुका था। चक्की बन्द

होनेके कगारपर थी। बिजलीका बिल चुकानेके लिये उनको

कठिनता हुई तो संचयपात्र (गुल्लक) जो उनकी बड़ी

नहीं दीखे। ये तो भोलेबाबाका बडा सुन्दर संकेत और उनसे धन नहीं लिया। थोडी देर विचारकर वहीं खडे रहे, फिर आर्त स्वरमें बोले—'धन्य हो प्रभु! आपने मेरे लिये भक्तके प्रति सुन्दर भाव था और भोलेनाथकी कृपा थी। अब वे गणेशजीके साथ-साथ 'भोलेनाथ' को भी स्मरण-इतना कष्ट उठाया। मेरा रूप धरकर आपने अनुग्रह किया।' उनके अश्रुधारा निकल पड़ी। घरपर आकर लीलाधरकी लीलासे विह्वल होकर, सब कार्य छोड़ दिया। केवल प्रभुका स्मरण, ध्यान, भजन ही उनकी दिनचर्या हो गयी। लखनऊमें एक श्रीकृष्णभक्त थे श्रीसुरजप्रसादजी, **'अनुग्रहाय भूतानाम्'** स्वतः सिद्ध हो गया।—उमाशंकर

पढ़ो, समझो और करो प्रेतात्माओंसे छुटकारा इसे घटना या दुर्घटना जो भी कहें, यह मेरे साथ सप्ताहतक उस उपद्रवसे मुक्त हो जाता। इस तरह करीब १९६५ ई० में घटित हुई थी। हुआ यूँ कि हठातु मेरे घरपर ६ महीनेतक यह प्रक्रिया चलती रही। ईंट-पत्थरोंकी बरसात शुरू हो गयी। यह घटना रोज रात्रि इसके बाद एक दिन जब मेरी पत्नी मुझे नाश्तेके लिये ९ बजे होती थी। मैं विज्ञानका शिक्षक भूत-प्रेतके अस्तित्वपर दही-चूड़ा देकर उसपर चीनी डाल ही रही थी कि हठात् यकीन नहीं करता था। अत: इसे शरारती तत्त्वोंका उपद्रव मेरे आगे दो दस-दसके नोट गिर पड़े। मैंने उन्हें उठाकर समझकर मैंने मकानके चारों तरफ चौकसी एवं प्रकाशकी कल्याण पत्रिकाके पन्नोंके बीच रख दिया। कुछ समय व्यवस्था कर दी। पर कुछ लाभ नहीं हुआ और ईंट-बाद देखा तो नोट गायब थे। पुन: शामके चार बजे मेरे आगे दस-दसके पुराने नोट गिरे। उसे उठाकर उसी समय

कुर्स्रान्त्री प्रेंडमा गीरी बनकर बिलुप्टा हो पीति। /अहर में श्री के पायमा । मीनी बिह्नास परिम है लेसह में धर सारा निकास हो।

पत्थरोंकी बरसात होती रही। हारकर पण्डितोंसे सलाह ली, उन्होंने महामृत्युंजय जपका सुझाव दिया, परंतु जब वे जप कर रहे थे, उनके आगे ही मानव-मल गिर गया और बाकी उपद्रव बदस्तुर जारी रहा। आश्चर्य यह कि यह नियत समयपर ही होता रहा। इसके बाद हताशासे ग्रसित होकर ओझा-गुणीका सहारा लिया, पर राहत नहीं मिली। बल्कि अब मेरी पत्नीको मानवाकार आकृति भी दिखने लगी, जिससे मेरी पत्नी भयभीत हो गयी। मैंने उन्हें ढाढस बँधाया और कहींसे सुनी हुई एक तरकीब अपनायी। लम्बी निश्चिन्त-सा हो गया था, परंतु एक रात सुप्तावस्थामें ही सूईमें धागा पिरोकर उन्हें इस हिदायतके साथ दिया कि उस दुष्ट छायाने मेरी पत्नीको उठाकर मेरे ऊपरसे होते

जब वह आकृति दिखायी दे, इस सूईको उसके कपड़ेमें

लगा दें। उन्होंने वैसा ही किया, मैं भी साथ ही था। धागेका पुलिन्दा घूमने लगा और वह आकृति भागने लगी। जब पुलिन्देका घूमना बन्द हुआ, हम धागेका अनुसरण करते आगे बढ़ने लगे। घरसे थोड़ी दूरपर सूई मिली, जो लम्बवत् खड़ी थी एवं उसकी नोकमें एक सीपका छोटा टुकड़ा फँसा था। मैंने उस सीपके टुकड़ेको निकालकर आगमें जला दिया। इसके बाद करीब १५ दिनोंतक कोई घटना नहीं घटी। मैंने चैनकी साँस ली, परंतु १५ दिनोंके बाद अब यह विपदा नये रूपमें प्रकट हुई। अब ईंट-पत्थरकी बरसात तो नहीं होती थी; बस, आकृतिके प्रकट होनेसे पूर्व करीब दस मिनटतक जले मांसकी दुर्गन्ध आती थी, फिर आकृति प्रकट हो जाती थी। चूँकि हमने उससे राहत पानेकी विधि ढूँढ़ ली थी अत: पुन: उसी सूईवाली विधिका प्रयोग शुरू कर दिया। अब उस सुईकी नोकपर प्राप्त सीपके टुकड़ेको नष्ट करनेके लिये अपनी प्रयोगशालासे अम्लराज बनाकर उसमें डाल देता था, जिससे वह सीप

मजदूरी लेने आये मजदूरोंको दे दिया। इसी तरह असमंजस तथा ऊहापोहके बीच समय गुजरता रहा। हाँ, इसी बीच एक जारमें करीब ५ किलो चीनी भरी मिली तथा दूसरे दिन एक दूसरे जारमें बीड़ीके करीब ५०० टुकड़े भरे मिले। रातको सोते समय पत्नी दीवालकी तरफ और मैं बाहरकी तरफ सोता। चूँकि उस उपद्रवमें कुछ कमी आ गयी थी और लड़नेकी युक्ति भी मिल गयी थी। अत: कुछ

हुए पलंगके नीचे जमीनपर फेंक दिया। मैं उठकर पत्नी

जो बेहोश थी, उसे होशमें लानेकी चेष्टा करने लगा, परंतु

उसे होश नहीं आया। तब मैंने रामायण-पाठ करना शुरू

कर दिया। मूर्छित अवस्थामें ही पत्नीके मुँहसे निकला—

' मैंंने बहुत रामायण पढी है ।' फिर मैंंने हनुमानचालीसाका

पाठ करना शुरू किया। बेहोशीमें ही पत्नी बोली—'इसे पढ़ना बन्द करो, मुझे दुर्गन्ध लग रही है।' मैंने पाठ बन्द कर दिया। कुछ देर बाद पत्नी होशमें आ गयी। अब मुझे एक दूसरा हथियार भी मिल गया था, पर मैंने सोचा इस तरह कितने दिनोंतक मुकाबला करता रहूँगा। यही सोचकर एक पहुँचे हुए साधू मौनी बाबाके पास गया, जो जमीनके अन्दर एक खोह बनाकर रहते थे। मैंने खोहमें जाकर उन्हें अपनी विपदा सुनायी। उन्होंने कहा—' मुझे सांसारिक बातोंसे क्या लेना देना।' इसपर मेरा प्रतिप्रश्न था 'तो हम सांसारिक जीव कहाँ जायँ ?''इसपर उन्होंने कहा कि आपकी पत्नीको जिन्नने पकड़ लिया है। आप एक सूअर ले आइये और

उसे घरमें बाँधकर रखिये। सुअरकी आवाजसे जिन्न भाग

संख्या १०]	पढ़ो, समझे	ो और करो	४७
*****************************	5 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 55 5	****************	<u> 55 55</u>
घरमें प्रवेश करने लगा चौखटके पास ही करी	ब एक सूप	और वह पुजारी डालीमें चावल तथा एक बड़े ताँबे	कि
सूखा मानव-मल गिरा। सूअरके रखनेपर भी मे	- •	बर्तनमें जल लेकर लोगोंका इलाज करने लगा। इसके ब	ग्रद
खत्म नहीं हुई। मैंने सूअर एक डोमको दे दिय		उसने मुझे बुलाया और मेरे द्वारा पहले ही कही बातों	को
इसी तरह एक रात वह जिन्न मेरी पत		दुहराकर मुझे भी चावल-जल देकर मुक्तिका आश्वा	
पकड़कर खींचने लगा। मैंने पत्नीके दोनों ह	ाथ पकड़	भी दिया, परंतु मुझे सन्तोष नहीं हुआ। इसपर मेरे ह	
लिये। थोड़ी देरकी इस खींचातानके बाद मैं आँ	गनमें खाट	पूछनेपर उसने १५ दिनों बाद आनेको कहा और दू	_
बिछाकर सो गया, पत्नी भी साथ ही सोयी थी।	हठात् उस	लोगोंके इलाजमें व्यस्त हो गया। तरह-तरहके लोग उ	
जिन्नने खाट उलट दी। अब मैंने सोचा इससे मुर्ा	क्तके लिये	तरह-तरहकी समस्या। कोई बीमार था, किसीके घर चं	ोरी
कुछ और करना चाहिये। इसी उधेड़-बुनमें <sup>:</sup>	सुबहके ९	हुई थी, किसीको नौकरी नहीं मिल रही थी, किसी	का
बज गये। इसी समय मेरी मुलाकात एक ग्रामी	ण बुजुर्गसे	व्यापार मन्दा तो किसीका पत्नीसे विग्रह। पुजारी सभी	को
हुई। उन्होंने कहा अगर बाबाने चाहा होता तो	मुक्ति मिल	चावल और जल देता और सभीको कठिनाइयोंसे मुक्ति	का
जाती, खैर अब आप तिमाई विषहर देवी मन्दिर, ज	गे बछवाड़ा	आश्वासन भी। इतनेमें भोर हो गयी और साथ ही :	इस
स्टेशनसे कुछ किलोमीटरकी दूरीपर अवस्थित	है, जाइये।	सिलसिलेकी समाप्ति भी। इसके बाद वहीं आये वु	न्छ
मैं दूसरे ही दिन समस्तीपुर जाकर सुबह गाड़ी	पकड़कर	लोगोंके साथ मैं तेधड़ा स्टेशन आ गया, उनमेंसे वु	ु छ
बछवाड़ा गया। वहाँ उतरकर पत्नीके साथ पैद	ल ही रेल	गंगास्नान करने सिमरिया जा रहे थे। मैं भी गंगास्नान	कि
लाइनके किनारे-किनारे मन्दिर जानेके लिये नि	कल पड़ा।	उद्देश्यसे पत्नीके साथ ही सिमरिया गंगातटपर पहुँच गर	ग्र ।
सहसा मैंने देखा रेललाइनके किनारे मेरे साथ-	-साथ एक	वहीं किसी अज्ञात प्रेरणावश हम दोनों पति-पत्नीने देव	घर
पत्थरका टुकड़ा भी लुढ़कते हुए चल रहा है। जग	ाह सुनसान	बाबाधाम जानेका निर्णय लिया और पैदल ही पुल पार	कर
थी अत: किसीके द्वारा पत्थर फेंकनेकी सम्भाव	ना भी नहीं	गंगाजलके साथ हथिदह स्टेशन आया। वहीं चूड़ा-अ	пम
थी। लुढ़कता पत्थर जब रुकता, दूसरा पत्थर उ	उसके साथ	खाकर देवघरकी गाड़ी, जो शाम ६ बजे आनेवाली ध	
ही लुढ़कने लगता। मैंने जब पत्नीका ध्यान	इस तरफ	की प्रतीक्षा करने लगा। ९ बजे रातमें गाड़ी आयी, बड़ी भी	
दिलाया तो वे बोलीं, वह जिन्न तो साथ-साथ	। चल रहा	थी। किसी तरह सामनेके डिब्बेमें घुसा, पर यह आरि	भ्रत
है। खैर, किसी तरह दोपहरको हम तिमाई वि		डिब्बा था। टी०टी० बिगड़ने लगा तो अगले स्टेशन	पर
मन्दिर पहुँचे। वहाँ मेरी मुलाकात उजियारपुर ग		उतर जानेकी बात कहकर उसे शान्त किया। इसी बी	चि
व्यक्तिसे हुई, वह भी मन्दिरमें अपनी फरियाद ले		किसीने गाड़ीकी जंजीर खींच दी और गाड़ी रुक ग्य	
था। उसने बताया कि पुजारी बहुत सिद्ध पुरु		टी॰टी॰ पुन: डिब्बेसे उतरनेकी जिद करने लगा और	
इससे पहले वह इनके पास आकर अपनी मुरा	•	पत्नीके साथ ही उस सुनसान जगहमें उतर पड़ा। इ	
है। एक मुकदमेके सिलसिलेमें उसने खर्चके सा		अफरा-तफरीमें गंगाजल न जाने कहाँ छूट गया। बि	
भविष्यवाणी की थी, जो सत्य सिद्ध हुई। व		प्लेटफार्मके गाड़ीमें चढ़नेमें दिक्कत होने लगी, उस	
आपकी मुसीबतसे छुटकारा अवश्य दिलायेगा।		भारी भीड़। मैं एक डिब्बेसे दूसरे डिब्बेमें चढ़नेकी बेव	
पुजारीसे भी भेंट हुई और उसने आश्वासन दिय	_	कोशिश करता रहा। इतनेमें एक डिब्बेके नजदीक जाने	
मिल जायगी। वह व्यक्ति चला गया, परंतु मै	-	एक लड़कीने मेरी पत्नीको पुकारा और हाथ पकड़व	
पास ही रुक गया। उस दिन मन्दिरमें टेक (मु		ऊपर खींच लिया। उसने भ्रमवश उसे अपनी परिचिता सग	
लोगोंकी मुक्तिके लिये होनेवाला धार्मिक अनुष्ठ		लिया था, अस्तु हम किसी तरह गाड़ीमें पुन: चढ़ गये	
था। जूनका महीना था, शामके पाँच बजते-ब		वैद्यनाथधाम पहुँचकर रात प्लेटफार्मपर ही बितार	
बड़ी संख्यामें पीड़ित व्यक्ति मुक्तिके लिये आकुल		सुबह होनेपर अब कहाँ जाऊँ—यही सोच रहा था	
हो गये थे। पुजारी आराधना करने लगा। शाम	•	याद आया मेरे ही गाँवका रामचन्द्र चौधरी यहीं प्राइ	
बजे वह मंचसे नीचे उतरा। एक व्यक्ति मृदंग ब	प्रजाने लगा	बिजली मिस्त्रीका काम करता है। रिक्शाकर मैं चौधर्र	कि

भाग ९० यहाँ पहुँचा। वहीं नित्यकर्मसे निवृत्त होकर स्नानादिके हिस्सा बताकर हमें दे दिया। मैंने उसे पैसे दिये, एक बाद मन्दिर-परिसर पहुँचा। गंगाजल तो रास्तेमें ही छूट शिव-चालीसा खरीदकर उसमें टुकड़ेको रखा और गया था। अत: फूल खरीदा और मन्दिर-परिसरमें ही वैद्यनाथधामके लिये वापस हो लिया। लौटकर चौधरीजीको अवस्थित चन्द्रकृपसे जल लिया। तत्पश्चात् पत्नीसहित सारी बातें बतायीं और पुन: सन्ध्या-शृंगारका दर्शन किया। बाबा वैद्यनाथका जलाभिषेक किया। वापस चौधरीके यहाँ वापस आकर रात्रि भोजनके पश्चात् सो गया। सुबह निवृत्त होकर पलंगपर बैठा था। मेरी पत्नी चौधरीजीकी पत्नीके आकर भोजन हुआ और उसके बाद अपनी मुसीबतका हाल उनसे कहने लगा। उन्होंने एक तान्त्रिकका पता बताया साथ बिजलीके चूल्हेपर भोजन बनानेके क्रममें पानी उबाल जो ५०० रुपये लेकर इस मुसीबतसे छुटकारा दिला सकता रही थीं। चौधरीजी चाय पीने बाहर किसी दुकानपर गये था। उस समय मेरी तनख्वाह मात्र १२५ रुपये ही थी, हुए थे। मैं पलंगपर लेटकर गौरैयोंका आना-जाना और अतः चार महीनेका वेतन मुझे अत्यधिक लगा। अतः उस कल्लोल देख रहा था। इसी क्रममें एक मिट्टीका टुकडा नीचे गिरा, इतनेमें ही एक ईंटका टुकड़ा चौधरीजीकी पत्नीके विचारको छोड दिया। रामचन्द्र चौधरीके पास किरायेके मकानमें एक कोठरी और एक बरामदा था। वे सपत्नीक समीप गिरा। जिसे देखकर चौधरीजीकी पत्नी भयभीत कोठरीमें रहते थे। अत: उन्होंने अपना बरामदा हमारे रहनेके तथा मेरी पत्नी मूर्छित हो गयीं। इतनेमें ही चौधरीजी भी लिये दे दिया। शामको फिर मन्दिर जाकर सन्ध्या-शृंगारका वापस आ गये। सारी बातें सुनकर बोले, 'यह मकान अवलोकन किया। वापस आकर खाना खाया और सो तान्त्रिकद्वारा बाँधा हुआ है, यहाँ प्रेत उपद्रव नहीं हो सकता, गया। सुबह पत्नीने रात देखे गये सपनेकी बात कही। मुहल्लेके किसी शरारती बच्चेने ही ऐसी हरकत की होगी।' सपनेमें एक गौरवर्ण सुन्दर साधुने दर्शन दिया और कहा इतनेमें ही दो और ईंटें उनके सामने ही गिरीं। वह भी कि 'तुम एक जंजालमें पड़ी हो, अगर शिवरात्रिके दिन विचलित हो गये और मुझसे पैसा लेकर जल्दी यन्त्र बाबा वासुकीनाथको चढ़ाये गये मौरी (सिरके शृंगारकी बनवानेहेतु चले गये। थोड़ी देर बाद ताँबेका यन्त्र लेकर टोपी)-का कोई भी हिस्सा यन्त्रमें मढवाकर पहन लो तो लौटे और बोले—'इसकी कीमत दो आनेसे अधिक नहीं होनी चाहिये, परंतु दुकानदारने दस आने ले लिये।' मैंने संकटसे छुटकारा मिल जायगा। यद्यपि उसका मिलना दुष्कर है, परंतु चेष्टा करनेसे प्राप्त हो जायगा।' कहा—'समयपर मिल गया, यही बहुत है।' उनसे यन्त्र मैंने भी पत्नीको बताया कि आज मेरे मनमें भी लेकर उसे खोलकर वासुकीनाथसे लाये गये कागज एवं वासुकीनाथ जानेका खयाल आ रहा था। चलो, वहीं चलें। वैद्यनाथधामका शृंगार चन्दन डालकर यन्त्रको बन्द किया। इसी विचारसे हम शिवगंगा (देवघरका बृहत् तालाब) पत्नी अबतक बेहोश ही पड़ी थी। चौधरीजीके कहनेपर गये और वहींसे बस पकड़कर वासुकीनाथ पहुँचे। वहाँ एक धागेमें यन्त्रको पिरोकर पत्नीकी गर्दनमें पहना दिया। स्नानकर कूपसे जल लेकर वासुकीनाथका जलाभिषेक यन्त्र पहनते ही पत्नी होशमें आ गयी और बोली—'वही किया। वहाँ दक्षिणाके लिये संग लगे पण्डेको चार आने प्रेतछाया यहाँ खड़ी थी। यन्त्र पहनते ही भाग खड़ी हुई।' दक्षिणा देकर वांछित मौरीका कोई भाग देनेका आग्रह वह स्वस्थ हो चुकी थी। उन्होंने इसके लिये मौरीको श्रेय किया। वह मन्दिर-परिसरमें चला गया, थोड़ी देर बाद दिया जबिक चौधरीजीका कहना था कि यह धामचन्दनका लाल कपड़ेका एक टुकड़ा लेकर लौटा, जो शिव-पार्वतीके प्रभाव है। जो भी हो, तीन-चार दिन वहीं रुका रहा और गठबन्धनमें प्रयुक्त कपड़ेका हिस्सा था। मैंने पुन: उसे उसके बाद अपने गाँव वापस आ गया। उस प्रवासके शिवरात्रिके दिन चढाये गये मौरीके अंशकी बात कही। अन्तिम दिन पत्नीको स्वप्नमें बाबाके दर्शन हुए और उन्होंने उसने कहा वह तो नहीं मिला। मैंने पुन: उसे आठ आने आशीर्वाद देकर कहा—'अब तू जा, तुझे यन्त्रकी भी जरूरत पैसे देनेका प्रस्ताव दिया, जिसपर वह पुनः चेष्टा करने नहीं पड़ेगी', और सचमुच उस दिनके बाद किसी तरहका चला गया। कुछ समय बीतनेपर वह लौटा उसके हाथमें उपद्रव नहीं हुआ और मैं भय-चिन्तासे मुक्त हो गया। लाल रंगका अखबारका टुकड़ा था, जिसे उसने मौरीका —कुलानन्द झा

मनन करने योग्य

मनन करने योग्य

### सुख-दुःखका साथी

काशिराजके राज्यकी बात है, एक व्याधने जहरसे बुझाया हुआ बाण हरिनोंपर चलाया। निशाना चूककर

बाण एक बड़े वृक्षमें धँस गया। जहर सारे वृक्षमें फैल गया। उसके फल एवं पत्ते झड़ गये और वृक्ष सूखने

संख्या १० ]

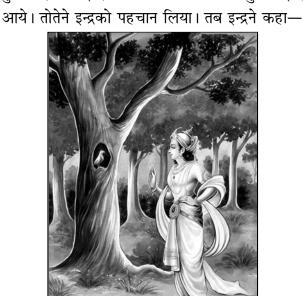
लगा। उस पेड़के खोखलेमें बहुत दिनोंसे एक तोता

रहता था। उसका पेड़में बड़ा प्रेम। अतः पेड़ सूखनेपर भी वह उसे छोड़कर नहीं गया था। उस धर्मात्मा और

कृतज्ञ तोतेने बाहर निकलना छोड़ दिया और चुगा-पानी

न मिलनेसे वह भी सुखकर काँटा हो गया। वह धर्मात्मा तोता अपने साथी वृक्षके साथ ही अपने प्राण देनेको

तैयार हो गया। उसकी इस उदारता, धीरज, सुख-दु:खमें समता और त्यागवृत्तिका वातावरणपर बड़ा असर हुआ। देवराज इन्द्रका उसके प्रति आकर्षण हुआ। इन्द्र



'प्यारे शुक! इस पेड़पर न पत्ते हैं, न कोई फल। अब

कोई पक्षी भी इसपर नहीं रहता। इतना बड़ा जंगल पड़ा है, जिसमें हजारों सुन्दर फल-फूलोंसे लदे हरे-भरे वृक्ष

हैं और उनमें पत्तोंसे ढके हुए रहनेके लायक बहुत खोखले भी हैं। यह वृक्ष तो अब मरनेवाला ही है। इसके

बचनेकी कोई आशा नहीं है। यह अब फल-फूल नहीं सकता। इन बातोंपर विचार करके तुम इस ठूँठे पेड़को

छोड़कर किसी हरे-भरे वृक्षपर क्यों नहीं चले जाते?' धर्मात्मा तोतेने सहानुभूतिकी लम्बी साँस छोड़ते हुए दीन वचन कहे—'देवराज! मैं इसीपर जन्मा था, इसीपर

पला और इसीपर अच्छे-अच्छे गुण भी सीखे। इसने सदा बच्चेके समान मेरी देख-रेख की, मुझे मीठे फल दिये

और वैरियोंके आक्रमणसे बचाया। हे देवेन्द्र! इन्हीं सब कारणोंसे मेरी इस वृक्षके प्रति भक्ति है, इसीलिये में यहाँसे

अन्यत्र जाना नहीं चाहता। ऐसी दशामें आप मेरी सद्भावनाको व्यर्थ बनानेकी चेष्टा क्यों करते हैं? आज

देवताओं के राजा होकर मुझे यह बुरी सलाह क्यों दे रहे

किया; आज जब यह शक्तिहीन और दीन हो गया, तब

इसकी बुरी अवस्थामें मैं इसे छोड़कर अपने सुखके लिये कहाँ चला जाऊँ ? जिसके साथ सुख भोगे, उसीके साथ दु:ख भी भोगूँगा। मुझे इसमें बड़ा आनन्द है। आप

हैं ? श्रेष्ठ पुरुषोंके लिये दूसरोंपर दया करना ही महान् धर्मका सूचक है। दयाभाव श्रेष्ठ पुरुषोंको सदा ही आनन्द प्रदान करता है।\* जब इसमें शक्ति थी, यह सम्पन्न था, तब तो मैंने इसका आश्रय लेकर जीवन धारण

में इसे छोड़कर चल दूँ? यह कैसे हो सकता है।' तोतेकी मधुर मनोहर प्रेमभरी वाणी सुनकर इन्द्रको बड़ा सुख मिला। उन्हें दया आ गयी। वे बोले— 'शुक! तुम मुझसे कोई वर माँगो।' तोतेने कहा—

'आप वर देते हैं तो यह दीजिये कि यह मेरा प्यारा पेड़ पूर्ववत् हरा-भरा हो जाय।' इन्द्रने अमृत बरसाकर पेड़को सींच दिया। उसमें फिरसे नयी-नयी शाखाएँ

निकल आयीं, पत्ते और फल लग गये। वह पूर्ववत् श्रीसम्पन्न हो गया और वह तोता भी अपने इस आदर्श व्यवहारके कारण आयु पूरी होनेपर देवलोकको

प्राप्त हुआ। [महाभारत]

\* अनुक्रोशो हि साधूनां महद्धर्मस्य लक्षणम्। अनुक्रोशश्च साधूनां सदा प्रीतिं प्रयच्छति॥ (महा० अनु० ५।२४)

### उन्होंने कहा कि ८० प्रतिशत लोग अपने कुकृत्योंपर पर्दा

स्वतन्त्रताप्राप्तिके बाद देशमें गोरक्षाकी चर्चा किसी न किसी रूपमें निरन्तर होती रही है। गोरक्षाके दो पहलु हैं— डालनेके लिये गोरक्षाकी बात करते हैं। यद्यपि कभी-कभी अच्छे कार्योंमें भी कुछ थोडेसे

गोरक्षण और गोसंवर्द्धन। गोरक्षणका तात्पर्य है कि देशमें गोहत्या पूर्ण रूपसे बन्द होनी चाहिये तथा गोसंवर्द्धनका

मतलब है कि भारतीय देशी गायोंकी नस्ल सुधारी जाय और उनकी सम्पूर्ण प्रजातियोंका संरक्षण हो। ये दोनों कार्य

सरकारके सहयोगके बिना सम्पन्न नहीं हो सकते। अंग्रेजोंके शासनकालमें स्वाभाविक रूपसे गोरक्षापर कोई

ध्यान नहीं दिया गया, परंतु आजादी मिलनेके बाद भारतकी जनताको यह आशा थी कि देशमें पूर्ण रूपसे गोहत्या बन्द होगी तथा गोसंवर्द्धन भी हो सकेगा, परंतु ये सब हुआ नहीं।

कांग्रेसके शासनकालमें गोरक्षाके लिये सत्याग्रह आन्दोलन और अनशन आदि भी हुए, जिसमें आंशिक सफलता तो मिली, उत्तर भारतके कुछ राज्योंमें गोहत्या बन्द हुई, परंतु

देशके कई अन्य राज्योंमें आज भी गोहत्या हो रही है। गोहत्या-विरोधी आन्दोलनोंमें भाजपाके कार्यकर्ताओंने पुरी तरहसे भाग लिया। पुर्व सरसंघचालक आदरणीय गुरुजी

श्रीगोलवलकरजीने गोरक्षा सत्याग्रहमें पूर्ण सहयोग प्रदान

किया। पूर्व प्रधानमन्त्री श्रीअटलबिहारी वाजपेयीजीकी एक बार तेरह दिनोंकी सरकार बनी थी, जिसमें भाजपाकी नीतिके अनुसार संसद्में तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्माका भाषण हुआ था, जिसमें राष्ट्रपतिने भारतमें पूर्ण रूपसे गोरक्षा करनेकी भी चर्चा की थी। स्वयं अटलबिहारी वाजपेयीजीने

समय-समयपर अपने भाषणोंमें गोरक्षापर विशेष रूपसे प्रकाश डाला। यद्यपि अटलबिहारीजीके नेतृत्वमें गठबन्धनकी सरकार होनेके कारण वे गोरक्षाका कार्य नहीं कर सके, परंतु वे चाहते थे कि भारतमें गोहत्याका काला कलंक समाप्त हो

वर्तमान समयमें भगवत्कृपासे भाजपाकी सरकार पूर्ण

बहुमतसे बनी है। स्वाभाविक रूपमें भारतवासियोंकी यह अपेक्षा रही है कि भाजपाकी सरकार आनेपर गोहत्याका

और गोसंवर्द्धन भी किया जाय।

काला कलंक समाप्त हो जायगा। गोरक्षण और गोसंवर्द्धनका कार्य सरकारके सहयोगसे पूर्ण रूपसे सम्पन्न हो सकेगा।

सबसे व्यथित होकर ही प्रधानमन्त्रीने इस प्रकारका वक्तव्य दिया होगा, परंतु यह कहना कि ८० प्रतिशत लोग ऐसा करते हैं, उचित नहीं है। समाजमें बहुत थोड़े लोग होंगे, जो

गोरक्षाकी आडमें गलत कार्य करते हैं। आज भी देशमें कई ऐसे स्थल हैं, जहाँ गोसेवा रचनात्मक

रूपसे होती है। एक ऐसा भी स्थान है, जहाँ लाखोंकी संख्यामें गोसेवा हो रही है। यह सब कार्य गोभक्तोंके सहयोगसे ही सम्भव है। प्रधानमन्त्रीजीके इस प्रकारके वक्तव्यसे गोसेवाके कार्यमें शिथिलता आनी स्वाभाविक है। अत: अपने प्रधान-

मन्त्रीजीको इस सम्बन्धमें पुनर्विचारकर सावधानी बरतनी चाहिये, साथ ही विपक्षीदलोंसे भी यह अनुरोध है कि अपवाद-स्वरूप घटनेवाली इन घटनाओंको राजनीतिक रंग देनेका

प्रयास न करें, कारण इससे गोरक्षामें बाधा उत्पन्न होती है।

गाय हमारी अस्मिता है। गायको हम माता कहते हैं। भारतीय संस्कृतिके गऊ, गंगा, गीता और गायत्री—ये चार स्तम्भ हैं। इन चारोंको अपने शास्त्रोंमें 'माँ' शब्दसे सम्बोधित किया गया है। माँ अपनी सर्वोपरि श्रद्धाकी अभिव्यक्ति है।

गऊमातामें सभी देवी-देवताओंका निवास है। गायकी सेवा-पूजासे सभी देवोंकी पूजा-अर्चा सम्पन्न हो जाती है। हमारे कर्मानुष्ठान, यज्ञ-यागादि तथा कोई भी धार्मिक कृत्य गऊमाताके बिना सम्पन्न नहीं हो सकते। आर्थिक दृष्टिसे

भी भारतमें गायका कम महत्त्व नहीं है। इन सभी बातोंको

ध्यानमें रखकर सरकारको सावधान होना चाहिये और केन्द्रीय

असामाजिक तत्त्व आकर उसे बदनाम कर देते हैं। इन

कानूनके द्वारा पूरे देशमें गोहत्या बन्द करनी चाहिये। साथ ही गोसंवर्द्धनकी दृष्टिसे गोरक्षाको प्रभावी बनानेके लिये केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलमें एक पृथक् मन्त्रालयका गठनकर योजनाबद्ध तरीकेसे गायके लिये चरागाह, चिकित्सालय

आदिकी व्यवस्था करनी चाहिये तथा निजी क्षेत्रमें इन कार्योंको करनेवाले लोगोंको प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिये। गोरक्षा पिछले दिनों गोरक्षाके नामपर एक-दो घटनाएँ इस का यह महान कार्य सरकार और जनता दोनोंके सहयोगसे प्रकारकी हुईं, जो वास्तवमें शर्मसार करती हैं। इन घटनाओंसे ही सम्पन्न होना सम्भव है।

व्यविभाग्ने विशेष्ट्र क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट विभाग विभाग विभाग विभाग क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक क

#### कल्याणके पाठकोंसे नम्र निवेदन

आगामी वर्षका कल्याण विशेषांक 'श्रीशिवमहापुराणाङ्क' [हिन्दीभाषानुवाद—प्रथम भाग, श्लोकाङ्कसहित] समयानुसार प्रेषित करनेकी चेष्टा है। वार्षिक सदस्यता शुल्क ₹२२० है। आप अपना सदस्यताशुल्क—

१-गीताप्रेसकी निम्नलिखित पुस्तक दुकानोंपर रसीद लेकर जमा कर सकते हैं।

२-ऑन लाईन—gitapress.org पर Online Magazine Subscription को click करके शुल्क जमा किया जा सकता है।

३-आप मनीआर्डर/चेक/ड्राफ्ट, कल्याण-कार्यालय, पो० गीताप्रेस, गोरखपुर भेज सकते हैं।

४-मनीआर्डरसे शुल्क भेजनेपर अलगसे भी अपना पूरा पता (पिनकोडके साथ), ग्राहक-संख्या, मोबाईल नम्बर आदि भेजना आवश्यक है।

५-यदि आपके द्वारा भेजा गया सदस्यता शुल्क १५ दिसम्बरतक हमें प्राप्त नहीं होता है तो पूर्वकी भाँति VPP से अंक आपको प्रेषित कर दिया जायेगा।

विशेष—पंचवर्षीय ग्राहक बनें।—सदस्यता शुल्क ₹११०० मात्र।

#### कुछ दिनोंसे अनुपलब्ध पुस्तक अब उपलब्ध

भजन-सुधा, सजिल्द (कोड 1783) — प्रस्तुत पुस्तकमें ४१९ भजनोंका अनुपम संग्रह है। इसमें गणेश, शिव, भगवान् विष्णु, भगवान् राम, श्रीकृष्ण, देवीके विभिन्न भजन तथा श्रीहनुमान्जीके भजन दिये गये हैं। प्रत्येक देवताके भजनके प्रारम्भमें संस्कृतमें उनके स्तोत्र भी संग्रहीत हैं। विभिन्न रागोंमें निबद्ध प्राचीन

# एवं अर्वाचीन संतों तथा मारवाड़ी भाषाके विभिन्न भजनोंका यह संग्रह सबके लिये उपयोगी है। मूल्य ₹६०

#### 'गीताप्रेस' गोरखपरकी निजी दुकानें इन स्टेशन-स्टालोंपर कल्याणके ग्राहक बन सकते हैं दिल्ली (प्लेटफार्म नं० 5-6): नयी दिल्ली (नं० 14-15): **इन्दौर-452001** जी० 5, श्रीवर्धन, 4 आर. एन. टी. मार्ग ऋषिकेश-249304 गीताभवन, पो० स्वर्गाश्रम **हजरत निजामद्दीन** [दिल्ली] (नं॰ 4-5): कोटा [राजस्थान] कटक-753009 भरतिया टावर्स, बादाम बाडी

**कानपुर-208001** 24/55, बिरहाना रोड

कोयम्बट्र-641018 गीताप्रेस मेंशन, 8/1 एम, रेसकोर्स कोलकाता-700007 गोबिन्दभवन; 151, महात्मा गाँधी रोड गोरखपुर-273005 गीताप्रेस-पो० गीताप्रेस

चेन्नई-600010 इलेक्ट्रो हाउस, रामनाथन स्ट्रीट किलपौक जलगाँव-425001 7, भीमसिंह मार्केट, रेलवे स्टेशनके पास

दिल्ली-110006 2609, नयी सडक नागपुर-440002 श्रीजी कृपा कॉम्प्लेक्स, 851, न्यू इतवारी रोड पटना-800004 अशोकराजपथ, महिला अस्पतालके सामने

बेंगलुरु-560027 7/3, सेकेण्ड क्रास, लालबाग रोड भीलवाडा-311001 जी 7, आकार टावर, सी ब्लाक, गान्धीनगर मुम्बई-400002 282, सामलदास गाँधी मार्ग (प्रिन्सेस स्ट्रीट) राँची-834001 कार्ट सराय रोड, अपर बाजार, बिडला गद्दीके प्रथम तलपर

मित्तल कॉम्प्लेक्स, गंजपारा, तेलघानी चौक ( छत्तीसगढ) रायपुर-492009 वाराणसी-221001 59/9, नीचीबाग 2016 वैभव एपार्टमेन्ट, भटार रोड सुरत-395001

भवन, वनकाली, पशुपति क्षेत्र।

हरिद्वार-249401 सब्जीमण्डी, मोतीबाजार **हैदराबाद**-500095 41, 4-4-1, दिलशाद प्लाजा, सुल्तान बाजार काठमाडौं (नेपाल) पसल नं० 6,7,8, माधवराज सुमार्गी स्मृति

(नं० 1); बीकानेर (नं० 1); गोरखपुर (नं० 1); गोण्डा

(नं० 1); **कानपुर** (नं० 1); **लखनऊ** [एन० ई० रेलवे]; वाराणसी (नं० 4-5); मुगलसराय (नं० 3-4); हरिद्वार (नं० 1); **पटना** (मुख्य प्रवेशद्वार); **राँची** (नं० 1); **धनबाद** 

(नं० 2-3); मुजफ्फरपुर (नं० 1); समस्तीपुर (नं० 2);

**छपरा** (नं० 1); सीवान (नं० 1); हावडा (नं० 5 तथा 18 दोनोंपर); कोलकाता (नं० 1); सियालदा मेन (नं० 8); **आसनसोल** (नं० 5); **कटक** (नं० 1); **भ्वनेश्वर** (नं० 1);

अहमदाबाद (नं० 2-3);राजकोट (नं० 1);जामनगर (नं०1); **भरुच** (नं० 4-5): वडोदरा (नं० 4-5): **इन्दौर** (नं० 5): जबलपुर (नं० 6); औरंगाबाद [महाराष्ट्र] (नं० 1);

गोंदिया [महाराष्ट्र] (नं०1); सिकन्दराबाद [आं० प्र०] (नं० 1); विजयवाड़ा (नं० 6); गुवाहाटी (नं० 1);

खड्गपुर (नं० 1-2); रायपुर [छत्तीसगढ] (नं० 1); बेंगलुरु (नं० 1); यशवन्तपुर (नं० 6); हुबली (नं० 1-2); श्री सत्यसाईं प्रशान्ति निलयम् [दक्षिण-मध्य रेलवे] (नं० 1)।

**फुटकर पुस्तक-दूकानें— चूरू-**ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, पुरानी सड़क, **ऋषिकेश-**मुनिकी रेती; **बेरहामपुर-** म्युनिसिपल मार्केट काम्प्लेक्स, के॰ एन॰ रोड, **नडियाड** (गुजरात) संतराम मन्दिर, **चेन्नई**-12, अभिरामी माल, पुरासावलकम, निकट किलपौक/वेपेरी।



प्र० ति० २०-९-२०१६

### रजि० समाचारपत्र—रजि०नं० २३०८/५७ पंजीकृत संख्या—NP/GR-13/2014-2016

'कल्याण' के पुनर्मुद्रित उपलब्ध विशेषाङ्क										
	970	पाक								
कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹	कोड	पुस्तक-नाम	मू०₹		
41	शक्ति-अङ्क	१५०	789	सं० शिवपुराण	२००	584	संक्षिप्त भविष्यपुराण	१५०		
616	योगाङ्क-परिशिष्टसहित	२००	631	सं० ब्रह्मवैवर्तपुराण	२००	586	शिवोपासनाङ्क	१३०		
604	साधनाङ्क	२५०	572	परलोक-पुनर्जन्माङ्क	२००	653	गोसेवा-अङ्क	१३०		
1773	गो-अङ्क	१७०	517	गर्ग-संहिता	१५०	1131	<b>कूर्मपुराण</b> —सानुवाद	१४०		
44	संक्षिप्त पद्मपुराण	२५०	1135	भगवन्नाम-महिमा और		1980	ज्योतिषतत्त्वाङ्क	१३०		
539	संक्षिप्त मार्कण्डेयपुराण	९०		प्रार्थना-अङ्क	१२०	1947	भक्तमाल-अङ्क	१३०		
1111	संक्षिप्त ब्रह्मपुराण	१२०	1113	<b>नरसिंहपुराणम्</b> -सानुवाद	१००	1189	संक्षिप्त गरुडपुराण	१६०		
43	नारी-अङ्क	२४०	1432		१२५	1985		२००		
659	उपनिषद्-अङ्क	२००	1362	अग्निपुराण	२००	1542	<b>भगवत्प्रेम-अङ्क-</b> अजि०	६५		
279	संक्षिप्त स्कन्दपुराण	३२५		(मूल संस्कृतका हिन्दी-अनुव	त्राद)	1592	आरोग्य-अङ्क			
40	भक्त-चरिताङ्क	२३०	557	<b>मत्स्यमहापुराण</b> (सानुवाद)	२७०		(परिवर्धित संस्करण)	२००		

1133 सं० श्रीमद्देवीभागवत सूर्याङ्क 280 791 089 अब सम्पूर्ण ( छः ) खण्डोंमें उपलब्ध—महाभारत (सटीक) (कोड 728)

सुन्दर प्लास्टिक आवरण (कोड 503)—गीताके मूल श्लोक एवं सूक्तियाँ

तेलुग् (कोड 1714) पुस्तकाकार—विशिष्ट संस्करण, प्रत्येकका मूल्य ₹ ७०

<mark>पॉकेट साइज— सुन्दर प्लास्टिक आवरण (कोड 506)</mark>— गीता-मूल श्लोक,

657

200

१५०

200

200

१६०

1183 संक्षिप्त नारदपुराण

सत्कथा-अङ्क

574 संक्षिप्त योगवासिष्ठ

667 संतवाणी-अङ्क

तीर्थाङ्क

587

636

# (प्रकाशनका मुख्य उद्देश्य-नित्य गीता-पाठ एवं मनन करनेकी प्रेरणा देना।)

पूर्वकी भाँति सभी संस्करणोंमें सुन्दर बाइंडिंग तथा सम्पूर्ण गीताका मूल-पाठ, बहुरंगे उपासनायोग्य चित्र, प्रार्थना, कल्याणकारी लेख, वर्षभरके व्रत-त्योहार, विवाह-मुहुर्त, तिथि, वार, संक्षिप्त पञ्चाङ्ग, रूलदार पृष्ठ आदि। पस्तकाकार — विशिष्ट संस्करण (कोड 1431 )—दैनिक पाठके लिये गीता-मुल, हिन्दी-अनुवाद, मुल्य ₹ ७०

अक्टूबर मासमें उपलब्धि सम्भावित—बँगला (कोड 1489), ओड़िआ (कोड 1644),

व्यापारिक संस्थान दीपावली/नववर्षमें इसे उपहारस्वरूप वितरित कर गीता-प्रसारमें सहयोग दे सकते हैं। गीता-दैनन्दिनी (सन् २०१७) अब उपलब्ध—मँगवानेमें शीघ्रता करें।

मुल्य ₹१९५० अलग-अलग खण्ड भी उपलब्ध। प्रत्येक खण्डका मुल्य ₹३२५ गीता-दैनन्दिनी—गीता-प्रचारका एक साधन

(परिशिष्टसहित)

0019

240

१७५

१००

1842

1875 सेवा-अङ्क

2035 गङ्गा-अङ्क

1610 देवीपुराण महाभागवत

1793 श्रीमद्देवीभागवताङ्क (पूर्वार्द्ध)

१२०

१००

800

१३०

२२०

मूल्य ₹ ५५

मुल्य ₹ ३०

(उत्तरार्ध)

श्रीगणेश-अङ्क

1044 वेद-कथाङ्क ( " )

1361 संक्षिप्त श्रीवाराहपुराण

42 हनुमान-अङ्क

LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT | LICENCE No. WPP/GR-03/2014-2016 |